सितम्बर 2019

₹ 10

भारतीय रेल

हीरक जयंती वर्ष



पातालपानी–कालाकुंड धरोहर रेलवे

रतलाम मंडल विशेषांक

FLUID CONTROLS®

ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY



ENGINEERING COMPREHENSIVE SOLUTIONS FOR **RAIL & METRO BRAKE PIPING**

- Design & Engineering
- High Performance Connectors
- Onsite Installation
- Swaging Services
- Pre-Piped Assemblies

Fluid Controls® has over 40 years of experience in engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. We offer customers total solutions for locomotive, coach & metro brake piping arrangements – from design & engineering services to supply of high performance connectors and installation services.

Visit us at:

IREE 2019

13th INTERNATIONAL RAILWAY EQUIPMENT EXHIBITION

Aerocity | New Delhi | INDIA

HALL 3 | STAND 47

IREE 2019 | 22-24 October

DOUBLE FERRULE FITTINGS • DIN SINGLE FERRULE CONNECTORS • ACROSS FRAME™ CONNECTORS
THREADED ADAPTORS • FLEXIGRIP™ CONNECTORS • QUICK RELEASE CONNECTORS • VALVES • CLAMPS

+91-22-68238000 railways@fluidcontrols.com fluidcontrols.com

MATRIX SECURITY AND TELECOM SOLUTIONS



PEOPLE MOBILITY MANAGEMENT SOLUTIONS FOR RAILWAYS:

Right People in Right Place at Right Time

- Access Control & Time-Attendance
- Aadhaar Enabled Biometric Attendance System
- Contract Workers Management
- Ethernet, PoE, Wi-Fi and 4G/3G Mobile Broadband
- IP65, BIS, CE, FCC, RoHS and IK08 Certified Terminals
- Seamless Third Party Integration

Multiple Credentials

Face Recognition | Palm Vein | Fingerprint | RF Card | Mobile | PIN (****)

Available on:

On-Premise with **COSEC CENTRA**

On Cloud with **COSEC VYOM**

www.MatrixAccessControl.com

TELECOM

Communication Solutions for Modern Enterprises



- Unified Communication Solutions for Modern Enterprises
- IP PBX with In-Built Support for PRI, CO, GSM and VoIP Trunks
- Video Conference with IP Deskphone
- Universal Media Gateways – PRI, CO, GSM, VoIP
- 4G VoLTE-SIM Compatible FCT with Battery Backup (New Launch)

www.MatrixTeleSol.com

IP VIDEO SURVEILLANCE

The 3-Dimensional Video Surveillance Security:
Persistent, Proficient, Proactive



- Video Management System (VMS)
- Intelligent Video Analytics (IVA)
- Network Video Recorders (NVR)
- IP Cameras
- Mobile Applications

www.MatrixVideoSurveillance.com

MATRIX
TELECOM | SECURITY

Designed, Developed and Manufactured in INDIA

Available on GeM Government e Marketplace

MATRIX COMSEC
394-GIDC, Makarpura, Vadodara-390 010, India.
Call: **(+91) 1800-258-7747**
E-mail: **Govt@MatrixComsec.com**

ONVIF | IP65 | IP66 | CE | RoHS COMPLIANT | FC | IK10

www.MatrixComSec.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

सितम्बर-2019

आरंभ : 1960 | वर्ष : 60 | अंक : 2 | मूल्य : ₹10



संपादक मंडल

विनोद कुमार यादव
अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

विजय कुमार
वित्त आयुक्त (रेलवे)

सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव, रेलवे बोर्ड

राजेश दत्त बाजपेई
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

योगेश अवस्थी
संपादक

संपादकीय कार्यालय
सम्पादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
रेलवे टेली - 44519, 9666
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन: 23303665, 23382531
रेलवे टेली. : 43665/9669
bmpr310rb@gmail.com

सदस्यता शुल्क
सर्वसाधारण - ₹ 100,
रेलकर्मियों के लिए - ₹ 90

संपादन सहयोग
रणमत सिंह, दिनेश

आवरण
पातालपानी-कालाकुंड धरोहर रेलवे

फॉलो करें

Twitter : @bhartiyarailrb
@RailMinIndia
Facebook : bhartiyarailpatrika
RailMinIndia
Instagram : bhartiyarailpatrika
railminindia

राष्ट्रपति एवं रेल मंत्री द्वारा रेल के राष्ट्रीय खेल पुरस्कार विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया 6
रेल मंत्री ने सभी महाप्रबंधकों एवं मंडल रेल... 9
रेल मंत्री ने 'रेल सुरक्षा के लिए कमांडो' की... 10
रेल मंत्री की बांग्लादेश के रेल मंत्री के साथ... 12
रेल राज्य मंत्री ने रेलटेल मोबाइल चिकित्सा... 12
वैभववाड़ी-श्री छत्रपति शाहू महाराज टर्मि..... 13
आरपीएफ कर्मी हुए राष्ट्रपति पुलिस पदक... 13



रेल मंत्री ने किया खिलाड़ियों को सम्मानित 6

नई दिल्ली-मुंबई और नई दिल्ली-हावड़ा ट्रैक पर पर दौड़ेंगी 160 किमी गति से ट्रेनें 14
पानी के नीचे दौड़ेगी भारतीय रेल **श्री बिश्वनाथ मुखर्जी** 16
भारतीय रेल एकल उपयोग वाले प्लास्टिक... 20
9 व्यक्तियों की जान बचाने वाले आरपीएफ जवान की रेल मंत्री ने की प्रशंसा 20
पूर्वोत्तर के गौरवमय रेल इतिहास को समेटे कोचबिहार रेल संग्रहालय 21
शांति नर्सिंग होम **श्री रामकिशोर उपाध्याय** 25
चिट्ठी-पत्री 27
श्री हेमकुण्ड साहिब की ट्रैकिंग **डॉ. एस. के. सैनी** 28
रेलों के अंचल से 31
खेल जगत् 36

रतलाम मंडल विशेषांक

रतलाम मंडल विकास के पथ पर अग्रसर **श्री आर. एन. सुनकर** 42
रतलाम मंडल के पर्यटन स्थल **श्री के. के. सिन्हा** 46
रेलपथ अनुरक्षण हेतु मूलभूत सुविधाओं का विकास **श्री योगेश कुमार शर्मा** 49
नवोन्मेष के पहिये पर गतिमान मंडल रेल **श्री विपुल सिंघल** 51
एक नई सोच, नई दिशा **श्री रवि रंजन कुमार** 53
रेल आय एवं यात्री सेवा के लिए प्रतिबद्ध **श्री सुनील मीणा** 54
रतलाम मंडल में ऊर्जा दक्षता संरक्षण एवं ऊर्जा... **श्री ललित सिंह तोमर** 55
कर्षण वितरण संगठन : हमारी यातायात सेवा का भविष्य **श्री चन्द्र शेखर यादव** 57
कर्षण परिचालन विभाग : महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के... **श्री प्रदीप मीणा** 59
कैरिज एवं वैगन अनुरक्षण हेतु मूलभूत सुविधाओं... **श्री कमल सिंह चौधरी** 62
डीजल लोको शेड, रतलाम प्रगति के पथ पर अग्रसर **श्री विनोद कुमार** 64
सुलभ, सुरक्षित, सुखद यात्रा की मार्गदर्शिका... **श्री हेमन्त कुमार महावर** 66
रेल संपत्ति, यात्री सुरक्षा : यही हमारा काम **श्री कुमार निशांत** 68
रतलाम मंडल चिकित्सालय : सेवा परमो धर्म: **डॉ. ए. के. मालवीया** 70
कार्मिक विभाग : नियुक्ति से सेवानिवृत्ति तक साथ **श्री पी. के. गोपीकुमार** 72
संरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता **श्री प्रदीप कुमार व्यास** 73
रतलाम मंडल पर राजभाषा - नित नई उपलब्धियों की... **श्री रामानन्द सिंह** 76
रेलकर्मियों व उनके परिवारजनों की सेवा में तत्पर... **श्रीमती राधा सुनकर** 77

'मिशन रफ्तार' को मिली और रफ्तार...

सही मायनों में 'मिशन रफ्तार' को रफ्तार पिछले कुछ सालों में मिली है। इस मिशन के अंतर्गत यात्री को कम-से-कम समय में सुरक्षित गंतव्य तक पहुँचाने का लक्ष्य भारतीय रेल द्वारा निर्धारित किया गया है, जिसे पूर्ण करने के लिए अत्याधुनिक विश्वस्तरीय तकनीक संग अवसंरचनाओं में तथा ट्रेनों में बदलाव किए जा रहे हैं। हाल ही में सरकार ने नई दिल्ली-मुंबई और नई दिल्ली-हावड़ा रेल मार्ग पर गति 160 किमी प्रति घंटे करने की परियोजना को मंजूरी दी है। सरकार ने इन रेल मार्गों के अपग्रेडेशन के लिए 13,491 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया है।

भारतीय रेल अपने पूरे नेटवर्क में ट्रेनों की औसत गति में सुधार लाने के लिए एक मिशन के रूप में काम कर रही है। नई दिल्ली-हावड़ा, नई दिल्ली-मुंबई सेक्शन पर गति बढ़ने से पैसेंजर गाड़ियों की औसत गति 60 प्रतिशत तक बढ़नी सुनिश्चित होगी और माल यातायात गाड़ी की औसत गति दोगुनी होगी। उपरोक्त दोनों रेल मार्गों पर यात्रा समय में क्रमशः 3.5 घंटे तथा 5 घंटे की कमी आएगी। सबसे बड़ी बात यह कि यह यात्रा सिर्फ रात की ही रह जाएगी।

इन परियोजनाओं के दायरे में बाड़ लगाना, स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली, मोबाइल ट्रेन रेडियो संचार और स्वचालित एवं यंत्रीकृत नैदानिक प्रणालियाँ शामिल हैं। निश्चित रूप में इनसे यात्रियों की सुरक्षा तथा विश्वसनीयता में वृद्धि होगी।

भारतीय रेल ट्रेनों की गति के साथ-साथ हमेशा देश के सभी क्षेत्रों का समान विकास हो, इस बात को ध्यान में रख कर विकास परियोजनाएँ बनाई जाती हैं। आज कई परियोजनाएँ देश के अतिसंवेदनशील क्षेत्रों में चल रही हैं। इन परियोजनाओं का कार्य बिना किसी विक्षेप के चलता रहे, यह भी जरूरी है। ऐसी परियोजनाएँ तथा वहाँ कार्य कर रहे लोगों की सुरक्षा के लिए रेलवे सुरक्षा बल द्वारा 'रेल सुरक्षा के लिए कमांडो' (कोरस) का गठन किया गया है। इन कमांडो को अत्याधुनिक हथियारों तथा विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है।

भारतीय रेल की टीम ने पानी के नीचे ट्रेन दौड़ाने के सपने को साकार कर दिखाया है। जल्द ही कोलकाता में हुगली नदी के नीचे ट्विन टनल में भारतीय रेल की ट्रेनें दौड़ेंगी। रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल इसे उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का उदाहरण तथा देश में निरंतर हो रही रेलवे की प्रगति का प्रतीक बताया है। निश्चित रूप से इसके शुरू होने से कोलकाता निवासियों को सुविधा मिलेगी और देश को गर्व का अनुभव होगा।

भारतीय रेल में कार्यरत खिलाड़ियों ने देश का नाम राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेलों में सदैव रौशन किया है। ऐसे ही छह खिलाड़ियों को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' पर राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 'राजीव गांधी खेल रत्न', 'अर्जुन अवॉर्ड' और 'ध्यानचंद अवॉर्ड' प्रदान किए। इन खिलाड़ियों को रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने भी सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया।

इस अंक में 'हम रतलाम मंडल विशेषांक' का प्रकाशन कर रहे हैं। रतलाम मंडल की टीम यात्री सुविधाओं, सुरक्षा, संरक्षा के साथ-साथ स्थानीय पर्यटन क्षेत्र पर विशेष ध्यान दे रही है। पातालपानी-कालाकुंड धरोहर रेलवे पर्यटन स्थल लोगों में काफी लोकप्रिय हो रहा है। रतलाम मंडल रेल प्रबंधक श्री आर. एन. सुनकर तथा उनकी टीम धन्यवाद की पात्र है।

आप को हमारा यह प्रयास कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ। ■

राष्ट्रपति एवं रेल मंत्री द्वारा रेल के राष्ट्रीय खेल

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में राष्ट्रीय खेल एवं साहसिक पुरस्कार प्रदान किए, जिसमें भारतीय रेल के खिलाड़ियों श्री बजरंग पूनिया को वर्ष 2019 का 'राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार' और श्री एस. भास्करन, सोनिया लाठर, चिंगलेनसाना सिंह कंगुजम, पूनम यादव को 'अर्जुन पुरस्कार' तथा श्री नीटन किर्तने को 'ध्यानचंद पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। एक परिचय...



श्री नीटन किर्तने (ध्यानचंद पुरस्कार)

3 अप्रैल, 1974 को महाराष्ट्र में जन्मे श्री नीटन किर्तने ने 1992 में दुनिया के सबसे पुराने और महत्त्वपूर्ण टूर्नामेंट बिंबल्डन के जूनियर वर्ग में महेश भूपति के साथ उपविजेता रहकर पूरी दुनिया को चौंका दिया था।

लगभग साढ़े तीन दशक लंबे कॅरियर में श्री नीटन किर्तने के पास 9 अंतरराष्ट्रीय तथा 16 राष्ट्रीय खिताब हैं। श्री किर्तने एशियाई खेलों के अलावा दो बार क्रमशः चेन्नै एवं ढाका में आयोजित सैफ खेलों में पदक जीत चुके हैं। उन्होंने डेविस कप में भारत का 6 बार प्रतिनिधित्व किया है। 2 आईटीएफ एकल तथा 13 आईटीएफ युगल का खिताब जीतने के अलावा उन्होंने 100 से अधिक आईटा खिताब भी जीता है।

वरिष्ठ वर्ग में वे आज भी भारत के नंबर एक रैंक प्राप्त खिलाड़ी हैं। हाल ही में वर्ष 2018 में मियामी में आयोजित सीनियर्स विश्व चैंपियनशिप में उन्होंने रजत पदक प्राप्त कर देश का नाम रौशन किया था।

वर्तमान में वे भारतीय रेल की टेनिस टीम के कोच भी हैं और उनके नेतृत्व में बुलगारिया में आयोजित विश्व चैंपियनशिप में भारतीय रेल की टीम ने स्वर्ण पदक जीता था। वे टेनिस को बढ़ावा देने वाली एमएसएलटीए सीनियर्स कमेटी के सदस्य हैं।



रेल के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता खिलाड़ियों के साथ रेल, वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल और केंद्रीय राज्य मंत्री श्री संजीव कुमार बालियान

रेल और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 30 अगस्त को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले रेलकर्मियों को सम्मानित किया। श्री पीयूष गोयल ने खेल क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री एस. भास्करन, सोनिया लाठर, चिंगलेनसाना सिंह कंगुजम, पूनम यादव, नीटन किर्तने प्रत्येक को 5-5 लाख रुपये का चेक और शॉल देकर सम्मानित किया। रूस में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे श्री बजरंग पूनिया को 7.5 लाख रुपये का चेक और एक शॉल बाद में भेंट किया जाएगा।

पुरस्कार विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया

श्री बजरंग पूनिया (राजीव गांधी खेल रत्न)

26 फरवरी, 1994 को हरियाणा में जन्मे श्री बजरंग मानो पैदा ही फ्री स्टाइल कुश्ती के लिए हुए थे। महज 7 वर्ष की आयु से ही वे कुश्ती में आ गए। उनके पिता का उन्हें भरपूर सहयोग मिला।

राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में तमाम स्वर्णिम सफलताओं के बाद वर्ष 2013 में विश्व कुश्ती प्रतियोगिता में कांस्य जीतकर उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रौशन किया। वर्ष 2014 में कॉमनवेल्थ खेलों में और एशियाई खेलों में उन्होंने रजत जीता। वर्ष 2016 एवं 2017 में कॉमनवेल्थ प्रतियोगिता में उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया।

वर्ष 2018 में कॉमनवेल्थ खेलों और फिर एशियाई खेलों में 65 किलो संवर्ग में उन्होंने स्वर्ण तथा विश्व कुश्ती प्रतियोगिता में रजत पदक जीता। इसी वर्ष एशियाई प्रतियोगिता में भी उन्होंने कांस्य हासिल किया। उन्हें वर्ष 2015 में 'अर्जुन अवॉर्ड' से तथा इसी वर्ष 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया जा चुका है। ***रूस में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे श्री बजरंग पूनिया को बाद में सम्मानित किया जाएगा।***



फाइल फोटो

पद्मश्री प्राप्त करते हुए श्री बजरंग पूनिया



सुश्री पूनम यादव (अर्जुन अवॉर्ड)

24 अगस्त 1991 को उत्तर प्रदेश के आगरा में जन्मी सुश्री पूनम यादव भारतीय क्रिकेट टीम की मुख्य सदस्य हैं। वे वर्ष 2017 में विश्व उपविजेता टीम की सदस्य रही हैं। उन्होंने वर्ष 2013 में बांग्लादेश के खिलाफ टी-20 और एक दिवसीय में और फिर वर्ष 2014 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट मैच में अपने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट कॅरियर का पदार्पण किया। एशिया कप टी-20 प्रतियोगिता में 10 विकेट लेकर उन्होंने किसी एक शृंखला में किसी भारतीय द्वारा सर्वाधिक विकेट लेने का रिकार्ड बनाया। टी-20 में सबसे तेज 50 विकेट (38 मैच में) लेने का भी रिकार्ड आपके नाम है। अकेले वर्ष 2018 में उन्होंने टी-20 में 35 विकेट लेकर 'अर्जुन अवॉर्ड' से सम्मानित होने का हक हासिल किया।

श्री गोयल ने खिलाड़ियों को उनके खेल क्षेत्र में सहयोग जारी रखने का आश्वासन देते हुए सलाह दी कि भारतीय रेल को प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए 'फिट रेलवे, फिट इंडिया' अभियान का शुभारंभ करना चाहिए और सभी कर्मचारियों को फिटनेस गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। उन्होंने रेलवे कर्मचारियों और उनके बच्चों के साथ-साथ आम लोगों को लाभान्वित होने के लिए रेलवे परिसर में व्यायामशाला/फिटनेस सेंटर खोले जाने की भी सलाह दी। उल्लेखनीय है कि अब तक भारतीय रेल के खिलाड़ियों को 23 पद्मश्री, 166 अर्जुन, 11 ध्यानचंद, 9 द्रोणाचार्य और 6 राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।



पुरस्कार विजेता खिलाड़ियों के साथ में अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री विनोद कुमार यादव



श्री एस. भास्करन (अर्जुन अवॉर्ड)

15 मई, 1978 को श्री के. सोमसुंदरम के घर जन्मे श्री एस. भास्करन की स्कूली शिक्षा सिर्फ 9वीं तक ही सीमित रही। आरंभ से ही उन्होंने खेल को अपना लिया था। शरीर सौष्ठव यानी बॉडी बिल्डिंग में वर्ष 1999-2000 में वे 'मिस्टर चेन्नै' चुने गये और फिर उसी वर्ष 'मिस्टर तमिलनाडु' में और फिर जूनियर इंडिया में दूसरा स्थान हासिल किया।

इसके बाद उनका सुनहरा सफर कभी नहीं थमा। वर्ष 2000-2001 में ऑल इंडिया रेलवे में उनकी तीसरी पोजीशन रही, लेकिन अगले साल यह दूसरी और फिर वर्ष 2002-03 में पहली हो गई।

वे अखिल भारतीय रेल चैंपियनशिप में अब तक सात स्वर्ण, एक रजत और तीन कांस्य पदक हासिल कर चुके हैं। वर्ष 2003-04 में वे पहली बार 'मिस्टर इंडिया' बने।

वर्ष 2003-04 में वे 'साउथ एशिया' चुने गए। वर्ष 2016-17 में वे मामूली अंतर से विश्व बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप 2016 थाईलैंड में चौथे स्थान पर रहे, लेकिन वर्ष 2018 में वे इसी प्रतियोगिता में विजेता बनकर उभरे। अभी हाल ही में वे 'मिस्टर एशिया' भी चुने गये।

सुश्री सोनिया लाठर (अर्जुन अवॉर्ड)

10 फरवरी, 1992 को जन्मी सुश्री सोनिया लाठर आरंभ में कबड्डी और कुश्ती की शौकीन थीं। 18 वर्ष की उम्र में पहली बार उन्होंने मुक्केबाजी में हाथ आजमाया और सफलता की नई ऊंचाइयों को छुआ। आप वर्ष 2016 में आईबा महिला विश्व मुक्केबाजी में रजत पदक जीतने के अलावा दो बार एशियन एमेच्योर बॉक्सिंग चैंपियनशिप में रजत पदक जीत चुकी हैं।

वर्ष 2012 तथा 2017 में एशियन वीमन एमेच्योर बॉक्सिंग चैंपियनशिप में उन्होंने फाइनल तक का सफर तय किया, जहां वे रजत पदक ही जीत सकीं। वर्ष 2018 में रेलवे स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड की ओर से उन्होंने सीनियर राष्ट्रीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता में खिताबी जीत हासिल की।





श्री चिंगलेनसाना सिंह कंगुजम (अर्जुन अवॉर्ड)

दिसंबर, 1991 में मणिपुर में जन्मे श्री चिंगलेनसाना सिंह कंगुजम हॉकी के सर्वोत्कृष्ट खिलाड़ियों में से एक हैं। श्री कंगुजम एशिया कप वर्ष 2017 जीतने वाली, 2018 के एशियाई खेलों में कांस्य जीतने वाली, अजलान शाह 2016 में रजत तथा 2015 एवं 2017 में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य रहे हैं।

उनकी इतनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें इस वर्ष 'अर्जुन अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है। मणिपुर जैसे प्रदेश से सीमित संसाधनों के बावजूद उभरकर राष्ट्रीय पटल पर आए श्री कंगुजम 200 अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं। परिवार से उन्हें हमेशा सहयोग मिला। उनका मानना है कि रेलवे में नौकरी मिलना उनके लिये काफी महत्त्वपूर्ण रहा।

वे फिटनेस को गुरुमंत्र मानते हैं और मणिपुर में हॉकी के लिए मूलभूत ढांचे को बढ़ावा देना चाहते हैं।

रेल मंत्री ने सभी महाप्रबंधकों एवं मंडल रेल प्रबंधकों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की



रेल भवन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सभी रेल महाप्रबंधकों एवं प्रबंधकों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक को सम्बोधित करते हुए रेल, वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल। साथ में हैं – अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड, श्री विनोद कुमार यादव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

रेल, वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार यादव और रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों ने 22 अगस्त को रेल भवन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए क्षेत्रीय रेलवे एवं उत्पादन इकाइयों के सभी महाप्रबंधकों और मंडल प्रबंधकों के साथ एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में श्री पीयूष गोयल ने विभिन्न प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों (केपीआई) पर अच्छा काम करने वाले मंडल रेल प्रबंधकों को बधाई दी। श्री गोयल ने महाप्रबंधकों एवं प्रबंधकों से कहा कि अधिक माल लदान और गैर किराया राजस्व के माध्यम से रेलवे की आय बढ़ाई जाए। श्री गोयल ने कहा कि ट्रेनों के समय पर चलने के काम को बेहतर बनाया जाए। बैठक में मुख्य रूप से रेल में सुरक्षा कार्य, समय की पाबंदी, क्षमता वृद्धि और अन्य विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के बारे में चर्चा की गई।

वर्तमान वर्ष के दौरान क्षेत्रीय रेलवे के अब तक के कामकाज की समीक्षा करते हुए अध्यक्ष रेलवे बोर्ड ने महाप्रबंधकों को ट्रेनों के परिचालन में सुरक्षा संबंधी परियोजनाओं की करीबी निगरानी करने का निर्देश दिया। श्री यादव ने मानवयुक्त लेवल क्रॉसिंग को खत्म करने और प्रत्येक अंचल में सड़क ओवर ब्रिज/सड़क अंडर ब्रिज के तेजी से निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वे माल लदान को बढ़ाने के लिए पहल करें। श्री यादव ने निर्देश दिया कि वे वर्तमान बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को समय पर पूरा करें और इन परियोजनाओं के लिए निर्धारित समय सीमा के लक्ष्यों को पूरा करें। उन्होंने परियोजनाओं के कार्यान्वयन से पहले उनकी अग्रिम योजना बनाने पर जोर दिया ताकि परियोजनाएँ समय पर पूरी की जा सकें। नई लाइन शुरू करने, गेज परिवर्तन, दोहरीकरण, विद्युतीकरण परियोजनाओं में तेजी लाई जानी चाहिए।

श्री यादव कहा कि सभी को महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के समारोहों के लिए तैयारी पूरी कर लेनी चाहिए। इस दिशा में की जा रही विभिन्न पहलों में प्लास्टिक के एकल उपयोग को समाप्त करना, पटरियों के दोनों तरफ नर्सरी बनाना, स्टेशनों और ट्रेनों में सफाई तथा वृक्षारोपण शामिल है। श्री यादव ने दोहराया कि सुरक्षा, समय की पाबंदी, बुनियादी ढांचा निर्माण, स्टेशनों और ट्रेनों की स्वच्छता तथा यात्रियों के आराम पर ध्यान केंद्रित करना भारतीय रेलवे की प्राथमिकता वाले क्षेत्र बने रहेंगे। ■



Piyush Goyal ✓

@PiyushGoyal

PM@NarendraModi जी ने नागरिकों से देश के 15 पर्यटन स्थल देखने की अपील की है।

मध्य प्रदेश में रतलाम के पातालपानी-कालाकुंड की ट्रेन यात्रा आपको ऐसे ही एक सफर पर ले जायेगी, जहां आप चारों ओर फैली प्राकृतिक सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। आपके जीवन की यह एक यादगार यात्रा बनेगी।

-श्री पीयूष गोयल

रेल और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री



कोरस

रेल मंत्री ने 'रेल सुरक्षा के लिए कमांडो' की शुरुआत की

रेल, वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 14 अगस्त को नई दिल्ली के स्टेट एंट्री रोड में भारतीय रेल के लिए 'कोरस' (रेल सुरक्षा के लिए कमांडो) की शुरुआत की, तथा रेल सुरक्षा बल के लिए नया स्थापना मैनुअल भी जारी किया। इस अवसर पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष, श्री विनोद कुमार यादव, रेल सुरक्षा बल के महानिदेशक, श्री अरुण कुमार और उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री टी.पी. सिंह सहित अन्य वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री गोयल ने कहा कि आज हम भारत को एक स्वच्छ, स्वस्थ, सम्पन्न और सुरक्षित राष्ट्र के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विध्वंसक शक्तियों से मिलने वाली चुनौतियों के मद्देनजर रेल सुरक्षा बल में 'कोरस' को सम्मिलित करने की योजना बनाई गई है। 'कोरस' बल को बेहतर और अत्याधुनिक उपकरण और विश्वस्तरीय प्रशिक्षण दिया जायेगा।

श्री गोयल ने कहा कि रेलयात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए प्रत्येक स्टेशन पर सीसीटीवी कैमरों का एक नया नेटवर्क स्थापित किया जायेगा। इन कैमरों का लिंक स्थानीय स्टेशनों, राजकीय रेल पुलिस, रेल सुरक्षा बल, मंडल कार्यालय और मंत्री कार्यालय तक को दिया जाएगा। उन्होंने दूर-दराज के क्षेत्रों में दिन-रात रेल सम्पत्ति और यात्रियों की सुरक्षा में मुस्तैद रहने वाले प्रत्येक जवान और रेल सुरक्षा अधिकारियों को बधाई दी। उन्होंने रेलयात्रियों की सुरक्षा हेतु चिंता जताने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद दिया। इस दिशा में 'कोरस' का गठन एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

इस अवसर पर बोलते हुए रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष, श्री यादव ने कहा कि 'कोरस' का गठन विस्तृत नीति-निर्माण की परिणति है। रेल सुरक्षा की चुनौतियों को निपटने के लिए इस पृथक कमांडोयूनिट 'कोरस' का गठन किया गया है। इस यूनिट को





नई दिल्ली में एक समारोह में 'कोरस' के शुभारंभ पर आरपीएफ प्रतिष्ठान नियमावली जारी करते हुए रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल। साथ में हैं, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार यादव, रेलवे सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री अरुण कुमार एवं उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक श्री टी.पी. सिंह

विश्वस्तरीय प्रशिक्षण और बेहतर सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। यह विशेष यूनिट किसी भी चुनौतीपूर्ण स्थिति से निपटने में सक्षम है।

इस अवसर पर रेल सुरक्षा बल के महानिदेशक ने कहा कि देश के रेल सुरक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशिक्षित श्रम बल वाली एक विशेष टास्क फोर्स की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। वर्तमान में रेलवे ऐसी अनेक परियोजनाओं पर काम कर रही है, जो सामरिक और आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। यह विशेष यूनिट 'कोरस' इन परियोजनाओं में आने वाली चुनौतियों के साथ-साथ रेलयात्रियों के समक्ष आने वाली कठिन परिस्थितियों से भी निपटने में सहयोगी होगी। 'कोरस' के कमांडो प्रख्यात संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त हैं और किसी भी चुनौतीपूर्ण स्थिति से निपटने में सक्षम हैं। यह नई यूनिट रेल सुरक्षा को और अधिक मजबूत करेगी। ■





रेल मंत्री की बांग्लादेश के रेल मंत्री के साथ बैठक





6 अगस्त को नई दिल्ली में रेल, वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने बांग्लादेश के रेल मंत्री मोहम्मद नुरुल इस्लाम सुजान के साथ बैठक की। इस अवसर पर रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष श्री विनोद कुमार यादव एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे

रेल राज्य मंत्री ने रेलटेल मोबाइल चिकित्सा वैन को झंडी दिखाई

रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी ने रेलटेल द्वारा अपनी सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई मोबाइल मेडिकेयर यूनिट / वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन मोबाइल मेडिकेयर यूनिट का सेवा भारती द्वारा संचालन किया जाएगा। यह एक पंजीकृत गैर सरकारी संगठन है, जो दिल्ली के विभिन्न स्लम क्षेत्रों के गरीब और जरूरतमंद लोगों को उनके दरवाजे पर चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराएगी। इन मोबाइल डिस्पेसरी में एक डॉक्टर और सहायक कर्मचारी होंगे।



रेल भवन में रेलटेल द्वारा कॉर्पोरेट सोशल दायित्व गतिविधि के अंतर्गत प्रदान की गई मोबाइल स्वास्थ्य इकाई और वैन को हरी झंडी दिखाते हुए रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी

इस अवसर पर रेल राज्य मंत्री श्री सुरेश अँगडी, ने कहा, जरूरतमंद लोगों को चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में रेलटेल और सेवा भारती का यह एक उत्कृष्ट प्रयास है। दिल्ली में कई अविकसित क्षेत्र हैं, जो इस तरह की पहल से लाभान्वित होंगे।

श्री पुनीत चावला, सीएमडी/रेलटेल ने कहा, रेलटेल अपनी सीएसआर गतिविधियों के माध्यम से जरूरतमंद लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने पर केंद्रित है। पिछले कुछ वर्षों में रेलटेल ने जरूरतमंदों के उत्थान के लिए कई परियोजनाएँ शुरू की हैं। वर्तमान में रेलटेल हजारों लोगों को डिजिटल शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए देश भर में 7 डिजिटल लर्निंग सेंटरों को सहायता उपलब्ध करा रही है। ये केंद्र मेवात (हरियाणा), सतना (मध्य प्रदेश), वाराणसी (उत्तर प्रदेश)-2 केन्द्र, बोकारो (झारखंड)-2 केन्द्र, लालबाग (दिल्ली) में स्थित हैं। रेलटेल नई दिल्ली के जहांगीरपुरी में महिलाओं के लिए एक कौशल विकास केंद्र को भी प्रायोजित कर रही है।

यह केंद्र महिलाओं को विभिन्न कौशल, जैसे सिलाई, डिजिटल प्रशिक्षण आदि का प्रशिक्षण दे रहा है, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने और अपने परिवारों के लिए आजीविका कमाने में मदद मिल रही है। रेलटेल ने एक गैर सरकारी संगठन के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों में माहवारी स्वच्छता प्रबंधन (एमएचएम) कार्यक्रम शुरू किया है। रेलटेल 'आकांशा सुपर 30 केंद्र' में 30 वंचितों लेकिन प्रतिभाशाली छात्रों को आईआईटी, एनआईटी और राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेजों जैसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश हेतु 11 महीने की नि:शुल्क आवासीय कोचिंग और परामर्श उपलब्ध कराती है। पिछले 3 वर्षों के उत्कृष्ट परिणाम को पार करते हुए, 30 में से 30 छात्रों ने आईआईटी जेईई मुख्य परीक्षा और 11 ने इस वर्ष जेईई एडवांस्ड 2019 में योग्यता प्राप्त की है। उक्त परियोजनाओं के अलावा रेलटेल जनता आदर्श अंध विद्यालय, दिल्ली, शुभदा, अजमेर, सबका घर, राजस्थान, जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सेवित करती हैं, को भी सहायता उपलब्ध कराती है। ■

वैभववाड़ी-श्री छत्रपति शाहू महाराज टर्मि. नई लाइन को मंजूरी

सरकार ने 3,439 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली वैभववाड़ी-श्री छत्रपति शाहू महाराज टर्मिनस (कोल्हापुर) के बीच नई लाइन (108 किमी लंबी) का निर्माण करने संबंधी रेल मंत्रालय की योजना को मंजूरी दे दी है। यह परियोजना वर्ष 2023-24 तक पूरी हो जाएगी। इसका कार्यान्वयन मध्य रेल के निर्माण संगठन द्वारा किया जाएगा।

वैभववाड़ी से कोल्हापुर तक प्रस्तावित लाइन महाराष्ट्र के कोल्हापुर, रत्नगिरि और सिंधुदुर्ग जिलों से होकर गुजरेगी। प्रस्तावित लाइन मध्य रेल के मौजूदा पुणे-कोल्हापुर खंड पर अवस्थित कोल्हापुर रेलवे स्टेशन को कोंकण रेलवे के मौजूदा रोहा-मडगांव खंड पर अवस्थित वैभववाड़ी रेलवे स्टेशन से जोड़ेगी। इस लाइन से महाराष्ट्र और कर्नाटक के कई विद्युत संयंत्रों हेतु तापीय या थर्मल कोयले की ढुलाई के लिए दूरी घट जाएगी।

इस लाइन से बेलगाम, बेल्लारी, बीजापुर, गुलबर्ग, लातूर और सोलापुर जिलों के प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होने की आशा है। इसके साथ ही इस लाइन की बदौलत पश्चिमी बंदरगाहों के लिए एक छोटा निकासी मार्ग सृजित होगा, क्योंकि मध्य और कोंकण क्षेत्रों के बीच रेल कनेक्टिविटी का अभाव है। इसके चलते उत्तरी कर्नाटक और दक्षिणी महाराष्ट्र क्षेत्र में विद्युत संयंत्रों के लिए आपूर्ति मार्ग या रूट लंबे हो गए हैं, जिससे विभिन्न बंदरगाहों, जैसे कि मुम्बई, जेएनपीटी, कृष्णपत्तनम और न्यू मंगलोर से आने वाली आपूर्ति प्रभावित होती है। इसका मुख्य कारण रत्नागिरि-पनवेल-पुणे रेल रूट का अपेक्षाकृत ज्यादा लंबा होना है।

पश्चिमी महाराष्ट्र के एक हिस्से के रूप में कोल्हापुर क्लस्टर एक जीवंत औद्योगिक बेल्ट है, जिसमें विनिर्माण आधारित उद्योग, ऑटो कलपुर्जे एवं सहायक पार्ट्स, चीनी का



विनिर्माण, वस्त्र, खाद्य तेल प्रसंस्करण फैक्टरियां इत्यादि शामिल हैं। यही नहीं, पश्चिमी तट पर अवस्थित जयगढ़ और विजयदुर्ग में विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचागत सुविधाओं के प्रस्तावित निर्माण से संबंधित जिले काफी लाभान्वित होंगे। इतना ही नहीं, वर्तमान वैभववाड़ी-रोहा-पुणे रूट और मिराज-पुणे-पनवेल-पेन रूट पर चलने वाली मालगाड़ियों के लिए भी दूरी के साथ-साथ इसमें लगने वाले समय में उल्लेखनीय कमी संभव होगी, बशर्ते कि इन्हें वैभववाड़ी-कोल्हापुर परियोजना लाइन के रास्ते चलाया जाए। इस परियोजना के तहत निर्माण के दौरान लगभग 26 लाख कार्य दिवसों या श्रम दिवसों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे। ■

आरपीएफ कर्मी हुए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस 2019 के अवसर पर, राष्ट्रपति ने रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ)/रेलवे सुरक्षा विशेष बल (आरपीएसएफ) के निम्नलिखित अधिकारियों और कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक और सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया है।

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

- श्री टी.एस. गोपकुमार, सहायक सुरक्षा आयुक्त, दक्षिण रेलवे

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

- श्री ज्योति कुमार सतीजा, डीआईजी/ जेजेआर आरपीएफ अकादमी, लखनऊ,
- श्री संजय कुमार गुप्ता, सहायक सुरक्षा आयुक्त, उत्तर पश्चिम रेलवे
- श्री अनिल कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट, 2 बटालियन/ आरपीएसएफ
- श्री एन. अश्विनी कुमार, सतर्कता अधिकारी (निरीक्षक), आईआरसीटीसी
- श्री इंदु प्रकाश सिंह, सहायक सुरक्षा आयुक्त, आरडीएसओ
- श्री देवीसिंह मीणा, सहायक उपनिरीक्षक, उत्तर पश्चिम रेलवे
- श्री बसप्पा लमानी, निरीक्षक, 11 बटालियन, आरपीएसएफ
- श्री विकास बजाज, उप-निरीक्षक, 6 बटालियन, आरपीएसएफ
- श्री चन्द्र प्रकाश दुबे, सहायक उप निरीक्षक, उत्तर रेलवे
- श्री रामबाबू शर्मा, उप निरीक्षक, केआरसीएल
- श्री परबत के.एम., उप निरीक्षक, केआरसीएल
- श्री नारायण प्रसाद पांडे, उपनिरीक्षक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- श्री अजय बंद्योपाध्याय, उप निरीक्षक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- श्री बिस्वदीप बोस, उप निरीक्षक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
- श्री रामकुमार यादव, उप निरीक्षक, मध्य रेल। ■

मिशन रफ्तार

नई दिल्ली-मुंबई और नई दिल्ली

सरकार ने 2022-23 तक 6,806 करोड़ रुपये की कुल लागत से दिल्ली-मुम्बई मार्ग (वडोदरा-अहमदाबाद सहित) की गति बढ़ाकर 160 किमी प्रति घंटा करने के लिए अपनी स्वीकृति दे दी है। इससे बेहतर गति, सेवा, सुरक्षा और क्षमता निर्माण सुनिश्चित होगा। 'मिशन रफ्तार' के एक हिस्से के रूप में भारतीय रेल अपने पूरे नेटवर्क में ट्रेनों की औसत गति में सुधार लाने के लिए एक मिशन के रूप में काम कर रही है। दिल्ली-मुंबई सेक्शन पर गति 160 किमी प्रति घंटा तक बढ़ाने से पैसेंजर ट्रेनों की औसत गति में 60% तक बढ़ोत्तरी होगी और माल यातायात की औसत गति भी दोगुनी होगी।

दिल्ली-मुंबई मार्ग 1,483 किमी लंबा है जो 7 राज्यों - दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरता है। इससे नई दिल्ली-मुंबई के बीच लगने वाले यात्रा समय में 3.5 घंटे की कमी आएगी। इससे यह पूरी तरह से रात भर की यात्रा बन जाएगी। दिल्ली-मुंबई मार्ग की अधिकतम गति बढ़ाने से अर्द्ध-उच्च गति वाली ट्रेनों की गति में भी बढ़ोत्तरी होगी। इससे ऐसी ट्रेनें भी अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करके 160 किमी प्रति घंटे की गति से यात्रा कर सकेंगी। यात्रियों को अच्छी गति और सेवा सुनिश्चित होगी। इसके अलावा यह पाया गया है कि सुरक्षित एलएचबी कोच को भी इस गति के लिए उपयुक्त बनाया जा सकता है।

परियोजना के दायरे में बाड़ लगाना, स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (ईटीसीएस 2/टीपीडब्ल्यूएस), मोबाइल ट्रेन रेडियो संचार और स्वचालित एवं यंत्रीकृत नैदानिक प्रणालियाँ शामिल हैं। इनसे सुरक्षा और विश्वसनीयता में काफी बढ़ोत्तरी होगी। इन मुख्य बातों के अलावा इस नीति के तहत सभी प्रकार के क्रॉसिंग्स को हटाने की भी आवश्यकता होगी, जिन्हें अलग योजना शीर्ष के तहत समाप्त किया जा रहा है।

पूरी परियोजना को एकल एजेंसी निष्पादन के साथ मार्ग वार एकल समग्र कार्य के नए दृष्टिकोण के आधार पर संरचित किया गया है। इसे अतिरिक्त बजटीय संसाधनों-संस्थागत वित्त (ईआरबी-आईएफ) के माध्यम से वित्तपोषित किया जाएगा। बेहतर वित्त पोषण, बेहतर तालमेल, पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं और अति आधुनिक प्रौद्योगिकी को शामिल करने से यह परियोजना अनुमोदन की तारीख से 4 साल में पूरी हो जाएगी। इसके अलावा, लाइन के साथ काम की योजना इस प्रकार बनाई जाएगी कि यातायात में कम-से-कम अवरोध हो और निर्माण चरण के दौरान यात्रियों और कारोबार पर कम-से-कम प्रभाव सुनिश्चित किया जा सके।

इस परियोजना के निर्माण चरण के दौरान रोजगार को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। इससे प्रत्यक्ष रूप से 3.6 करोड़ से अधिक कार्य दिवसों का सृजन होगा। इससे आर्थिक गुणक शुरू करने में मदद मिलेगी और सभी राज्यों में विकास को बढ़ावा मिलेगा। इस परियोजना से मार्ग की प्रवाह क्षमता में 30-35 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होगी, जिससे भविष्य में पीपीपी मॉडल का मार्ग प्रशस्त होगा।

'मिशन रफ्तार' के एक हिस्से के रूप में सरकार ने दिल्ली-हावड़ा मार्ग के लिए भी इसी तरह की मंजूरी दी है, जो दिल्ली-मुंबई मार्ग के साथ मिलकर यात्री यातायात में 29 प्रतिशत और मालभाड़ा यातायात में 30 प्रतिशत का योगदान करता है। भारतीय रेलवे अपने समस्त गोल्डन चतुर्भुजीय और विकर्णों को कवर करने के लिए भी काम कर रही है। यह पूरे भारतीय रेल नेटवर्क का 16 प्रतिशत है लेकिन कुल यात्री यातायात का 52 प्रतिशत और कुल माल भाड़ा यातायात का 58 प्रतिशत हिस्सा कवर करता है। ■



– हावड़ा ट्रैक पर दौड़ेंगी 160 किमी गति से ट्रेनें

सरकार ने वर्ष 2022-23 तक दिल्ली-हावड़ा मार्ग (कानपुर, लखनऊ सहित) पर ट्रेनों की गति बढ़ाने की मंजूरी दे दी है। इस कार्य पर 6,685 करोड़ रुपये की लागत आएगी। इससे सुधरी हुई गति, सेवा, सुरक्षा और क्षमता सृजन सुनिश्चित होगा। 'मिशन रफ्तार' के हिस्से के रूप में भारतीय रेल अपने पूरे नेटवर्क में रेलगाड़ियों की औसत गति सुधारने के लिए 'मिशन मोड' में काम कर रही है। दिल्ली-हावड़ा सेक्शन पर गति बढ़ाकर 160 किमी प्रति घंटे करने से पैसेंजर गाड़ियों की औसत गति 60% तक बढ़नी सुनिश्चित होगी और माल यातायात गाड़ी की औसत गति दोगुनी होगी।

1,525 किमी लंबा दिल्ली-हावड़ा मार्ग पांच राज्यों – दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल से गुजरता है। नई दिल्ली और हावड़ा के बीच यात्रा समय में पांच घंटे की कमी आएगी और यह यात्रा सीर्फ रात की रह जाएगी। दिल्ली-हावड़ा मार्ग की अधिकतम गति बढ़ाने से वंदे भारत एक्सप्रेस जैसी सेमी-हाई स्पीड की गाड़ियों को गति मिलेगी।

इससे ऐसी ट्रेनों को अपनी क्षमता का पूरा लाभ उठाने और 160 किमी प्रति घंटे की गति से चलने की अनुमति होगी और यह सुनिश्चित होगा की गति और सेवा की दृष्टि से यात्रियों को लाभ मिले। इसके अतिरिक्त यह पाया गया है कि इस गति के लिए सुरक्षित एलएचबी कोच बनाए जा सकेंगे। परियोजना कार्यों में घेराबंदी, स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (ईटीसीएस-2 / पीपीडब्ल्यूएस), मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन तथा स्वचालित और मशीनी निदानकारी प्रणाली शामिल है, जिससे सुरक्षा और विश्वसनीयता में वृद्धि होगी। इसमें सभी लेवल क्रॉसिंग्स को हटाना पड़ेगा।

यह काम अलग योजना मद में किया जा रहा है। संपूर्ण परियोजना नए दृष्टिकोण की बनी है, जिसमें मार्ग के अनुसार संयुक्त कार्य होंगे और इसे एकल एजेंसी पूरा करेगी। इसका वित्त पोषण अतिरिक्त बजटीय संसाधनों – संस्थागत वित्त (ईआरबी-आईएफ) से किया जाएगा। बेहतर वित्त पोषण, बेहतर समन्वय, अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के उपयोग से यह परियोजना मंजूरी की तिथि से चार वर्षों में पूरी होगी। लाइन पर कार्य इस तरह किया जाएगा कि यातायात में कम-से-कम बाधा आए और निर्माण कार्य के दौरान यात्रियों तथा व्यवसाय पर कम-से-कम असर हो।

'मिशन रफ्तार' के हिस्से के रूप में सरकार ने दिल्ली-मुंबई मार्ग के लिए भी इसी तरह की मंजूरी दी है। दिल्ली-मुंबई मार्ग और दिल्ली-हावड़ा मार्ग पर यात्री यातायात 29% और माल यातायात 30% है। भारतीय रेल के संपूर्ण चतुर्भुज और कोणीय परियोजना पूरी करने का काम हो रहा है। इसमें भारतीय रेल नेटवर्क का 16% हिस्सा है, लेकिन परियोजना में कुल यात्री यातायात का 52% और माल यातायात का 58% है। ■





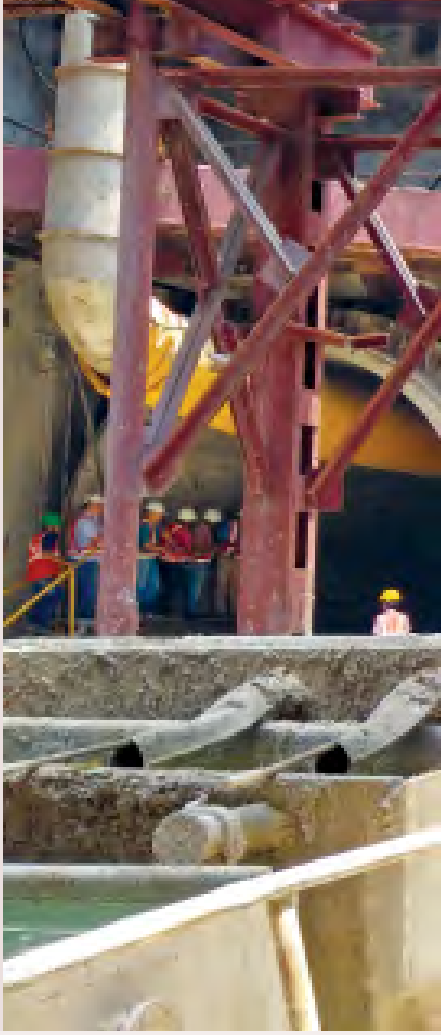
Piyush Goyal ✓
@PiyushGoyal

देश के व्यस्ततम मार्गों में से एक दिल्ली-हावड़ा के बीच ट्रेनों की गति को बढ़ाया जायेगा। इस मार्ग पर ट्रेन 160 किमी/घंटा की गति से चलेगी, व दिल्ली से कोलकाता का सफर मात्र 12 घंटे में तय होगा।

यह रेललाइन दिल्ली, प. बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड के लिये वरदान साबित होगी।

-श्री पीयूष गोयल
रेल और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री

पानी के नीचे दौड़ेगी भारतीय रेल



ट्विन टनल की मुख्य विशेषताएं

- **सुरंग की गहराई – 13 मीटर नदी की गहराई के अलावा नदी तल से 13 मीटर नीचे**



Piyush Goyal
@PiyushGoyal

भारत की पहली अंडर वॉटर ट्रेन शीघ्र ही कोलकाता में हुगली नदी के नीचे चलना आरंभ होगी। उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का उदाहरण यह ट्रेन देश में निरंतर हो रही रेलवे की प्रगति का प्रतीक है।

इसके बनने से कोलकाता निवासियों को सुविधा, और देश को गर्व का अनुभव होगा।

–श्री पीयूष गोयल,
रेल और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री

इतिहासकार मानते हैं कि नदी के नीचे सुरंग लगभग 2180 ईसा पूर्व अर्थात आज से लगभग 4 हजार 2 सौ वर्ष पूर्व फरात (इयूफ्रेट्स) नदी के नीचे दुनिया की सबसे पहली बेबीलोन की सभ्यता के तहत बनाई गई थी, लेकिन सुरंग निर्माण की तकनीक में मुख्य परिवर्तन पिछली दो शताब्दियों में ही आया है। नए जमाने में पानी के नीचे सबसे पहले सुरंग टेम्स नदी के नीचे सन् 1843 में बनी। पानी के नीचे सुरंग को हमेशा से इंजीनियरिंग जगत में चुनौतीपूर्ण माना जाता है। भारत में परिवहन के लिए जल के नीचे पहली सुरंग गंगा नदी के नीचे कोलकाता में बनाई गई है, जिसके लिए लगातार उच्च कोटि की सतर्कता और उत्साह की आवश्यकता थी।

कोलकाता में गंगा नदी के नीचे मेट्रो ट्विन टनल

सन् 1972 में शुरू हुई कोलकाता मेट्रो भारत की पहली और एशिया की पांचवीं मेट्रो प्रणाली थी। वर्तमान में उत्तर-दक्षिण दिशा में यह 27.23 किमी तथा पूर्व-पश्चिम दिशा में 16.6 किमी लंबाई में चलती है, जिसमें से 5.74 किमी एलीवेटेड तथा 16.6 किमी सुरंग में है। नदी के नीचे निर्मित 520 मीटर लंबी यह सुरंग दो मेगा टर्मिनल स्टेशन, हावड़ा एवं सियालदह रेलवे स्टेशन को जोड़ेगी। कोलकाता में नदी पार करना हमेशा से एक बड़ा मुद्दा रहा है। नदी के दोनों ओर शहरीकरण की वजह से आबादी तेजी से बढ़ी है। एक अनुमान के

- नदी पार करने की चौड़ाई – 520 मीटर
- सुरंगों के बीच स्थान – 16.1 मीटर केन्द्र से केन्द्र तक
- सुरंग का आंतरिक ब्यास – 5.55 मीटर
- सुरंग का अधिकतम ढाल – 3 प्रतिशत



हुगली नदी के नीचे टनल एलाइन्मेण्ट



सुरंग खोदने वाली मशीन

अनुसार, रोजाना 3.12 लाख वाहन पुल पार करते हैं, जिसके लिए 4 सड़क पुल, एक रेल सह सड़क पुल और एक रेल पुल है, जो पर्याप्त नहीं है।

सुरंग की ज्यामिति फाइनल करने के लिए कई देशी-विदेशी विशेषज्ञों का सहयोग लिया गया। उचित एलाइनमेंट के बाद सुरंग की बेहतरीन बोरिंग करने वाली मशीन का चयन किया गया और काम शुरू हुआ। चूंकि गंगा नदी एक बड़ी नदी है, जिसका बहाव 2.5 मीटर प्रति सेकेंड तक होता है, इसलिए उसकी वर्टिकल प्रोफाइल फाइनल करने से पूर्व उसका हाईड्रोलॉजिकल पैरामीटर्स का अध्ययन करना जरूरी था।

सभी हाईड्रोलॉजिकल सूचनाएं कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट से प्राप्त की गईं। चूंकि सन् 1988 से 2003 के बीच सुरंग के स्थान पर हायस्ट स्कूरिंग 4.5 मीटर थी जबकि हायस्ट सिल्टिंग 6.5 मीटर थी, इसलिए वर्टिकल अलाइनमेंट 11.355 मीटर फाइनल किया गया। हॉरिजाण्टल (क्षैतिज) अलाइनमेंट तय करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा गया :-

अलाइनमेंट किसी घाट अथवा तट रेखा का उल्लंघन न करे ताकि किसी प्रकार का अंडरग्राउंड अवरोध न आए।

नदी के पश्चिमी किनारे पर हावड़ा मेट्रो स्टेशन के तुलनात्मक रूप से ज्यादा खाली प्लेटफॉर्म 15 और 16 के बीच के क्षेत्र का चयन किया गया, जो कि हावड़ा टर्मिनल के भीतर ही स्थित है।

आपातकालीन निकास सह वायु संचार की आवश्यकता को देखते हुए नदी के पूर्वी किनारे पर कोलकाता बंदरगाह पर पर्याप्त स्थान उपलब्ध था।

प्रस्तावित सुरंग रबिन्द्र सेतु (हावड़ा ब्रिज) से लगभग 320 मीटर दूर है, जिसकी वजह से सुरंग का कार्य सीधे-सीधे रबिन्द्र सेतु को प्रभावित नहीं कर रहा था।

कोई हॉरिजाण्टल कर्व नहीं दिया गया ताकि नदी के बीच स्थान बदलने (maneuvering) में आसानी हो।

जियोटेक्नीकल जांच कराई गई ताकि नदी के नीचे सुरंग बनाने में कीचड़ युक्त गाढ़ी मिट्टी तथा कभी-कभार सिल्टी सैंड लेंस की समस्या से निपटा जा सके। इस प्रकार की टनल जियोलॉजी पर विचार करते हुए अर्थ प्रेशर बैलेंसिंग टनल बोरिंग मशीन का चयन इस प्रकार किया गया ताकि वह नदी के नीचे जबरदस्त दबाव को सह सके।

ढांचा डिजाइन करते समय भूकंप की अधिकतम संभावना तथा पटरी से उतरने की स्थिति को भी ध्यान में रखा गया है।

सुरंग में 275 मिमी मोटी कंक्रीट की अत्यधिक मजबूत लाइनर्स का प्रयोग किया गया है, जिसे टनल बोरिंग मशीन द्वारा सीधा खड़ा किया गया है। एक सर्कुलर रिंग 6 सेग्मेंट से मिलकर बनी है जो चित्र में देखी जा सकती है। (अगले पेज पर)

सुरंग को वॉटर प्रूफ करना

सुरंग का ढांचा इस प्रकार बनाया गया गया है ताकि वह हाईड्रोस्टैटिक दबाव को सहन कर सके। सुरंग को वॉटर प्रूफ करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए गए:

टनल लाइनर्स की कंक्रीट को फ्लाई ऐश, केमिकल ऐडमिक्सचर एवं माइक्रो सिलिका मिलाकर बनाया गया ताकि वह पानी के प्रवेश की संभावना को न्यूनतम कर सके।

सभी सेग्मेंटल ज्वाइंट्स के साथ नियोप्रेन एवं एक हाइड्रॉफिलिक गैस्केट की व्यवस्था की गई ताकि लीकेज न हो। हाईड्रॉलिक गैस्केट मैटीरियल जल के संपर्क में आते ही पांच गुना बढ़ जाता है, जिससे जलरोधी सील तैयार करता है।

सेगमेंटल लाइनर को खड़ा करते समय उसके बाहरी भाग में उच्च दबाव से सोडियम सिलिकेट युक्त मसाला भरा गया ताकि वह जल्द-से-जल्द सेट हो जाए। प्रत्येक सेग्मेंट पर ग्राउट पोर्ट के माध्यम से ग्राउटिंग की गई ताकि लीकेज पर अतिरिक्त रोक लगाई जा सके।

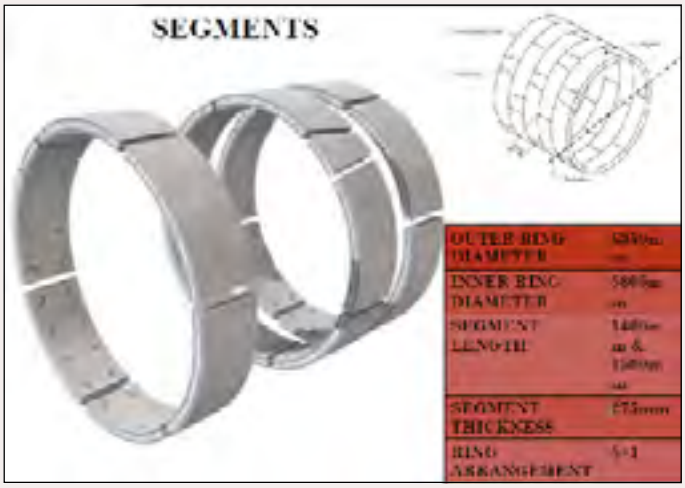
इन सबके बावजूद लीकेज से निपटने के लिए नाबदान एवं पानी निकालने के लिए पंप की व्यवस्था भी की गई है।

सुरंग में परिचालन के दौरान यात्री सुरक्षा

सामान्यतया परिचालन के दौरान गाड़ी कुछ ही मिनट में नदी के नीचे सुरंग से पार कर जाएगी। यात्री अंदर वातानुकूलित कोच में सुरक्षित रहेंगे, लेकिन खराब स्थिति से निपटने के लिए कुछ उपाय किए गए हैं। आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए अपनाए गए कुछ मुख्य उपाय निम्नवत हैं:



नदी सेक्शन हेतु प्री-कास्ट सेक्शन



टनल सेग्मेंटल को क्रमवार करना

दोनों सुरंगों के साथ पैदल चलने का एक रास्ता बनाया गया है, ताकि आपातकाल में यात्रियों को निकाला जा सके।

नेशनल फॉयर प्रोटेक्शन एसोसियेशन की गाईडलाइन, जो कि अंतरराष्ट्रीय मानदंडों पर आधारित है, के आधार पर एक आपातकालीन इंटरमीडियेट इवैकुयेशन शैफ्ट नदी के पूर्वी किनारे पर बनाई गई है। यदि आग लगती है तो तुरंत ही दोनों किनारों पर स्थित टनल वेंटीलेशन फैन एक्टिवेट हो जायेंगे और धुआँ बाहर निकाल देंगे, ताकि यात्री सुरक्षित रहें।

सुरंग में आग से बचाव हेतु पर्याप्त अग्निशामक उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं तथा एक आपातकालीन प्रबंधन टीम को बचाव कार्य हेतु प्रशिक्षित किया गया है।

सुरंग बनाने के कार्य का निष्पादन

सुरंग खोदने के कार्य के लिए उचित तकनीक, विधि और प्रणाली पर उचित नियंत्रण की आवश्यकता थी। अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुभवी विशेषज्ञों के पर्यवेक्षण में 24 घंटे कार्य किया गया, ताकि अनावश्यक गलतियां न हों। साइट प्रबंधन के लिए एक प्रोटोकॉल बनाया गया और उच्चस्तरीय प्रबंधन सूचना प्रणाली विकसित की गई। उचित सावधानी और प्रोटोकॉल के कारण तथा चौबीसों घंटे कार्य किए जाने के कारण बिना किसी बड़ी परेशानी के सुरंग का कार्य मात्र 66 दिन के अंदर पूरा हुआ। हावड़ा मैदान से एस्प्लैनेड के बीच सुरंग निर्माण कार्य में बड़ी मात्रा में 2.5 लाख क्युबिक मीटर कीचड़ निकला, जिसका निपटान इस प्रकार किया जाना था कि पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे। सड़क और डम्पर के पहियों की नियमित धुलाई भी बेहद आवश्यक थी।

शहर में सुरंग निर्माण के लिए संभावित सुरंग निर्माण कारकों को ध्यान में रखते हुए शानदार योजना, जांच एवं डिजाइन की जरूरत होती है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि नदी के नीचे सुरंग निर्माण में मानकों का कड़ाई से पालन, रखरखाव तथा आपातकालीन प्रोटोकॉल का पूरी तरह से पालन करना सफलतापूर्व कार्य पूर्ण करने के लिए आवश्यक था। नदी के नीचे पहली परिवहन सुरंग के सफल निर्माण से निश्चित रूप से भविष्य में नव भारत निर्माण की दिशा में नए द्वार खुलेंगे।

श्री बिश्वनाथ मुखर्जी
मुख्य इंजीनियर, कोलकाता मेट्रो रेल कार्पोरेशन लिमिटेड



कीचड़ को परिवहित किया जा रहा है

भारतीय रेल एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाएगी



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर दिये गये अपने भाषण में 2 अक्टूबर से देश में प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाने के आह्वान को ध्यान में रखकर भारतीय रेल ने पर्यावरण को प्लास्टिक के खतरे से बचाने के लिए पहल करते हुए एक बार फिर इस दिशा में अगुवाई की है। रेल मंत्रालय ने रेलवे की सभी यूनिटों को 2 अक्टूबर से 50 माइक्रॉन से कम मोटाई वाले एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश दिया है। प्लास्टिक के कचरे के सृजन को न्यूनतम स्तर पर लाने और इसके पर्यावरण अनुकूल निपटारे की व्यवस्था करने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

- एकल या एकबारगी उपयोग वाली प्लास्टिक सामग्री पर प्रतिबंध लगाया जाएगा।
- सभी रेलवे वेंडरों को प्लास्टिक के बैग का उपयोग करने से बचना होगा।
- कर्मचारियों को प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग कम करना चाहिए, प्लास्टिक उत्पादों की रिसाइक्लिंग कर इसका फिर से इस्तेमाल करना चाहिए और इसके साथ ही फिर से उपयोग में लाए जा सकने वाले सस्ते बैगों का उपयोग करना चाहिए, ताकि प्लास्टिक के स्टॉक में कमी आ सके।
- आईआरसीटीसी विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी के हिस्से के रूप में प्लास्टिक की पेयजल वाली बोतलों को लौटाने की व्यवस्था लागू करेगा।
- प्लास्टिक की बोतलों को पूरी तरह तोड़ देने वाली मशीनें जल्द से जल्द उपलब्ध कराई जाएंगी।

रेल मंत्रालय ने रेलवे की सभी यूनिटों को यह निर्देश भी दिया है कि प्लास्टिक के उपयोग में कमी लाने की शपथ 2 अक्टूबर को दिलाई जाएगी। इसके अलावा, रेलवे की सुविधाओं का उपयोग करने वालों (यूजर) के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) संबंधी उपाय अपनाए जाएंगे। ■

9 व्यक्तियों की जान बचाने वाले आरपीएफ जवान की रेल मंत्री ने की प्रशंसा

रेल, वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 14 अगस्त को नई दिल्ली में भारतीय रेल के लिए 'कोरस' के उद्घाटन समारोह में नौ लोगों की जान बचाने वाले आरपीएफ जवान शिवचरण गुर्जर के प्रयासों की प्रशंसा की



बहादुर आरपीएफ जवान श्री शिवचरण सिंह गुर्जर को सम्मानित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री दीपक झा

गुजरात में पिछले दिनों हुई भारी बरसात के कारण सामाखियाली स्टेशन पर 12959 दादर भुज एक्सप्रेस को 10 अगस्त को शॉर्ट टर्मिनेट किया गया था। वरिष्ठ मण्डल सुरक्षा आयुक्त श्री सैयद सरफराज अहमद ने बताया कि महेसाणा आरपीएफ पोस्ट पर तैनात कांस्टेबल श्री शिवचरण सिंह गुर्जर इस ट्रेन में महेसाणा से गांधीधाम की ओर आ रहे थे तो ट्रेन को सामाखियाली में निरस्त होने पर उन्हें सूचना मिली कि सामने आरवीएनएल परियोजना पर कार्य कर रहे नौ व्यक्ति बाढ़ के पानी में फँसे हुए हैं। इस पर शिवचरण एवं गांधीधाम पोस्ट के श्री शक्तिदेव यादव ने त्वरित कार्रवाई करते हुए श्रमिकों का जीवन बचाने की ठान ली।

सौभाग्य से शिवचरण तैराकी जानते थे। जब वे दोनों श्रमिकों को बचाने के लिए निकल रहे थे तो स्टेशन पर यात्रियों व स्टाफ ने उन्हें बाढ़ में जाने से मना किया। इस पर उन्होंने कहा कि आप निश्चित रहें, हम कामयाब होकर लौटेंगे। एनडीआरएफ के दो सदस्यीय दल के साथ बाद में पहुँची नाव से उन्होंने दो बारी में सभी नौ यात्रियों को सकुशल स्टेशन पर पहुंचाया। सुरक्षित पहुंचे बाढ़ से बचाए गए श्रमिकों ने श्री शिवचरण का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अगर यह सहायता समय पर नहीं पहुँचती तो उनका जीवन खतरे में पड़ गया होता। यात्रियों में आठ पुरुष एवं एक महिला श्रमिक थी। ■

पूर्वोत्तर के गौरवमय रेल इतिहास को समेटे कोचबिहार रेल संग्रहालय



कोचबिहार के राजमहल के रूप में बनी संग्रहालय की भव्य इमारत

कोचबिहार रेल संग्रहालय की शुरुआत फरवरी, 2016 में की गई। पूर्वोत्तर सीमा रेल के अलीपुरद्वार मंडल के रेल अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा किए गए कठिन परिश्रम तथा प्रयासों का यह प्रतिफल है। संग्रहालय अलीपुरद्वार मंडल के कोचबिहार रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। यह संग्रहालय कोच राजवंश की समृद्ध विरासत के साथ-साथ रेलवे के ऐतिहासिक, तकनीक, सामाजिक-सांस्कृतिक और एकीकरण की भावना को दर्शाता है। यह आम लोगों के लिए 31 मार्च, 2016 को खोल दिया गया।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

भारत के गवर्नर-जनरल और कोचबिहार के महाराजा के बीच 28 अगस्त, 1949 को एक करार हुआ, जिसे 'कोचबिहार विलय करार' कहते हैं, जिसके अंतर्गत कोच महाराज का शासन समाप्त करते हुए इसे गणतंत्र भारत (भारत सरकार) में मिला लिया गया। इससे पूर्व नृपेन्द्र नारायण, जिन्होंने 1863 से 1911 तक कोच राजवंश पर शासन किया, ने अपने राज्य में रेलवे लाइन बिछाने की पहल की।

कोचबिहार स्टेट रेलवे (सीबीएसआर)

कोचबिहार के महाराजा नृपेन्द्र नारायण ने 1893-94 में कोचबिहार राज्यवंश की स्थापना की। सन् 1891-92 में ब्रिटिश अधिकारियों से विचार-विमर्श के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि कोचबिहार शहर के विपरीत तोर्शा के दक्षिण छोर से ईस्टर्न बंगाल रेलवे के ट्रैक पर स्थित गितालदाह स्टेशन तक छोटी रेल पटरी का निर्माण किया जाए। इस लाइन को माल यातायात के लिए 15 सितंबर, 1893 को खोल दिया गया जबकि 1 मार्च, 1894 को इसे यात्री यातायात के लिए खोल दिया गया। तोर्शा नदी पर पुल बनने के पश्चात कोचबिहार शहर को इससे जोड़ दिया गया, जिसे बाद में विस्तार कर भारत-भूटान सीमा के निकट अलीपुरद्वार, बक्सा और जयंती तक किया गया। पूरी लाइन को 1901 में खोल दिया गया और 1910 में इसे मीटर लाइन में परिवर्तित किया गया। सीबीएसआर रेलवे प्रणाली को ईस्टर्न बंगाल रेलवे (ईबीआर) द्वारा परिचालित किया गया। गितालदाह-कोचबिहार-जयंती के मीटर गेज में आमान परिवर्तन के पश्चात् 1910 में ईबीआर ने हासीमारा-अलीपुरद्वार सेक्शन का निर्माण किया।

बंगाल दुवार्स रेलवे (बीडीआर)

ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रांत में वर्ष 1893 से 1941 तक बंगाल दुवार्स रेलवे (बीडीआर) का परिचालन किया गया। बीडीआर को भूटान की सीमा के निकट हिमालय की तलहटी पर स्थित दुवार्स के साथ-साथ लालमोनिर हाट (अब बांग्लादेश में) स्थित ईबीआर से जोड़ा गया। इस रेल प्रणाली का विकास मुख्य रूप से चाय बगानों के प्रयोजन से किया गया था। बीडीआर ने चांग्राबांधा होकर लालमोनिर हाट से दुवार्स स्थित मदारीहाट तक गाड़ी सेवा का परिचालन किया।

क्षेत्र की इस वैभवशाली विरासत को देखते हुए संग्रहालय में पांच गैलरियाँ, सेमिनार हॉल, ऑडियो-विजुअल कक्ष, पुस्तकालय आदि स्थापित किये गये हैं।



सीबीएसआर तथा कोचबिहार राजवंश के इतिहास को दर्शाते हुए फोटो



गैलरी-1 : बड़े सेंट्रल हॉल में

गैलरी-1: वर्तमान और तत्कालीन

गैलरी को संग्रहालय के एक बड़े कक्ष में स्थापित किया गया है जो चित्रों, कलाकृतियों और उपकरणों के रूप में वर्षों के दौरान रेलवे के तकनीकी विकास को दर्शाती है। यहाँ आकर कोई भी दर्शक भारतीय रेल के प्रारंभिक दिनों में प्रयोग में लाई जा रही यांत्रिक सिग्नलिंग प्रणाली से संबंधित सिग्नल एवं दूरसंचार उपकरणों के शानदार संग्रहों, जैसे, टेललैंप, प्वांइट इंडिकेटर लैंप, ब्रेकवान साइड लैंप, सिग्नल लैंप, सेमाफोर सिग्नलों, हारिजंटल एवं वर्टिकल रोप पहियों, लॉकिंग ट्रे असेम्बली, डबल वायर हैंड प्लंगर लॉक, डबल वायर क्लच लीवर आदि देख सकते हैं। गैलरी में कुछ पुराने उपकरणों को भी शामिल किया गया है, जो समय के अनुसार क्रमिक विकास को दर्शाते हैं, जैसेकि टेलीग्राफी, पोर्टेबल कंट्रोल टेलीफोन, डीटीएमएफ (ड्यूल-ट्यून मल्टी फ्रिक्वेंसी) टेलीफोन, पुश बटन टेलीफोन आदि भारतीय रेल में बीते दिनों और आज की प्रयुक्त संचार प्रणाली के अंतर को बखूबी प्रदर्शित करते हैं। इतना ही नहीं, गैलरी इंटरलॉकिंग प्रणाली के क्रमागत विकास और आधुनिकीकरण के साथ-साथ ब्रिटिश भारत में आम रूप से प्रयुक्त एनालॉग क्लॉक और मौजूदा प्रयुक्त हो रहे जीपीएस आधारित डिजिटल घड़ी को बखूबी दर्शाती है।

इस गैलरी में मंडलों के विभिन्न विभागों से संग्रह किए गए कुछ धरोहर उपकरणों, जैसे, आईने वाली ड्रेसिंग-टेबल, टिकट स्टॉक बॉक्स, टिकट डेटिंग मशीन, सुझाव बॉक्स, यांत्रिक तुला मशीन, वेट बैलेंस, वॉटर मैन द्वारा प्रयोग किए जा रहे वॉटर मग्स भी प्रदर्शित किए गए हैं। कुछ फोटो गैलरियाँ, आदि मिक्स बैग, पुलों का क्रमिक विकास, रेलवे इंजन एवं कोच भारतीय रेल के ऐतिहासिक महत्त्व को अलग-अलग रूप से प्रस्तुत करती हैं। सभी कोचों में शौचालयों की व्यवस्था के लिए भूतपूर्व ईस्ट इंडियन रेलवे के साहेबगंज सब-डिविजन अधिकारी को संबोधित ओखिल चन्द्र सेन का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पत्र भी गैलरी में दर्शाया गया है। गैलरी में फोटोग्राफ्स के साथ-साथ यंत्रों एवं उपकरणों का भी संग्रह है। प्रख्यात व्यक्तित्व, जैसे पं. जवाहरलाल नेहरू, गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की ट्रेन द्वारा यात्रा की तस्वीरें भी गैलरी में प्रदर्शित की गई हैं। एक दूसरी फोटो गैलरी में यूनेस्को विश्व विरासत डीएचआर (दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे) टॉय ट्रेन प्रदर्शित की गई है। इसके अलावा इस गैलरी में रेलवे स्टेशन, धरोहर रेलवे इंजनों की फोटो गैलरी भी दर्शाई गई है। रेल पटरी बनाने में प्रयुक्त रेल को कालक्रमबद्ध अनुसार, जैसे 25 पौंड से 60 किग्रा तक अलग-अलग वजन के रेल सेक्शनों के रूप में दर्शाया गया है।

गैलरी-2: रेलवे और उसके आस-पास का वातावरण

इस गैलरी में कुछ आश्चर्यजनक वस्तुएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास को दर्शाया गया है। गैलरी में स्थानीय मुद्दों का पुट देते हुए समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और दुवार्स क्षेत्र की वनस्पति एवं वन्य जीवों को दिखाया गया है। इसे दुवार्स क्षेत्र के लैंडस्केप, जीव एवं वनस्पति, लोग एवं उनकी संस्कृति तथा ट्रेन एवं स्टेशनों में वर्गीकृत किया गया है। इतना ही नहीं, गैलरी में इस क्षेत्र की विभिन्न जनजातियों की सांस्कृतिक विरासत, सांस्कृतिक समृद्धता का संगम और उनकी कलाकृतियों को बखूबी पेश किया गया है। अलीपुरद्वार मंडल के पड़ोस में स्थित देश भूटान, जो अपनी नैसर्गित सुंदरता के लिए सैलानियों को आकर्षित करता है, भी गैलरी का आकर्षण है।



गैलरी-2 : समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की एक झलक

गैलरी-3 : रेलवे - कब और क्या हुआ

यह एक महत्त्वपूर्ण गैलरी है। यहाँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय रेल के साथ-साथ विश्व रेल के अलग-अलग विषयों को गैलरी में दिखाया गया है। विश्व रेलवे के इतिहास, भारतीय रेल के इतिहास, पूसी रेल के इतिहास, कोचबिहार स्टेट रेलवे (सीबीएसआर), कोचबिहार राजवंश का इतिहास, रेलवे की आश्चर्यजनक जानकारियाँ,



विश्व रेलवे तथा भारतीय रेल के इतिहास को दर्शाते हुए फोटो



भारतीय रेल के तब और अब के मेडिकल तथ्यों को दर्शाते हुए

भारतीय रेल का क्रमबद्ध इतिहास और भारतीय रेल के शानदार फोटोग्राफ्स गैलरी में सुसज्जित किए गए हैं।

गैलरी-4 : अलग-अलग जोनों के संग्रह

भारतीय रेल के अलग-अलग जोन से सूचनाएँ इकट्ठा कर इस गैलरी को एक व्यापक राष्ट्रीय परिदृश्य का रूप दिया गया है। गैलरी में उपलब्ध फोटोग्राफ्स डायमंड क्रॉसिंग के



गैलरी-4 : का अंदरूनी दृश्य

साथ-साथ मुख्यालय और स्टेशन भवन, डीजल लोकोमोटिव वर्क्स, यादगारें और इंजीनियरिंग तकनीकी दर्शाते हैं।

गैलरी-5 : रेलवे एवं इसकी चिकित्सा सेवाएं

रेलवे अपने कर्मचारियों एवं अंदरूनी जगहों पर रह रही आम जनता को अपने अस्पतालों एवं डिस्पेंसरी के द्वारा चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध कराती है। यह गैलरी भारतीय रेल की चिकित्सा सेवाओं का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करती है। भारतीय रेल के तत्कालीन एवं वर्तमान चिकित्सा तथ्यों को दिखाने के लिए कई फोटो गैलरियाँ प्रदर्शित की गई हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

- इस गैलरी में कुछ फोटो शामिल हैं जिसमें निम्नलिखित शीर्ष दिए गए हैं। स्वस्थ बच्चों की 8 आदतें, लोको पॉयलट - आँखों की जांच, बच्चों में स्वस्थ मानसिकता एवं स्वस्थ रहन-सहन को बढ़ावा देने के लिए 10 उपाय तथा सर रोनाल्ड रॉस, डॉ. बिधान चन्द्र राय एवं सर उपेंद्रनाथ ब्रह्मचारी का चिकित्सा सेवाओं में योगदान।
- **पहियों पर स्वास्थ्य** - इसमें लाइफ लाइन एक्सप्रेस तकनीकी तौर पर एडवांस आधुनिक अस्पताल ट्रेन, लाइफ लाइन एक्सप्रेस का उद्देश्य, लाइफ लाइन एक्सप्रेस में ऑपरेशन थिएटर, दुर्घटना चिकित्सा ट्रेन, एसपीएआरटी (सेल्फ प्रोपेल्ड एक्सिडेंट रिलीफ ट्रेन), अस्पताल ट्रेन, एम्बुलेंस ट्रेन आदि का प्रदर्शन शामिल है।
- **विशेष सुविधाओं से युक्त रेलवे अस्पताल** - इस फोटो गैलरी में पेरम्बूर रेलवे अस्पताल, रेलवे अस्पताल, बाइकूला-तत्कालीन वृहद् भारतीय प्रायद्वीप को रेलवे द्वारा उपलब्ध कराया गया अस्पताल, पूर्व तट रेल का विशेष सुविधाओं से युक्त केंद्रीय अस्पताल, बनारस रेलवे अस्पताल - रेलकर्मियों के कैंसर चिकित्सा हेतु अस्पताल, पश्चिम रेलवे का जगजीवन राम अस्पताल - प्लास्टिक सर्जरी के लिए विख्यात, दक्षिण मध्य रेलवे का केंद्रीय अस्पताल, अम्बेडकर रेलवे अस्पताल आदि।

इन पांच गैलरियों के साथ-साथ संग्रहालय के हॉल में कुछ आकर्षक शो-पीस हैं। इसके अलावा संग्रहालय के साथ एक पुस्तकालय, ऑडियो-विजुअल कक्ष तथा सेमीनार हॉल है। आगंतुकों को आकर्षित करने के लिए संग्रहालय के पास ही एक कोच रेस्टोरेंट भी खोला गया है।

- **पुस्तकालय** - एक आकर्षक पुस्तकालय है जिसमें यूनाइटेड किंगडम से एकत्रित की गई दुर्लभ पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में भारतीय रेल के विभिन्न विभागों की पुस्तकें, पूर्वोत्तर क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाने वाली पुस्तकें हैं। डाक टिकटों के फोटो, जिसमें रेलवे के विभिन्न तथ्यों जैसे डीएचआर के 100 साल पर मनाए गए समारोह, पहाड़ पर चलने वाले इंजन, कोंकण रेलवे, विक्टोरिया टर्मिनस के 100 साल आदि से संबंधित फोटो पुस्तकालय में प्रदर्शित किए गए हैं।



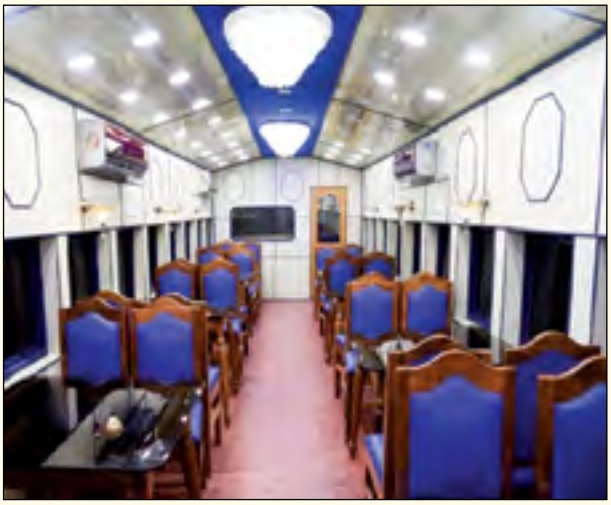
पुस्तकालय के अंदर बुक शेल्फ

- **ऑडियो-विजुअल कक्ष** – ऑडियो-विजुअल कक्ष में आगंतुकों के लिए डिजिटल स्क्रीन प्ले में पूर्वोत्तर सीमा रेल के इतिहास भारतीय रेल की आलीशान गाड़ियों, सीबीएसआर आदि की डॉक्यूमेंट्री फिल्में दिखाई जाती हैं।
- **कोच रेस्टोरेंट** – आगंतुकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से रेल संग्रहालय के निकट एक वातानुकूलित रेल कोच रेस्टोरेंट खोला गया है। कोच रेस्टोरेंट के बाहरी हिस्से को प्राकृतिक दृश्य से सजाया गया है। रेस्टोरेंट में दो केबिन, वॉशरूम, रसोई एवं डाइनिंग हॉल हैं।

साथ ही, संग्रहालय परिसर में विभिन्न आकार के रेल पीस, पुश ट्रॉली, लीवर फ्रेम, एक्सैल एवं व्हील के विभिन्न आकार, वॉटर कॉलमेन आदि को दर्शाया गया है।

स्थानीय लोगों एवं कूचबिहार रेलवे स्टेशन में गाड़ी पर चढ़ने वाले लोगों के लिए यह संग्रहालय आकर्षण का केंद्र बन गया है। विभिन्न जगहों से आए छात्र एवं विदेशी पर्यटक संग्रहालय को देखकर बहुत ही खुश होते हैं। अंदरूनी प्रदर्शनी के द्वारा आगंतुक ऐतिहासिक महत्त्व का अनुभव कर सकते हैं तथा बाहरी प्रदर्शनी को देखकर सुंदरता का लुत्फ उठा सकते हैं। ■





कोच रेस्टोरेंट का आकर्षक बाहरी हिस्सा (बायें) तथा इसका अंदरूनी हिस्सा (दायें)





संग्रहालय परिसर में बाहरी प्रदर्शनी

शांति नर्सिंग होम

श्री रामकिशोर उपाध्याय
आईआरएएस (सेवा निवृत्त)

आसमान साफ था। सूरज तेजी से चमक रहा था। ब्रह्मनगर में क्षेत्र विधायक एवं जिला चिकित्सा अधिकारी, मेरठ शांति नर्सिंग होम के उद्घाटन के लिए कैंची से फीता काट रहे थे, तो दूसरी ओर रामसिंह अपनी खुशी को व्यक्त न कर अतीत के सुनहरे पन्ने पलट रहा था। उसके कानों में शब्द गूंज रहे थे।

"अरे रामसिंह! गेहूँ नहीं बोया क्या?" कई वर्ष बाद गांव वापस आए चाचा धनपाल ने पूछा। चाचा धनपाल को देखकर भतीजा रामसिंह बहुत खुश था।

"नहीं, चाचा।" कहकर रामसिंह की आंखों से आंसू की झड़ी लग गई।

"कोई बात नहीं, तू घबरा मत। बता, बात क्या हुई?

अभी रास्ते से जब आ रहा था तब देखा कि श्याम सिंह, कर्म सिंह, प्रेम सिंह के खेतों में गेहूँ के पौधे उग आए हैं, मगर तेरा खेत खाली पड़ा दिखाई दिया तो चिंता हुई। यह सोचकर कि आखिर माजरा क्या है, पांव भी जल्दी-जल्दी घर की ओर उठ गए। आ, मेरे पास बैठ और सही-सही बता कि क्या हुआ?" कहकर धनपाल ने रामसिंह के सर पर हाथ फिराकर उसे सहज करने का प्रयास किया।

पांच मिनट तक चाचा धनपाल और भतीजे रामसिंह के बीच सन्नाटा छाया रहा। यह संवादहीनता जब टूटी जब पास खड़ी रामसिंह की बेटी कौशल्या ने पूछा कि चुप क्यों हो आप दोनों। कौशल्या को संकेत कर रामसिंह ने कहा कि देखो, चाचा कई साल बाद गांव आए हैं। जल्दी से जाकर माँ से कहो कि नाश्ते-पानी का इंतजाम करें। कौशल्या यह सोचकर आई थी कि अपने दादा से थोड़ी देर बात करेगी, परंतु पिता ने उसे लौटती डाक-सा वापस घर को पोस्ट कर दिया। वह भारी मन से धीमे-धीमे घर की ओर जाने लगी। कौशल्या के ओझल होते ही रामसिंह कहने लगा।

"चाचा, तुम तो जानते हो कि कौशल्या मेरी इकलौती बेटी है। तुम तो दादा जी से नाराज होकर यहां से बम्बई चले गए। बीस साल हो गए। तुम्हें हालात का पता कैसे होता? तुमने तो राजी-खुशी का एक खत भी नहीं लिखा। आखिर बम्बई शहर की भीड़ में जाकर आदमी खो ही जाता है। फिर घर की तरफ देखता नहीं। खैर, यह सब छोड़ो! कौशल्या पढ़ने-लिखने में होशियार थी। उसे डॉक्टर बनने की बड़ी इच्छा थी। बारहवीं पास करते ही उसका गोवा मेडिकल कॉलेज में दाखिला हो गया। कौशल्या की माँ धर्मो उसे इतनी दूर भेजना ही नहीं चाहती थी, परंतु बेटी की जिद और मेरी इच्छा से वह पढ़ने चली गई। ठीक पांच साल में कोर्स पूरा करते ही एक साल की ट्रेनिंग के लिए दिल्ली के राम मनोहर अस्पताल में इंटर्नशिप करने लगी। यहाँ तक तो सब ठीक चल रहा था।" कहकर रामसिंह चुप हो गया।

"फिर क्या हुआ?"

"चाचा, होना क्या था वही जो आजकल हो रहा है। वहां एक हमारे इलाके और बिरादरी का लड़का मोहन सिंह भी इंटर्नशिप कर रहा था। इनकी ट्रेनिंग के दौरान मुलाकात हुई और धीरे-धीरे प्रेम के बंधन में बँध गए। तुम तो जानते ही हो कि बेटी के जवान होते ही बाप को चिंता सताने लगती है। धर्मो भी लगातार कौशल्या के लिए लड़का देखने की जिद कर रही थी। एक दिन जब कौशल्या छुट्टियों में घर आई तो हमने विवाह के विषय में बात की। कौशल्या ने बड़ी दृढ़ता से कहा, ''पिताजी, मैंने खुद एक लड़का पसंद कर लिया है। वह मेरे अस्पताल में ही काम करता है। सबसे अच्छी बात है कि वह हमारी बिरादरी का भी है। यही श्याला गांव का है। आप तो शुरू से मेरी शादी अपनी जाति में ही करने की कहते थे। यदि आप अनुमति देंगे तो आपकी बात भी रह जायेगी। मैंने उस समय कोई उत्तर नहीं दिया।" रामसिंह कह कर रुक गया। फिर एक गिलास पानी पीकर बात आगे बढ़ाई।

उसी रात में कौशल्या की माँ से मैंने इस मुद्दे पर बात की। कौशल्या कहने लगी, ''वो शेर सिंह के खानदान का है। वहां करीब तीस साल पहले मेरी फूफी रत्नो बियाही गई थी। रईस जरूर है, पर इस खानदान का चाल-चलन ही ठीक नहीं है। मेरी फूफी को मेरे फूफा ने एक दिन जरा-सा पानी गिरने पर लाठियों से इतना मारा कि फूफी ने दम तोड़ दिया था। उसी रात में ही उसकी चिता जलाकर सुबह तक सब सबूत मिटा दिए थे। मुझे तो यह रिश्ता ठीक नहीं लगता। आगे तुम जानो।" यह सुनकर मैं चुप हो गया। फिर बेटी की खुशियों के विषय में सोचकर पत्नी को समझाया कि ये सब पुराने जमाने की बातें हैं। अब लोग पढ़-लिख गए हैं। गँवार नहीं हैं। इसके परिवार के आदमी अब अच्छी-अच्छी जगहों पर सरकारी नौकरी में पहुँच गए हैं। एक तो विधायक बन कर जनता की सेवा भी कर रहा है। मुझे इसमें कोई कमी नहीं दीखती। आखिर धर्मो ने फैसला मेरे ऊपर यह कहकर छोड़ दिया कि तुम बाप-बेटी पढ़े-लिखे हो, तुम जानों। मेरी अनपढ़ बुद्धि में जो आया सो कह दिया।" कहकर रामसिंह रुक गया।

"और तुमने बिना सोचे-समझे मोहनसिंह से शादी तय कर दी?" धनपाल ने प्रश्न किया।

"हाँ चाचा! मेरे सामने 'आगे कुआं पीछे खाई' जैसी स्थिति थी। एक तरफ मेरी पत्नी की मोहनसिंह के प्रति शंका थी तो दूसरी तरफ बेटी की इच्छा। आजकल के बच्चे किसी की सुनते कहाँ हैं? यह तुम्हारा और मेरा जमाना तो है नहीं। जब तुम्हारी शादी चाची शांति से की तो तुम्हें बताया तक नहीं। आपको बैठक में बुलाया, जहाँ न कोई पंडित या नाई

था। न रोली, न मौली। बस, शांति के बापू ने चिलम की राख से आपके माथे पर टीका कर कहा कि भाई लम्बरदार सोहनसिंह, अब आज से तेरा लड़का धनपाल हमारा हो गया। अब ब्याह की तारीख पंडित से पूछकर खबर करता हूँ। चाचा, तुम टुकर-टुकर देखते रह गये कि क्या हुआ? वैसे उस जमाने में जमीदारों के घरो में शादी के लिए लड़के के हिस्से में कितनी जमीन आती है, देखते थे शादी के लिए और शिक्षा, योग्यता, पद आदि सब कुछ बेकार। परंतु-"

"परंतु क्या, रामसिंह?"

"चाचा, उस जमाने की शादी विवाह के बाद पति-पत्नी तमाम जिंदगी साथ-साथ बिता देते थे। अब कदम-कदम पर दोनों के बीच अहं और विचारों का टकराव आम बात है। दोनों के बीच अविश्वास। कोई सुखी नहीं। अब कौशल्या को ही देख लो। शादी हो गई धूमधाम से। मैंने दस लाख का कर्जा लिया। शादी के इंतजामों की सभी ने तारीफ की। एक साल तक सब ठीक-ठाक चला। परंतु धर्मो की बात ठीक निकली। मोहन सिंह ने कौशल्या के साथ मार-पीट शुरू कर दी। कौशल्या को मैंने कभी एक अंगुली तक नहीं लगाई। उसने हमें मौका ही नहीं दिया। एक साल तक उसने हमें कुछ नहीं बताया। वह चुपचाप सहती रही। एक दिन आधी रात को जब किसी ने द्वार खटखटाया तो देखा, मोहन सिंह और कौशल्या खड़े थे। हमें शंका हुई। पूछा कि इतनी रात को क्यों आए हैं? मोहन सिंह कहा, ''पिताजी, यह कई दिन से मिलने की रट लगाए थी। दिन में समय नहीं मिलता, इसलिए इस समय घर मिलाने के लिए लाया हूँ। अगले दिन सुबह-सुबह अस्पताल में ड्यूटी है," कहकर मोहन सिंह उसे घर छोड़कर चला गया। ठीक पंद्रह दिन बाद तलाक का नोटिस आ गया। यह देखकर ऐसे लगा कि किसी ने पेड़ की डाल काट दी और हम धड़ाम से जमीन पर आ गिरे। एक बार तो सोचा कि मोहन सिंह को गोली मार दूँ, परन्तु दूसरे क्षण उसके विवेक ने रोक दिया। बेटी ने भी पढ़ा, किन्तु वह रोई नहीं, बल्कि जोर से हँसी। फिर गंभीर हो कहने लगी "मोहन सिंह ईश्वर तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।" कहकर राम सिंह शांत हो गया।

"तुमने जाति की पंचायत क्यों नहीं बुलाई?" धनपाल ने क्रोधित होकर कहा।

"चाचा, ये पंचायतें अब बेकार हो गई हैं। बुला तो लेता, मगर पंचायत में होता क्या? चार हमारी कहेंगें चार उसकी! फैसला जिसके विरुद्ध जाएगा वो मानेगा नहीं। फिर अब लोग पंचायत की सामूहिक बौद्धिकता से अधिक अपनी चाणक्य बुद्धि पर विश्वास करते हैं। कौशल्या ने भी मना कर दिया। बेटी अभी हालात के सदमे में है। कहती है, अब शादी नहीं करूँगी। एक दिन उसने आपसी रजामंदी से तलाक का कोर्ट केस दायर कर, हमें चौंका दिया।"

कौशल्या नाश्ता लेकर आ गई और रामसिंह की बात बीच में रह गई। रामसिंह और धनपाल नाश्ता करने लगे। फिर बात को आगे सरकाया।

"चाचा, शादी में दस लाख का कर्जा लिया था। पिछले दो बरस से न जाने क्या हुआ? न तो ईख ठीक हुई और न मक्का। और तो और, गेंहू फसल से उतनी उपज नहीं मिली जितनी अकसर होती थी। सोचा तो यही था कि दो साल में कर्जा उतर जाएगा, परंतु बेटी के जाने बाद धरती माता भी हमसे रूठ-सी गई। श्यामलाल सेठ को तो आप जानते हैं कि वह कितना बड़ा सूदखोर और क्रूर है? उसका ब्याज और मूल लौटाने का दबाव बढ़ता ही जा रहा था। कई दिनों तक हम दोनों ठीक से सो नहीं पाए। कई रिश्तेदारों से बात की। कई तो इस शादी के कारण मुंह फुलाए हुए थे। सभी ने कर्ज देने से साफ मना कर दिया। जब दबाव बर्दाश्त नहीं हुआ तो रेलपार का दो बीघे का खेत बेच कर पैसे ब्याज सहित चुका दिए। पर अब गेहूँ के बीज, खाद खरीदने लायक पैसे बचे ही नहीं और खेत बिना बोये रह गया। अब और कर्जा लेने की हिम्मत भी टूट गई। वैसे भी कई किसान कर्ज न चुका पाने के कारण आत्महत्या कर रहे हैं, यह रोज हम अखबारों में पढ़ रहे हैं। कई बार मैंने भी सोचा कि आत्महत्या कर लूं तो यह कर्ज सरकार खुद माफ करवा देगी।" रामसिंह फफककर रोने लगा।

"अरे रामसिंह, तू इतना कमजोर कब से हो गया? मेरी ओर देख। मैं बम्बई की चकाचौंध देख कर वहाँ गया था। बिजनेस किया, घाटा खाया पर अपना हौसला नहीं खोया। जब जीवन पटरी पर आ गया तो एक दिन तेरी चाची को हार्ट अटैक हुआ और वह चल बसी। मेरे सारे सपने टूट गए, मन उखड़ गया। सोचा अब बम्बई में नहीं रहना और सारी संपत्ति बेचने को निकाल दी। लोग ऐसी संपत्ति पर गिद्ध-दृष्टि गड़ाए रहते हैं। औने-पोने में एक माफिया बिल्डर ने घर-दुकान खरीद ली। अरे पगले! आत्महत्या की बात कायर करते हैं। एक जोर का रहपट मुँह पर मारूँगा तेरे मुँह पर। अगर फिर ऐसी बात आई तो"। धनपाल ने जब यह कहा तो रामसिंह उसकी बम्बइया बोली कि जगह अपनी कौरवी भाषा का 'रहपट' शब्द सुनकर जोर से हँस पड़ा। चाचा में अभी गाँव जिन्दा देखकर उसे सुकून मिला।

"हां, चाचा। मैं इतना कमजोर नहीं हूँ। चाचा, यह जीवनचक्र है। जानता हूँ, जीवन की रेखा कभी सीधी नहीं चलती।" रामसिंह ने धनपाल को आश्वस्त किया।

तभी कौशल्या आ धमकी और यह बोली, "पिताजी, डॉक्टर तो मैं हूँ। आप को कैसे पता कि जीवन रेखा ऊपर नीचे चलती है?"

"कौशल्या, तेरा बाप हूँ मैं," रामसिंह ने कहकर ठहाका लगाया तो लगा कि जीवन का सारा अवसाद अब समाप्त हो गया।

तभी धनपाल ने कहा, "रुको भाई, इस खुशी को दुगुंना करते हैं। ये लो बीस लाख का चेक, रामसिंह! तुम्हारे लिए है। अब मेरे आगे पीछे तो कोई और है नहीं।"

"नहीं चाचा, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। अब आपका साथ रहे," यह कहकर चेक लौटा दिया।

"नहीं रामसिंह, मैं अब घर वापस आ गया हूँ। मुंबई की सब चका चौंध में अच्छों-अच्छों की आंखे चुंधिया जाती हैं। मेरी अब आंखें खुल गई हैं। परदेश कितना भी अच्छा लगे, अपना वतन अपना ही होता है। जहाँ जन्म लिया, अब उसी मिट्टी में मिलना चाहता हूँ। मेरा मन अब फिर से हल की मूठ पकड़ने का है। हम और जमीन खरीदेंगे। बीज और खाद खरीदकर लाऊँगा और फिर गेंहू बोऊँगा। कौशल्या अब जब तक वह चाहेगी, यहीं रहेगी। जीवन को फिर से शुरू करेगी। मेरठ जाकर इसके लिए नर्सिंग होम की जगह तलाशता हूँ। और कौशल्या होगी उसकी मालकिन।" कहकर चचा धनपाल चुप हो गए।

"और उसका नाम होगा 'शांति नर्सिंग होम'," कहकर कौशल्या ने धनपाल को चौंका दिया।

माघ का महीना था। अचानक बादल घिर आए। तभी नन्ही-नन्ही फुहारें पड़ने लगीं। बाहर से खाट उठाकर बैठक की ओर भागे। थोड़ी देर में तेज बारिश शुरू हो गई। पेड़-पौधे नहा धोकर नवयौवना जैसे तरोताजा हो गए। धरती से मिट्टी की सोंधी-सोंधी खुशबू आने लगी। कौशल्या बरसते मेघों को आकाश में अपलक देख रही थी। मोहन सिंह की कडवी यादें भी बारिश में धुल रही थीं। वह बाहर, भीतर दोनों से भीग रही थी। सपनों का इन्द्रधनुष बन रहा था। वह सेवा, त्याग और आत्मसम्मान के प्रतीक 'शांति नर्सिंग होम' को काम करते हुए स्पष्टतया देख रही थी। रामसिंह अपने खाली पड़े खेत में गेहूं की लहलहाती फसल की कल्पना कर रहा था। इन दोनों के खयालों से बेखबर धनपाल 'शांति नर्सिंग होम' के बाहर लगी मूर्ति में अपनी प्रिय पत्नी शांति को मुस्कारते हुए देख रहा था।

धर्मो ने जब पति रामसिंह को टोका, "अरे, उद्घाटन हो गया। अब मेहमानों को जलपान कराओ।" तब जाकर रामसिंह के विचारों की श्रृंखला टूटी। ■

चिट्ठी-पत्री



महोदय,

'भारतीय रेल' पत्रिका के 60 साल पूरे होने पर बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। मैं सन् 1990 से इस पत्रिका से जुड़ा हुआ हूँ। वैसे तो हर अंक अपने आप में विशेष होता है, परन्तु अगस्त, 2019 का अंक प्राप्त होने पर बहुत खुशी हुई।

पत्रिका के साठ साल पूरे हो गए। मेरी तरफ से इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। आगे भी भारतीय रेल तरक्की की राह पर चलती रहे, यही कामना है।

संजय मिगलानी, पटियाला

महोदय,



'भारतीय रेल' पत्रिका का जून, 2019 का अंक बेहद पसन्द आया। हमारे रेल एवं राज्य मंत्रियों की फोटोग्राफ सहित जानकारी बेहद अच्छी लगी। पर्यटन में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का साक्षी झांसी का ऐतिहासिक किला बेहद अच्छा लगा। साहित्य में 'पकोड़ीवाली' बहुत पसन्द आई। यह हम सबके जीवन का यथार्थ है।

मैं एक 72 वर्षीय सेवानिवृत्त अधिकारी हूँ। आपका तहेदिल से आभारी हूं। ऐसे ही अंक प्रकाशित करें। प्रभु आपकी मदद करेंगे। धन्यवाद।

विक्रम कपूर, अलीगढ़



महोदय,

'भारतीय रेल' पत्रिका का मई अंक प्राप्त हुआ। आवरण प्रथम पुरस्कार अंतर रेलवे चित्रकला प्रतियोगिता के साथ चित्रकार का नाम भी पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस प्रयास से यह चित्र बहुत लोगों तक पहुंचा। अंदर की सामग्री भी बहुत बढ़िया और स्तरीय है। साहित्य सामग्री भी बढ़िया है। रेलवे का जीवन पूरे पृष्ठों में यहाँ धड़कता है। पूरी टीम को बधाई।

कलावंती सिंह, रांची



आपको यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbharatiyarailb@gmail.com

पत्र लिखें : संपादक, भारतीय रेल, 357-सी, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001



श्री हेमकुण्ड साहिब की ट्रैकिंग

डॉ. एस. के. सैनी
मुख्य सुरक्षा आयुक्त, रेल सुरक्षा बल,
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

मुझे जब उत्तराखण्ड के बारे में जानने का अवसर मिला तभी से फूलों की घाटी और हेमकुण्ड साहिब का झील के साथ षटकोणीय आकार का ढलवाँ छत वाला गुरुद्वारा आकर्षित करता रहा। मैंने सुना था कि वहाँ अकेले जाना उचित नहीं है। समुद्र की सतह से 15,000 फीट की ऊँचाई, ऑक्सीजन की कमी से उत्पन्न सिरदर्द और चक्कर आना जैसी परेशानियाँ खड़ा कर देता है। ऐसे में मदद के लिए कोई साथी होना बेहद जरूरी होता है। दूसरा तथ्य यह है कि कुदरत के इन खूबसूरत नजारों को निहारने और साथ में चलते रहने के कुछ साथी तो होने ही चाहिए बरना अकेला थक जाएगा, बोर हो जाएगा, वापस भाग लेगा। इसलिए जब पूर्वोत्तर रेलवे के खेल संघ के तत्वावधान में फूलों की घाटी व हेमकुण्ड साहिब की ट्रैकिंग आयोजन किया जा रहा था तो मैंने भी उसमें भाग लेने की इच्छा जताई जिस पर महाप्रबन्धक पूर्वोत्तर रेलवे, जो पूर्वोत्तर रेलवे खेल संघ के अध्यक्ष भी हैं, ने अनुमति दे दी तो मेरे हर्ष का पारावार नहीं रहा।

हम लोग 17 जुलाई, 2019 को गोरखपुर से देहरादून जाने वाली राप्ती गंगा एक्सप्रेस में बैठ गए। हमारी 30 सदस्यीय टीम छोटी नहीं थी। ऋषिकेश और आगे ठहरने का इंतजाम भारतीय यूथ हॉस्टल एसोसिएशन द्वारा किया जाने वाला था। सो, ठहरने-खाने की कोई चिन्ता नहीं थी। हाँ, एक तथ्य तो बताना भूल ही गया। फूलों की घाटी का आधार शिविर घांघरिया 10,500 फीट समुद्र सतह से ऊँचाई पर स्थित है। शिमला मात्र 6,500 फीट पर ही है तो आप ऊँचाई का एक अंदाजा लगा सकते हैं। इस ट्रैकिंग के लिए अव्वल दर्जे की फिटनेस भी चाहिए होती है, सो वाराणसी मंडल के 3, इज्जतनगर मंडल के 6, लखनऊ मंडल के 2 और गोरखपुर में 19 लोगों के लिए कठोर फिटनेस का कार्य 25 जून से ही शुरू कर दिया गया था, जिसमें सुबह 6 बजे गोरखपुर में हमारी टीम के अनुभवी, सदस्य उत्तम छेत्री पूरे एक महीने तक रोज एक से डेढ़ घण्टे के मध्य दौड़ाकर, पैदल चलवाकर और फिर माँसपेशियों को मजबूत कराने वाले व्यायाम मनोयोग से कराते रहे। रविवार को भी साँस लेने की फुरसत नहीं थी। सुबह उठते ही सीधा हम स्टेडियम की तरफ रुख करते थे। एक महीने की इस कठोर वर्जिश से हमारे शरीर की कुछ-कुछ चर्बी छँटी और हम अपने को हल्का महसूस करने लगे। हमारी तैयारियों का जायजा लेने महाप्रबन्धक पूर्वोत्तर रेलवे, श्री राजीव अग्रवाल एवं पूर्वोत्तर रेलवे खेल संघ के सचिव श्री प्रवीण अग्रवाल स्वयं स्टेडियम में एक दिन आए। महाप्रबन्धक ने ट्रैकिंग के अपने अनुभव साझा किए और हमें कुछ निर्देश भी दिए।

हम गोरखपुर से हरिद्वार होते हुए ऋषिकेश पहुँचे वहाँ से यूथ हॉस्टल द्वारा हम लोगों को हमारी ट्रैकिंग के बारे में आवश्यक जानकारी व सावधानियों के बारे में बताया गया। अगले दिन यानि 19 जुलाई, 2019 को सुबह साढ़े पांच बजे हम अपना लंच पैकेट उठा कर ऋषिकेश से जोशी मठ के लिए रवाना हुए। ऋषिकेश से जोशी मठ की दूरी लगभग 270



किमी है और कुल यात्रा का समय लगभग साढ़े दस घण्टे लगता है। यह लंबी एवं थकाऊ यात्रा है। इसी में सबसे पहला स्थान देव प्रयाग पड़ता है जहाँ पर भागीरथी और अलकनन्दा का संगम होता है।

हम लोग जोशी मठ शाम को साढ़े चार बजे पहुँचे। जहाँ बस आकर रूकी थी, वह सेना के क्षेत्र से सटा हुआ क्षेत्र था। वहीं एक पहाड़ी पर यूथ हॉस्टल वालों ने किराए का मकान लेकर कैम्प के रूप में घोषित किया हुआ था। पहली ट्रैकिंग यहीं 200 मीटर चढ़ाई पिट्ठू के साथ हो गई। पहुँचने के बाद हम लोगों ने चाय पी और उसके पश्चात् कुछ देर बाहर घूमने के लिए निकले। अगले दिन यानि 20 जुलाई, 2019 को सुबह साढ़े छः बजे साथ में हम नाश्ता बाँधकर जोशी मठ से गोविन्द घाट के लिए रवाना हुए। गोविन्द घाट से नन्दा देवी राष्ट्रीय जैव विविधता क्षेत्र में प्रवेश के लिए एक अनुमति-पत्र लेना पड़ता है। उसे लेने के बाद पुलना गाँव से हम लोगों ने 10 किमी की ट्रैकिंग आरंभ की।

शाम को लगभग 4 बजे हम लोग आधार शिविर घाँघरिया पहुंच गए। घाँघरिया समुद्र की सतह से 10,500 फीट की ऊँचाई पर है। यहाँ पर काफी ठंड थी और यहाँ पर हमें एक होटल में ठहराया गया था, जहाँ कमरे एकदम ठंडे थे। बिस्तर और रजाई में भी ठंड लग रही थी।

पहले दिन यानि 21 जुलाई, 2019 को हम लोगों ने फूलों की घाटी की ट्रैकिंग पूर्ण की। हम थके हुए वापस आए व तुरंत गर्म पानी से पैर धोकर थोड़ी मालिश की। थकान से खाना भी ठीक से नहीं खाया गया। अगले दिन 22 जुलाई, 2019 को सुबह उठकर साढ़े छः बजे लंच तथा अन्य सामान पैक कर, अपनी पीठ पर, लेकर हमारी टीम हेमकुण्ड साहिब के रास्ते आगे बढ़ चली। अगले 10 मिनट में हमने घांघरिया का छोटा-सा कस्बा पार कर लिया और उस दोराहे पर पहुँच गए जहाँ से एक रास्ता फूलों की घाटी की ओर और दूसरा रास्ता गुरुद्वारा श्री हेमकुण्ड साहिब की ओर जाता है। हम दाहिनी ओर हेमकुण्ड साहिब वाले रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। सामने एक विराट पर्वत दिखाई दे रहा था। हमें इसी पर चढ़ना था। धीरे-धीरे हम लोग आगे बढ़ते गए। खड़ी चढ़ाई में पत्थर बिछाकर छोटा-सा रास्ता बनाया गया था। थोड़ी देर में हम लोगों की साँस फूलने लगी। हवा में ठंडक थी, किन्तु हमें पसीना आ रहा था हमारे साथी मनीषजी ने कहा कि हम लोग छोटे-छोटे कदम बढ़ाते हैं और हर 400, 500 मीटर पर 10 मिनट का विश्राम करते हैं। रास्ते में हमें 2 ग्लेशियर भी पार करने पड़े।

सबसे पहले हमारा साक्षात्कार हुआ, ट्रैकिंग रास्ते के दाहिनी ओर एक विशाल जल प्रपात से, जो नीचे बर्फ के ग्लेशियर में गुम हुआ जा रहा था और करीब 60 मीटर आगे जाकर ग्लेशियर के नीचे से दरिया बनकर बह रहा था। बहुत ही सुन्दर दृश्य था।

एक घण्टे की कठिन चढ़ाई के पश्चात् दूसरे ग्लेशियर



के दर्शन हुए। यह इसलिए कि हमें उस ग्लेशियर पर ही चलकर दूसरी ओर पार होना था। ऊँचाई बढ़ती जा रही थी, बादल हमारे आसपास ही मंडरा रहे थे। इस ग्लेशियर पर चलना काफी खतरनाक था। सो, एक-एक करके टीम के सदस्यों ने ग्लेशियर पार किया। इसके पश्चात् फिर खड़ी चढ़ाई चढ़कर हेमकुण्ड साहिब तक पहुँच गए। हमसे पहले पहुँचे हुए श्रद्धालुओं की संख्या देखकर हम आश्चर्यचकित हो गए, अर्थात् लोगों ने सुबह पाँच बजे ही यात्रा शुरू कर दी थी। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले हमने लंगर में चाय पी। ठंड जबरदस्त थी। धूप आ-जा रही थी, क्योंकि बादल अठखेलियाँ कर रहे थे। लाउडस्पीकर पर धीमे-धीमे गुरुग्रंथ साहिब की पवित्र वाणी उच्चारित हो रही थी। जब हम पहुँचे तो दोपहर के साढ़े ग्यारह बज चुके थे और अरदास का समय हो रहा था। लोग धीरे-धीरे गुरुद्वारे में अन्दर की ओर बढ़ रहे थे। गुरुद्वारा दोमंजिला है और षटकोणीय आकार में बना हुआ है जिसमें ढलवां चादरें लगी हैं ताकि बर्फबारी में बर्फ छत से गिरकर फिसल जाए। यहाँ पर अक्टूबर से अप्रैल तक बर्फ ही बर्फ दिखाई देती है। गुरुद्वारे के चारों ओर सप्त पर्वत शिखर हैं और समीप में झील है, जिसमें पर्वत शिखरों पर जमी बर्फ का जल एकत्र होता है। सरोवर का पानी बेहद स्वच्छ एवं पारदर्शी है।

श्रद्धालु यहाँ पर बिना साबुन के स्नान करके अरदास करने गुरुद्वारे में पहुँचते हैं। हिम समान शीतल जल को छूने से करंट-सा लग रहा था, किन्तु श्रद्धा भावना के आगे हमें हर कठिनाई सरल लगती है। श्रद्धालु डुबकी लगाकर तुरंत बाहर जाते हैं। समुद्र की सतह से 15,000 फीट की ऊँचाई यानि 5,000 मीटर ऊँचाई स्थित यह गुरुद्वारा अद्भुत है जिसे सिक्खों के श्रद्धेय गुरु गोविन्द सिंहजी की याद में बनाया गया था। गुरु गोविन्द सिंहजी ने यहाँ आकर तपस्या की थी। वे यहाँ के शान्त, पवित्र और उर्जस्वी वातावरण से बेहद प्रभावित





हुए थे। गुरु के आगमन के समय यहाँ मात्र एक लोकपाल मंदिर था, जिसमें लक्ष्मणजी की मूर्ति थी। स्थानीय लोग अभी भी इसे लोकपाल क्षेत्र के नाम से ही जानते हैं। गुरुद्वारे में अरदास के पश्चात् प्रसाद स्वरूप मेवों भरा गर्मागर्म हलवा था, जिसे ग्रहण कर शरीर में शक्ति का संचार हो गया। इसके पश्चात् हम लोगों ने खूब फोटोग्राफी की। जी ही नहीं भरता था। उसके बाद लंगर में प्रसाद ग्रहण किया। गर्मागर्म खिचड़ी खाकर तबियत चुस्त हो गई। अब वहाँ पर पहरेदारों ने हल्की-हल्की सीटी बजाना शुरू किया जिसका मतलब था कि श्रद्धालु वापस घांघरिया आधार शिविर लौटने हेतु यात्रा आरंभ करें। दरअसल डेढ़ बजे के बाद यहाँ मौसम बिगड़ना शुरू हो जाता है। बादल उमड़ने लगे थे और धीरे-धीरे फुहार शुरू हो गई थी। गुरु को प्रणाम कर हम लोगों ने भी अपनी वापसी यात्रा आरंभ की। मार्ग में हमने देखा कि सिख श्रद्धालु महिलाएँ बिना चप्पलों/जूतों के नंगे पाँव चढ़ाई चढ़ रही थीं। श्रद्धालुजन साथ लाए बच्चों को गोदी में लेकर वाहे गुरु का नाम स्मरण करते हुए चढ़ रहे थे। उम्रदराज लोग भी हौले-हौले संभलकर चढ़ रहे थे। हेमकुण्ड साहिब की ट्रैकिंग हमारे जीवन की एक महत्त्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय अनुभूति थी। मार्ग की जोखिम व सीधी खड़ी चढ़ाई में हाँफते-हाँफते चढ़ना अपने शरीर का कठोरतम परीक्षण ही करना होता है, किन्तु श्रद्धा संकल्प सब कुछ करवा देती है। ■



पश्चिम रेलवे

मुंबई सेंट्रल स्टेशन पर क्रॉउड मैनेजमेंट के भावी पहलुओं पर चर्चा

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने 2 अगस्त को मुंबई सेंट्रल स्टेशन परिसर में मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन द्वारा आजाद मैदान से मुंबई सेंट्रल मेट्रो तक 3.814 किमी लम्बी डाउन लाइन टनल ड्राइव की पूर्णता की सफल उपलब्धि पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। यह उपलब्धि कोलाबा-बांद्रा-सीप्ज मेट्रो-3 कॉरिडोर के पैकेज 2 की टनल बोरिंग मशीन वैतरणा-1 के जरिए हासिल की गई है। इस मेट्रो लाइन की शुरुआत के बाद मेट्रो-3 कॉरिडोर मुंबई सेंट्रल मेट्रो स्टेशन पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मेन लाइन और उपनगरीय स्टेशनों के साथ यात्रियों को सीधी और आसान सम्बद्धता प्रदान करेगा। इस अवसर पर श्री गुप्ता द्वारा प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री राज कुमार लाल, प्रमुख मुख्य इंजीनियर श्री आर. के. मीणा तथा मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन



के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ रेल परिसर में भविष्य में बढ़ने वाली यात्रियों की संख्या तथा क्राउड मैनेजमेंट के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। ■

वीरमगाम आईसीडी से पहले एक्जिम ट्रेन ऑपरेशन की शुरुआत

पश्चिम रेलवे द्वारा 26 जुलाई, 2019 को गेटवे रेल फ्रेट लिमिटेड के साथ वीरमगाम इनलैंड कंटेनर डिपो (आईसीडी) से पहले एक्जिम ट्रेन ऑपरेशन की शुरुआत की गई। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दीपक कुमार झा ने पहली एक्सपोर्ट ट्रेन सेवा को आईसीडी वीरमगाम से पीपावाव पोर्ट तक के लिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर कस्टम के अपर आयुक्त श्री सुशांत सिंह, एचएमएसआई कस्टम कार्यालय से श्री पंकज मुद्गल तथा श्री भारत हिंडोल, गेटवे रेल टीम तथा अन्य वरिष्ठ रेल, कस्टम एवं गेटवे रेल के अधिकारी भी उपस्थित थे।

यह आईसीडी न्हावा शेवा, मुंद्रा एवं पीपावाव के पोर्ट टर्मिनल के बीच कंटेनराइज्ड कार्गो के आयात एवं निर्यात हेतु



गेटवे रेल नियमित ट्रेन सेवाओं का परिचालन करेगा। यह प्रतिवर्ष 100,0000 टीईयूएस को हैंडल कर सकता है। सामुद्रिक कंटेनरों में ड्राई एवं रीफर कार्गो को हैंडल करने हेतु यह आईसीडी पूर्णतः सुसज्जित है। ■

डीजल शेड, वटवा में इलेक्ट्रिक लोको इंजनों के अनुरक्षण कार्य की शुरुआत

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के वटवा स्थित डीजल शेड ने इलेक्ट्रिक लोको इंजन के अनुरक्षण कार्य की शुरुआत कर एक नए अध्याय की शुरुआत की है। अपने पहले प्रयास में ही पहले इलेक्ट्रिक लोको (डब्ल्यूएजी-5) का अनुरक्षण कार्य सफलतापूर्वक पूरा करके निर्धारित लक्ष्य तारीख 1 सितम्बर, 2019 से पहले 22 अगस्त को ही प्रदान कर रिकॉर्ड बनाया है। मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री दीपक कुमार झा ने शेड के अनुरक्षित लोको



इंजन को हरी झंडी दिखा कर रेलवे की सेवा में समर्पित किया। इस अवसर पर श्री झा ने डीजल शेड, वटवा के नव विकसित लोगो का अनावरण भी किया। वटवा डीजल शेड ने इस कार्य निष्पादन से उल्लेखनीय प्रतिष्ठा हासिल की है, जिससे भारतीय रेल के डीजल शेडों में इलेक्ट्रिक लोको का अनुरक्षण करने वाली महत्त्वपूर्ण सूची में यह डीजल शेड भी शामिल हो गया है। डीजल शेड, वटवा में इलेक्ट्रिक लोको इंजन का अनुरक्षण कार्य रेल मंत्रालय के अनुदेशों के अनुसार किया जा रहा है। ■

बांद्रा स्टेशन की गौरवशाली धरोहर के पोस्टल कवर का विमोचन

बांद्रा स्टेशन की समृद्ध और गौरवशाली धरोहर को दर्शाते स्पेशल पोस्टल कवर का विमोचन 23 अगस्त को बांद्रा रेलवे स्टेशन परिसर में आयोजित एक समारोह में महाराष्ट्र सर्कल के मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल श्री एच. सी. अग्रवाल द्वारा महाराष्ट्र के स्कूली शिक्षा, युवा कल्याण एवं खेल मंत्री एडवोकेट आशीष शेलार, पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता और मशहूर बॉलीवुड अभिनेता श्री शाहरुख खान की उपस्थिति में किया गया।

बांद्रा रेलवे स्टेशन पश्चिम रेलवे और मुंबई का एक प्रमुख उपनगरीय स्टेशन है, जिसकी ऐतिहासिक इमारत ग्रेड-I हेरिटेज स्ट्रक्चर के रूप में अधिसूचित है। एक शताब्दी से भी अधिक पुराने इस महत्त्वपूर्ण रेलवे स्टेशन की ऐतिहासिक इमारत विक्टोरियन गॉथिक और वैरनैकुलर वास्तु शैली का शानदार मिश्रण है, जो मुंबई महानगर में अपनी एक खास पहचान रखती है। बांद्रा स्टेशन का शुभारम्भ 28 नवम्बर, 1864 को हुआ था, जबकि वर्तमान में मौजूद शानदार विरासती इमारत का निर्माण इस स्टेशन के शुभारम्भ के 24 साल बाद 1888



में किया गया। इस समारोह में पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक, श्री सुनील कुमार और पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी, श्री रविंद्र भाकर के अलावा पश्चिम रेलवे तथा डाक विभाग के अनेक वरिष्ठ अधिकारी और स्थानीय नगरसेवक भी शामिल हुए। ■

उत्तर रेलवे

क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की बैठक

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक, श्री टी.पी. सिंह द्वारा नई दिल्ली में क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के सदस्यों के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया। उत्तर रेलवे के क्षेत्राधिकार में आने वाली रेल संबंधी समस्याओं का शीघ्रता से समाधान निकालने के लिए समिति के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया गया।

महाप्रबंधक ने उत्तर रेलवे के क्षेत्राधिकार में आने वाले स्टेशनों और रेलगाड़ियों में यात्री सुविधाओं, अवसंरचनात्मक ढाँचे और सेवाओं से संबंधित विभिन्न विकासात्मक, नए एवं पूरे हो चुके कार्यों व नए कार्यों की योजनाओं से उन्हें अवगत कराया। ■



सदस्यों ने अपने क्षेत्र से जुडी विभिन्न समस्याओं को सामने रखा।

उत्तर रेलवे द्वारा 'हरित दिवस' मनाया गया

उत्तर रेलवे द्वारा 3 अगस्त को 'हरित दिवस' मनाया गया। महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, श्री टी.पी. सिंह, अध्यक्ष, उत्तर रेलवे महिला कल्याण संगठन, श्रीमती हरिंदर कौर, मंडल रेलवे प्रबंधक, दिल्ली, श्री एस.सी. जैन एवं उत्तर रेलवे मुख्यालय के विभागों के प्रमुखों एवं दिल्ली मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों ने पौधारोपण के कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर महाप्रबंधक ने कहा कि पर्यावरण को संरक्षित करने, अतिक्रमण रोकने के साथ ही स्टेशनों, ट्रेनों एवं कार्यालयों में स्वच्छता बनाए रखने में ऐसे कार्यक्रम बहुत सहायक होते हैं। ■



सांसद ने रायपुर मंडल कार्यालय का दौरा किया

सांसद डॉ. सरोज पाण्डेय ने 9 अगस्त को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, रायपुर, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का दौरा किया। डॉ. पाण्डेय ने मंडल रेल प्रबंधक श्री कौशल किशोर एवं अन्य अधिकारियों से रेलवे में चल रहे विकासात्मक कार्यों की चर्चा की।

इस दौरान सांसद ने रायपुर मंडल के स्टेशनों पर, विशेषकर दुर्ग स्टेशन पर यात्री सुविधाओं के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी ली। ■



महाप्रबंधक द्वारा मोतीबाग वर्कशॉप का निरीक्षण

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री अजय विजयवर्गीय ने 15 जून, 2019 को मोतीबाग वर्कशॉप/बॉयो टॉयलेट प्लांट का निरीक्षण कर कार्य प्रणाली का जायजा लिया।

इसके उपरांत मंडल में आयोजित बैठक के दौरान पॉवर प्वाइंट के माध्यम से नागपुर मंडल के अंतर्गत चल रहे सभी आमान परिवर्तन परियोजनाओं की विस्तृत जानकारी महाप्रबंधक को दी गई। महाप्रबंधक द्वारा सम्बन्धित कार्यों की प्रगति की समीक्षा कर इन कार्यों को निर्धारित समय पर पूरा करने के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, अपर मंडल रेल प्रबंधक, श्री वाई.एच. राठौड़ व श्री बी.के. रथ सहित नागपुर मंडल के सभी शाखा अधिकारी उपस्थित थे। ■



दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के तीनों मंडलों में यूटीएस मोबाइल एप का प्रचार-प्रसार

रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों को टिकट काउण्टरों में लगने वाली कतारों से निजात दिलाने एवं टिकटिंग प्रणाली को गतिशील बनाने के साथ ही साथ नकदी रहित प्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से घर बैठे अनारक्षित टिकट बुकिंग हेतु पेपरलेस मोबाइल टिकटिंग एप की सुविधा प्रदान की गई है। इसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के तीनों रेल मंडलों में 29 जून से 5 जुलाई, 2019 तक 'अनारक्षित मोबाइल एप जागरूकता अभियान' चलाया गया। इस अभियान में सभी प्रमुख स्टेशनों में हेल्प-डेस्क का प्रावधान किया गया, साथ ही बैनर, पम्फलेट एवं उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से भी यात्रियों को यूटीएस मोबाइल के माध्यम से टिकट बुक कराने की जानकारियाँ दी गईं। ■



पूर्व तट रेलवे

क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की बैठक

पूर्व तट रेलवे की क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की बैठक महाप्रबंधक श्री विद्या भूषण की अध्यक्षता में भुवनेश्वर स्थिति रेल सदन में आयोजित की गई। बैठक में समिति के विशिष्ट सदस्य, जिनमें चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, पीएसयू, यात्री संघ के प्रतिनिधि, उपभोक्ता संघ, राज्य सरकार व अन्य समूह के सदस्यों ने हिस्सा लिया। बैठक के दौरान सदस्यों ने अपने विचार व सुझाव रखे। यात्री सुविधा व सेवा, जनता की मांग एवं अन्य विकास संबंधी गतिविधियों,



यात्री आरक्षण प्रणाली, ट्रेनों के विस्तार, इत्यादि विषयों पर बैठक के दौरान चर्चा की गई। ■

पूर्वोत्तर रेलवे

महाप्रबन्धक द्वारा ई-ऑफिस का शुभारम्भ

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री राजीव अग्रवाल ने 26 जुलाई को पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय में ई-ऑफिस का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने कहा कि। ई-ऑफिस डिजिटलाइजेशन की दिशा में एक प्रयास है। ई-ऑफिस से न केवल कार्य कुशलता में वृद्धि एवं निस्तारण में तीव्रता आएगी बल्कि भारी मात्रा में कागज की बचत होगी, जो पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगा।

बैठक में महाप्रबन्धक, रेलटेल, श्री दीपू श्याम ने कहा कि आज पूर्वोत्तर रेलवे उन क्षेत्रीय रेलों के वर्ग में शामिल हो गया है जो ई-ऑफिस का प्रयोग करना प्रारम्भ कर चुके हैं। उन्होंने ई-ऑफिस की विशेषता को बताते हुए कहा कि



डिजिटल सिग्नेचर प्रत्येक उपयोगकर्त्ता के लिये आवश्यक होगा तथा नेटवर्क की उपलब्धता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगी। उन्होंने कहा कि इस प्रणाली में किसी भी फाइल या एप्लीकेशन को डाउनलोड करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ■

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे

महिला यात्रियों के लिए कोच के हिस्से का चिह्नितकरण

महिला यात्रियों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के मद्देनजर, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने एसएलआर कोच के एक हिस्से को गुलाबी रंग से चिह्नित करना आरंभ किया है। इससे महिला यात्रियों को प्लेटफॉर्म पर कोच को आसानी से पहचानने में सहायता मिलेगी। इस एसएलआर कोच का परिचालन रंगिया मंडल द्वारा न्यू बंगाईगांव तथा गुवाहाटी के बीच चलने वाली पैसेंजर ट्रेन में किया गया। इसी तरह का चिह्नितकरण रंगिया तथा मुरकोंगसेलेक के बीच चलने वाली पैसेंजर ट्रेन में भी किया गया। कुछ ट्रेनों में कोच की प्रकृति के आधार पर इस तरह का चिह्नितक्रम दिव्यांगजन के लिए भी किया गया है। उम्मीद है कि यह पहल महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए काफी लाभदायक साबित होगी। पूर्वोत्तर सीमा रेल महिला यात्रियों से जरूरत पड़ने पर इन चिन्हित कोचों पर सवार होने की अपील करता है। नई प्रणाली को



मजबूती प्रदान करने के लिए रेल अगले कुछ दिनों में आरपीएफ तथा टिकट निरीक्षण कर्मचारी भी नियुक्त करेगी। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे

केंद्रीय अस्पताल में सूचना प्रबंधन प्रणाली एवं सीसीटीवी का उद्घाटन

श्री पी. एस. मिश्रा, तत्कालीन महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे ने 5 जुलाई को दक्षिण पूर्व रेलवे केंद्रीय अस्पताल गार्डेनरीच में अस्पताल सूचना प्रबंधन प्रणाली एवं सीसीटीवी का उद्घाटन किया। डॉ. आर. के. पाणी, मुख्य चिकित्सा निदेशक, दक्षिण पूर्व रेलवे, डॉ. रूपा मित्रा, चिकित्सा निदेशक, दक्षिण पूर्व रेलवे केंद्रीय अस्पताल, विभिन्न विभागों के प्रधान मुख्य अधिकारी, डॉक्टर्स, पैरामेडिकल स्टाफ और कर्मचारी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। महाप्रबंधक ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि इससे डॉक्टरों, नर्सों एवं अस्पताल के कर्मचारियों की कार्य क्षमता में सुधार होगा एवं वे अपने कर्त्तव्य को लेकर हर समय सतर्क रहेंगे। इस प्रणाली से आउट पेशेंट विभाग पंजीकरण, इंडोर पेशेंट विभाग प्रवेश एवं निकास, दवाई



की दूकान, पैथोलॉजिकल रिपोर्ट, रोगियों की एक्स-रे रिपोर्ट आदि का डाटा अस्पताल में सुरक्षित रहेगा। सेंट्रल अस्पताल के वार्डों, गेटों एवं गलियारों में 29 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। ■

उत्तर मध्य रेलवे

महाप्रबंधक ने किया एचडीयू वार्ड का उद्घाटन

केन्द्रीय चिकित्सालय, प्रयागराज में श्री राजीव चौधरी, महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे द्वारा एचडीयू वार्ड का उद्घाटन किया गया। एचडीयू ऐसे वार्ड हैं, जिनमे ऐसे मरीज रखे जाते हैं जिन्हें सामान्य वार्ड से अधिक लेकिन आईसीयू से कम गहन अवलोकन, उपचार और नर्सिंग की आवश्यकता होती है। इस 12 बेड के वार्ड के शुरू होने से गंभीर रोगियों की बेहतर देखरेख एवं उपचार संभव होगा। श्रीमती ललिता चौधरी, अध्यक्षा, उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन, (मुख्यालय) ने इस अवसर पर केन्द्रीय चिकित्सालय में एक क्रिटिकल केयर एम्बूलेंस का उद्घाटन किया। ■



नई दिल्ली में नवनिर्मित रेल अधिकारी विश्राम गृह का शुभारंभ

19 अगस्त को महाप्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, श्री राजीव चौधरी ने अपने नई दिल्ली दौरे के अवसर पर शिवाजी ब्रिज रेल परिसर में नवनिर्मित रेल अधिकारी विश्राम गृह का शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री चौधरी कहा कि, इस नए विश्राम गृह से दिल्ली आने वाले सभी अधिकारियों को बहुत सुविधा होगी। इस विश्राम गृह का निरीक्षण करते हुए श्री चौधरी ने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक सुधार के निर्देश भी दिए। इस स्थान पर नए रेल अधिकारी विश्राम गृह को महाप्रबंधक के निर्देशानुसार आगरा मंडल द्वारा निर्मित कराया गया है। 35 लाख रुपये की लागत से बने इस विश्राम गृह में आवश्यक सुविधायुक्त कुल 7 वातानुकूलित कमरे हैं।



यह विश्रामगृह दिल्ली में उत्तर मध्य रेलवे परियोजना इकाई के पुराने कार्यालय के स्थान पर निर्मित किया गया है। ■

28वीं अखिल भारतीय रेल सुरक्षा बल बास्केट बॉल प्रतियोगिता

रेलवे सुरक्षा बल क्रीड़ा संघ, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर के तत्त्वावधान में सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोरखपुर में 5 से 8 जुलाई तक आयोजित 28वीं अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल बास्केट बॉल प्रतियोगिता के विजेता का खिताब उत्तर रेलवे की टीम ने जीता।

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक एवं पूर्वोत्तर रेलवे क्रीड़ा संघ (नरसा) के संरक्षक श्री राजीव अग्रवाल ने 8 जुलाई को समापन समारोह में विजेता एवं उपविजेता टीमों तथा खिलाड़ियों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक श्री आनन्द प्रकाश, प्रमुख विभागाधयक्ष, प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त/आर.पी.एफ. श्री अतुल श्रीवास्तव, मुख्य सुरक्षा आयुक्त/आर.पी.एफ. डॉ. एस. के. सैनी, वरिष्ठ रेल अधिकारी, खिलाड़ी, खेलप्रेमी तथा रेलवे सुरक्षा बल के जवान आदि उपस्थित थे।



इस प्रतियोगिता में कुल 9 टीमों – मध्य रेल, उत्तर रेलवे, पूर्व रेलवे, आर.पी.एस.एफ., दक्षिण रेलवे, दक्षिण मध्य रेलवे, पश्चिम मध्य रेलवे, मध्य रेल तथा मेजबान पूर्वोत्तर रेलवे ने भाग लिया। ■

पूर्वोत्तर रेलवे ने जीती 13वीं अखिल भारतीय रेल महिला हैण्ड बॉल प्रतियोगिता

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक एवं पूर्वोत्तर रेलवे क्रीड़ा संघ (नरसा) के संरक्षक श्री राजीव अग्रवाल ने नरसा के तत्वावधान में 18 से 20 जुलाई तक सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोरखपुर में आयोजित 13वीं अखिल भारतीय रेलवे महिला हैण्ड बॉल प्रतियोगिता का शुभारम्भ 18 जुलाई को किया।

इस अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक श्री आनन्द प्रकाश, प्रमुख विभागाध्यक्ष, नरसा के अध्यक्ष श्री सुधांशु शर्मा, उपाध्यक्ष श्री एस.के. मिश्रा, महासचिव श्री पी.के. अग्रवाल, संयुक्त महामंत्री एवं हैण्ड बॉल सचिव श्री संजय यादव, कबड्डी सचिव श्री पंकज कुमार सिंह, क्रिकेट सचिव श्री डी.के. खरे, तैराकी सचिव श्री रविन्दर मेहरा, नरसा के अन्य पदाधिकारी, सहायक क्रीड़ा अधिकारी श्री चन्द्र विजय सिंह, रेल अधिकारी, कर्मचारी, खिलाड़ी तथा खेल प्रेमी उपस्थित थे। पूर्वोत्तर रेलवे की टीम ने 13वीं अखिल भारतीय महिला हैण्ड बॉल प्रतियोगिता के विजेता का खिताब जीता।



इस प्रतियोगिता में दक्षिण मध्य रेलवे, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे तथा मेजबान पूर्वोत्तर रेलवे ने हिस्सा लिया। पूर्वोत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक श्री आनन्द प्रकाश ने 20 जुलाई को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में टीमों को ट्रॉफी एवं खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया। ■

उत्तर रेलवे के खिलाड़ियों ने यूरोपियन मास्टर्स गेम्स 'टोरिनो, इटली-2019' में पदक जीते

अंतरराष्ट्रीय मास्टर्स गेम्स एसोसिएशन द्वारा टोरिनो, इटली में 26 जुलाई से 4 अगस्त, 2019 तक यूरोपियन मास्टर्स गेम्स-2019 का आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में उत्तर रेलवे के खिलाड़ियों ने एक स्वर्ण, चार रजत और एक कांस्य पदक निम्न स्पर्धाओं में जीते :

1. श्रीमती मृदुला आदिल ने बास्केट बॉल में स्वर्ण जीता।
2. श्री धर्मसिंह ने बास्केट बॉल में रजत और भाला फैंक स्पर्धा में कांस्य पदक जीता।
3. श्री अनिल टोकस ने बास्केट बॉल में रजत पदक जीता।
4. श्री योगेश दीक्षित ने बास्केट बॉल और 10 किमी दौड में रजत पदक जीता। ■

भारतीय रेल पुरुष वॉलीबॉल टीम ने बुल्गारिया में जीती विश्व चैंपियनशिप



17वीं यूएसआईसी (विश्व रेलवे) पुरुष वॉलीबॉल चैंपियनशिप 24 से 28 अगस्त, 2019 तक बुल्गारिया के अल्बेना में आयोजित की गई। भारतीय रेल पुरुष वॉलीबॉल टीम ने बेलारूस को 3-1 से हराकर इस प्रतियोगिता की चैंपियनशिप जीती। यह चैंपियनशिप जीतने वाली टीम में पश्चिम रेलवे में टिकट परीक्षक के रूप में कार्यरत श्री के. रगुल भी भारतीय रेल टीम का हिस्सा थे।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता ने इस शानदार जीत पर पूरी भारतीय टीम का अभिनंदन किया है और श्री के. रगुल को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी है। ■

रेलकर्मी ने केडब्ल्यूएफए एशिया कुंग-फू-वुशु चैंपियनशिप जीती

रंगिया मंडल के वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर (पी-वे), के अधीन कार्यरत पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के कर्मचारी, श्री मंटू बरुआ ने एशिया एवं आईकेडब्ल्यूएफ कुंग-फू-वुशु फेडरेशन के तत्वावधान में कुंग-फू-वुशु एसोसिएशन, बांग्लादेश द्वारा 2019-20 को बांग्लादेश, ढाका में आयोजित केडब्ल्यूएफए दूसरी एशिया कुंग-फू- वुशु में चैंपियनशिप बनकर स्वर्ण-पदक हासिल की। 11से 13 जुलाई, 2019 तक इस प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। उन्होंने 75 से 80 कैटेगरी केजी की फाइट इवेंट प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। वर्ष 2015 को असम कुंगफू फेडरेशन द्वारा श्री मंटू बरुआ को ब्लेक बेल्ट रैंक के पहले डन सर्टिफिकट से पुरस्कृत किया गया था।

पूर्व में, श्री मंटू बरुआ ने वर्ष 2012 को लखनउ में आयोजित 6वां राष्ट्रीय कुंगफू चैंपियनशिप, लाइट संद इवेंट 60-65 केजी कैटेगोरी में भी स्वर्ण पदक हासिल किए थे। उन्होंने वर्ष 2016 को इंडो-भूटान कुंग-फू-वुशु चैंपियनशिप, 2016 और



केडब्ल्यूएआई 14वां राष्ट्रीय कुंग-फू-वुशु चैंपियनशिप, 2017-18 में भी भाग लिया था एवं स्वर्ण पदक हासिल किया था। उसके अतिरिक्त, उन्होंने कई मार्शियल आर्ट चैंपियनशिप्स में भी खिलाड़ी एवं कोच के रूप में भाग ली थी। ■



फायर और विश्व पुलिस चैंपियनशिप में आरपीएफ महिला कर्मी ने जीता स्वर्ण पदक

अहमदाबाद रेलवे मंडल में कार्यरत श्रीमती मंजू मलिक, कांस्टेबल ने 28 जुलाई से 6 अगस्त 2019 तक चीन में आयोजित फायर और विश्व पुलिस चैंपियनशिप में 73 किग्रा वर्ग में कुश्ती में स्वर्ण पदक एवं जूडो में कांस्य पदक प्राप्त किया।

श्रीमती मंजू को मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री दीपक कुमार झा द्वारा रु. 5000 के नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। ■

हीरक जयंती वर्ष

भारतीय रेल

पत्रिका का गौरवशाली 60वें वर्ष में प्रवेश



अगस्त 1960



अगस्त 2019

15 अगस्त न सिर्फ भारत का बल्कि 'भारतीय रेल' पत्रिका का भी जन्मदिवस है। रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका 'भारतीय रेल' का प्रकाशन 15 अगस्त, 1960 से नियमित रूप से किया जा रहा है। 'भारतीय रेल' पत्रिका के 59 वर्ष के सफर में साथ देने के लिए हम सभी पाठकों, लेखकों तथा सहयोगियों का धन्यवाद करते हैं।

फॉलो करें : @bharatiyarailrb www.facebook.com\bharatiyarailpatrika bharatiyarailpatrika



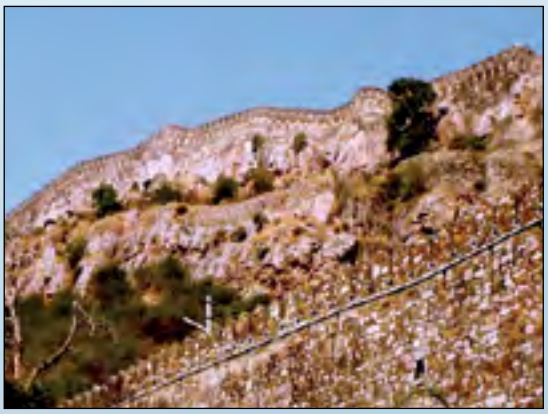


रतलाम मंडल विशेषांक











HINDUSTAN ZINC

Zinc & Silver of India

HINDUSTAN ZINC LIMITED

hzlmodus/Eng/5-19

vedanta
transforming elements

Ranked 1st Globally in ENVIRONMENT

by Dow Jones Sustainability Index – 2018*

*Metals & Mining sector

Enters FTSE4Good Emerging Index in UK

Globally 9th largest Silver Producer

Contributed ₹11563 Crore to Govt. Treasury 2018-19 (52% of revenue)
through royalties, taxes & dividends

Regd Office : Yashad Bhawan, UDAIPUR-313 004
PBX No. 0294-6604000, CIN-L27204RJ1966PLC001208, www.hzlindia.com

रतलाम मंडल विकास के पथ पर अग्रसर



श्री आर. एन. सुनकर
मंडल रेल प्रबंधक, रतलाम मंडल

पश्चिम रेलवे का रतलाम मंडल भारतीय रेल के अति व्यस्ततम मार्ग दिल्ली-मुम्बई पर स्थित है। देश की राजधानी दिल्ली एवं भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई के मध्य स्थित होने के कारण इसकी महत्ता स्वत: सिद्ध है।

पश्चिम रेलवे के एक मंडल के रूप में रतलाम 15 अगस्त 1956 को मंडलीकरण योजना के तहत अस्तित्व में आया। इस मंडल का उद्घाटन मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री थक्तमल जैन द्वारा किया गया।

यह मंडल गुजरात, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश राज्यों में फैला हुआ है। मंडल पर ब्रॉडगेज की 902 रूट किमी तथा मीटर गेज की 64 किमी लाइनें बिछी हुई हैं। इन्दौर, रतलाम, चित्तौड़गढ़, मंदसौर, नीमच, दाहोद एवं उज्जैन मंडल के प्रमुख स्टेशन हैं।

यातायात बाधाओं का निराकरण

रतलाम मंडल द्वारा वर्ष 2018-19 में कुल 50 यातायात बाधाएँ दूर की गईं:

- रतलाम स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं 1 एवं 2 का नागदा एंड से सम्पर्कता का प्रावधान किया गया। इसके फलस्वरूप चित्तौड़गढ़ से उज्जैन जाने वाली ट्रेनों का संचालन इन प्लेटफॉर्मों से हो सका।
- मांगलिया गांव, बकानिया भौंरी, नागदा, रतलाम एवं बैंक प्रेस नोट देवास में ओएचई का प्रावधान करने से शंटिंग कार्य समाप्त हुआ।
- शुजालपुर, नीमच एवं देवास स्टेशनों पर मॉडिफिकेशन का कार्य किया गया।
- पिंग्लेश्वर, ताजपुर, जबड़ी एवं इन्दौर - डॉ अम्बेडकर नगर लूप लाइन की गति 15 किमी/घंटा से बढ़ाकर 30 किमी/घंटा की गई।
- रतलाम-फतेहाबाद-लक्ष्मीबाई नगर खंड की गति 90 किमी/घंटा से बढ़ाकर 110 किमी/घंटा की गई।
- रतलाम-फतेहाबाद-लक्ष्मीबाई नगर मार्ग के लिए सीसी+8+2 की स्वीकृति प्राप्त की गई।
- रतलाम स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. 1 एवं 2 पर 'वॉटर हाइड्रेंट' सुविधा का प्रावधान किए जाने से यात्री ट्रेन में पानी भरने हेतु शंटिंग कार्य की बचत हुई एवं शंटिंग कार्य के दौरान नागदा-चित्तौड़गढ़ के मध्य मालगाड़ी के संचालन में आने वाली बाधाओं का निराकरण हुआ।
- बेरछा, अनास, चंदेरिया एवं मंगलमहुड़ी में 24 कोच वाली ट्रेन के व्यवस्थित ठहराव हेतु प्लेटफॉर्म की लम्बाई में वृद्धि की गई।
- मंडल के 12 स्थानों पर स्थायी गति प्रतिबंधों की समाप्ति की गईं।
  - शंभूपुरा - चित्तौड़गढ़ खंड का दोहरीकरण किया गया जिसके फलस्वरूप ट्रेनों की गति में वृद्धि हुई।
  - दाहोद - बोरड़ी के मध्य धामरदा स्टेशन को समाप्त कर आईबीएस का प्रावधान किया गया।



  - दाहोद स्टेशन पर पैनल इंटरलॉकिंग की सुविधा उपलब्ध करवा कर केबिन कार्यप्रणाली को समाप्त किया गया।
  - रतलाम-इन्दौर खंड में डेमू ट्रेन की गति 90 किमी/घंटा से बढ़ाकर 100 किमी /घंटा की गई।
  - ऊपरी सड़क पुल का निर्माण कर इन्दौर- राजेन्द्र नगर स्टेशन के मध्य स्थित समपार संख्या 250 को बन्द किया गया।
- रतलाम मंडल द्वारा भारतीय रेल के इतिहास में पहली बार 18.3 मीटर लम्बे एवं 130 मीट्रिक टन वजन के पी.एस.सी. गर्डरों को बदला गया। कुल 46 गर्डर बदले गए।



इसके अलावा 13 छोटे पुलों का निर्माण भी किया गया।

- रतलाम मंडल के व्यस्ततम राजधानी मार्ग पर 42.42 किमी का फॉर्मेशन ट्रीटमेंट जियोग्रिड एवं जियोटेक्सटाइल का उपयोग कर बैलास्ट क्लीनिंग मशीन के द्वारा किया गया।
- रतलाम मंडल द्वारा वर्ष के दौरान राजधानी मार्ग पर 41 थिक वेब स्विच डाले गए।
- 37 किमी का सीटीआर व्यस्ततम इन्दौर-देवास-उज्जैन खंड पर पीक्यूआरएस का उपयोग कर किया गया।
- रतलाम मंडल द्वारा किए गए उपर्युक्त कार्यों की सराहना करते हुए अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय रेल कॉन्फ्रेंस में सभी मंडलों को इस प्रकार की यातायात बाधाओं को दूर करने के लिए निर्देश दिए गए।
- इन्दौर में ट्रेनों के रख-रखाव हेतु अतिरिक्त पिट लाइन का निर्माण किया गया।
- वर्ष 2018-19 में लक्ष्य 3 से एक कदम आगे बढ़ते हुए 5 उत्कृष्ट रैक का अपग्रेडेशन किया गया। यह पश्चिम रेलवे के किसी भी डिपो का उच्चतम कार्य निष्पादन है।
- कर्मचारियों के इलाज हेतु चलित चिकित्सा वाहन की व्यवस्था की गई।
- स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 100% आरपीएफ कर्मचारी सहित रतलाम मंडल के कुल 99.5 % कर्मचारियों ने भाग लिया।
- आरईएलएस स्कीम के तहत कर्मचारियों के अग्रिम इलाज की सुविधा हेतु 05 निजी अस्पतालों के साथ करार किया गया।
- कुल 67 न्यायालय प्रकरणों में से माननीय न्यायालय द्वारा 62 में रेलवे के पक्ष में फैसला दिया गया।
- वर्ष 2018-19 में कुल 168 अनुकम्पा नियुक्ति दी गई।
- रतलाम मंडल क्यूआर कोड युक्त पहचान पत्र सह चिकित्सा कार्ड उपलब्ध करवाने वाला भारतीय रेल का प्रथम मंडल है।
- मंडल के द्वारा रेलवे की नियुक्ति से सेवानिवृत्ति तक के बुनियादी नियम 'रेल कार्मिक पॉकेट बुक' के रूप में कर्मचारियों को उपलब्ध कराई गई, जिसकी व्यापक पैमाने पर प्रशंसा हुई।





- रतलाम मंडल ने वर्ष 2016 से पूर्व के सभी पीपीओ को संशोधित करने वाला भारतीय रेल का प्रथम मंडल बनने का गौरव अर्जित किया।
- रतलाम मंडल की वर्ष 2018-19 की मेल एक्सप्रेस ट्रेनें की समय पालनता 94.7% रही। 100 से अधिक ट्रेनों का परिचालन करने वाले मंडलों में रतलाम मंडल समय पालनता की दृष्टि से प्रथम स्थान पर था।
- केरल के नागरिकों के लिए जल की अति आवश्यकता के समय रतलाम मंडल 'वॉटर स्पेशल ट्रेन' चलाने वाला भारतीय रेल का प्रथम मंडल था।
- वर्ष 2018-19 के दौरान 771 फील्ड स्टाफ को सुरक्षित ट्रेन परिचालन का अनुकरणीय कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया।



- 3.2 मेगावॉट क्षमता का सोलर पैनल स्थापित किया गया जिसके परिणामस्वरूप 1.1 करोड़ रुपये की वार्षिक बचत हुई।
- चित्तौड़गढ़, रतलाम, इन्दौर एवं दाहोद के आरपीएफ बैरक में सुधार का कार्य पूर्ण किया जा चुका है।



वर्ष 2018-19 के दौरान कुल 21,277 मीट्रिक टन स्क्रैप की बिक्री करके 38.19 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त किया गया, जोकि सर्वोत्तम है।

- रतलाम मंडल वर्ष 2018-19 में टिकट चेकिंग के क्षेत्र में अपवाद रूप से उत्कृष्टता की ओर आगे बढ़ा। वर्ष 2017-18 में अर्जित 11.47 करोड़ रुपये की आय की तुलना में वर्ष 2018-19 में 14.06 करोड़ रुपये अर्जित किए गए, जो गत वर्ष की तुलना में 22.62% अधिक है जिसके लिए सर्वश्रेष्ठ मंडल की टिकट चेकिंग शील्ड प्रदान की गई।



- रतलाम मंडल ने लघु कैटरिंग इकाई के लिए रिकॉर्ड 49 निविदा को सम्पन्न किया। यह अब तक का उत्कृष्ट प्रदर्शन है, जिसके परिणामस्वरूप 4.18 करोड़ रुपये की आय अर्जित हुई जो कि गत वर्ष की तुलना में 39.79% अधिक है।

यात्री सुविधाएँ

यात्री सुविधाओं में निरन्तर विकास हेतु किए गए प्रमुख कार्य

- मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर उपलब्ध कराए गए एस्कलेटर एवं लिफ्ट की सूची

स्टेशन का नाम	एस्कलेटर	लिफ्ट
इन्दौर	06	05
उज्जैन	02	05
रतलाम	03	02
नागदा	–	02
योग	11	14



- इन्दौर, उज्जैन एवं रतलाम में वातानुकूलित प्रतीक्षालय बनाए गए हैं।



- इन्दौर, रतलाम, लिमखेड़ा, चन्देरिया, शंभूपुरा एवं नागदा स्टेशनों पर ऊपरी सड़क पुल एवं ऊपरी सड़क पुल के विस्तारीकरण का कार्य किया गया।
- उज्जैन, रतलाम एवं इन्दौर स्टेशनों पर डिजिटल संग्रहालय की सुविधा उपलब्ध करवाई गई।
- देवास, नीमच, इन्दौर, डॉ. अम्बेडकर नगर, मंदसौर एवं रतलाम स्टेशनों पर नई कोच मार्गदर्शक प्रणाली उपलब्ध करवाई गई।
- इन्दौर स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. 1 एवं 5/6 एवं मंदसौर स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. 2 पर कवर शेड विस्तारित किए गए।
- दिव्यांग यात्रियों की सुविधा के लिए वर्ष 2018-19 के दौरान रिकॉर्ड 1,036 कार्ड जारी किए गए। रियायती कार्ड बनाने से संबंधित सूचना पट्ट मंडल के महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर उपलब्ध करवाए गए।
- दाहोद स्टेशन पर द्वितीय प्रवेश (गोदी रोड साइड), अनारक्षित बुकिंग खिड़की, पार्किंग एवं सर्कुलेटिंग क्षेत्र सुविधा सहित सभी प्लेटफॉर्मों पर ऊपरी पैदल पुल के द्वारा 16 जुलाई, 2018 से सम्पर्कता की सुविधा उपलब्ध करवा दी गई है।
- इन्दौर स्टेशन पर सर्कुलेटिंग क्षेत्र एवं पार्किंग क्षेत्र उन्नत किए गए एवं 100 मीटर ऊंचाई का स्मारक ध्वज स्थापित किया गया।
- रतलाम मंडल के रतलाम, उज्जैन, इन्दौर, चित्तौड़गढ़, डॉ. अम्बेडकर नगर एवं मंदसौर स्टेशन पर स्थानीय लोक चित्रकलाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय चित्रकारों से सम्पर्क कर चित्रकारी कराई गई। इसके अन्तर्गत दीवारों पर ऐतिहासिक स्मारक, संस्कृति एवं शहर के इतिहास का वर्णन किया गया है।

पातालपानी-कालाकुंड धरोहर रेलवे

'पातालपानी-कालाकुंड धरोहर रेलवे' की शुरुआत की गई एवं धरोहर ट्रेन सेवा 25 दिसम्बर, 2018 से प्रारंभ की गई। यह ट्रेन अम्बेडकर नगर से प्रारंभ होकर पातालपानी के रास्ते कालाकुंड तक का सफर तय करती है। रेल मंत्री, रेल राज्य मंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, सदस्य रेलवे बोर्ड, महाप्रबंधक,



प्र.मु.वा.प्र., प्रेस मीडिया एवं पर्यटकों द्वारा मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की गई।

- स्टेशनों के सौन्दर्यीकरण एवं मार्ग में ट्रेनों के ठहराव की व्यवस्था की गई।



- स्क्रैप से निर्मित कलाकृतियाँ पातालपानी, कालाकुंड, तांतिया मामा एवं धरोहर पुल पर स्थापित की गई हैं।
- पातालपानी में पुराने फर्नीचर, पंखे, कलाकृतियों एवं घड़ियों इत्यादि की व्यवस्था कर धरोहर प्रतीक्षालय भवन व्यवस्था की गई।
- तांतिया भील मंदिर हॉल्ट स्टेशन पर 'प्रेक्षक टॉवर' की व्यवस्था की गई।



- कालाकुंड चेक डैम पर नौकायन की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है।
- कालाकुंड में 2 कोचों पर 2 वातानुकूलित रिटायरिंग कक्ष एवं एक 28 सीट वालो डॉरमेट्री की व्यवस्था की गई है।
- कालाकुंड स्टेशन पर कैटरिंग की व्यवस्था की गई है।
- पहाड़ी पर हरियाली के लिए स्प्रिंकलर की व्यवस्था की गई है।
- पुराने रेलवे उपकरण के प्रदर्शन हेतु 'धरोहर संग्रहालय' की स्थापना की गई है।
- सूर्यास्त के दृश्यावलोकन हेतु बेंच, लघु शेड एवं विभिन्न प्रकार के झूले की व्यवस्था की गई है।

कॉफी टेबल बुकलेट

- रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा पातालपानी-कालाकुंड धरोहर रेलवे की कॉफी टेबल बुकलेट का उद्घाटन किया गया एवं उनके द्वारा इसकी सराहना की गई। साथ ही साथ, उनके द्वारा इसको अन्य मंत्रालयों में भी वितरित किया गया।

पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र

- अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड के द्वारा 27 दिसम्बर, 2018 को रतलाम मंडल को सकल कार्य निष्पादन हेतु प्रशस्ति-पत्र दिया गया।
- इन्दौर स्टेशन पर विकास कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए तत्कालीन लोकसभा अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन द्वारा सराहना की गई तथा इस संबंध में प्रशस्ति पत्र भी दिया गया।



- रतलाम मंडल को लगातार दो बार पश्चिम रेलवे का सर्वश्रेष्ठ मंडल का पुरस्कार प्रदान किया गया।
- 7 मार्च, 2019 को दिल्ली में हुए सम्मेलन में रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा सर्वश्रेष्ठ मंडल का पुरस्कार दिया गया।



- राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य के लिए रेल मंत्री स्तर पर रजत पदक से सम्मानित करने हेतु चुना गया है। ■

रतलाम मंडल के पर्यटन स्थल

श्री के. के. सिन्हा
अपर मंडल रेल प्रबंधक, रतलाम मंडल



उज्जैन

रतलाम मंडल में स्थित दर्शनीय स्थल महाकाल की नगरी उज्जैन :

इतिहास – भारत वर्ष के इतिहास में उज्जयिनी (उज्जैन) का एक गौरवपूर्ण स्थान रहा है। यही वह सौभाग्यशाली नगरी है, जहाँ संस्कृत साहित्य के धुरंधर कवियों ने अपनी कृतियों से संस्कृत साहित्य का कोष भरा। भास, कालिदास, शूद्रक और भवभूति की नाट्य कला का प्रदर्शन भी इसी नगरी में हुआ था।



यह भारत के सात प्रसिद्ध एवं पवित्र तीर्थ स्थानों में से एक है तथा शक्ति को 52 पीठों में से एक उज्जयिनी भारत के उन चार प्रमुख तीर्थ स्थानों में से एक है, जहाँ हर बारह वर्ष में कुंभ पड़ता है। यहाँ का कुंभ 'सिंहस्थ' कहलाता है। उज्जैन कई प्रतापी राजाओं की राजधानी रहा। इनमें सम्राट विक्रमादित्य व राजा भोज आदि प्रमुख हैं। मालवा पर मुसलमानों का अधिकार अठारहवीं शताब्दी तक रहा। 1733 ई. में मुहम्मद शाह के समय जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह ने जब वह मालवा के गवर्नर थे, उज्जैन नगर के एक भाग में शिप्रा नदी के निकट एक वेधशाला (जंतर-मंतर) निर्माण कराया जो आज भी विद्यमान है। 1750 ई. तक यह उसका प्रमुख केंद्र रहा।

उज्जैन के दर्शनीय स्थल

महाकालेश्वर : महाकाल मंदिर उज्जयिनी का सबसे पुरातन और ऐतिहासिक मंदिर है। इसकी चर्चा महाभारत और पुराणों तथा संस्कृत काव्यों में भी मिलती है। 'शिवपुराण' के अनुसार, महाकाल का स्थान सम्पूर्ण भारत वर्ष में शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में सर्व प्रधान है और अत्यन्त दर्शनीय है। मंदिर के साथ ही एक कुण्ड है, जिसका जल भक्तगण महाकालेश्वर पर चढ़ाते हैं।



महाकाल से कुछ दूर पर शाक्तों के हरसिद्धि और महाकाली के दो प्राचीन मंदिर हैं। हरसिद्धि मंदिर के पीछे ही अगस्त्येश्वर का प्राचीन मंदिर है। अनुमानत: यह मंदिर भी महाकाल मंदिर की भांति ही प्राचीन है।

गोपाल मंदिर : नगर के मध्य में पटनी बाजार के निकट महारानी बायजा बाई सिंधिया का बनवाया हुआ भव्य और विशाल गोपाल मंदिर है। मंदिर के अंदर गर्भ गृह के आगे चांदी का द्वार है, जिसमें नीलम लगे हुए हैं। कहा जाता है, यह वही द्वार है जिसे आगरा के किले से आक्रांता गजनी ले गया था और वहाँ से लाकर उसे सिंधिया नरेशों ने इस मंदिर को अर्पण कर दिया था।

सिद्धवट : भैरवगढ़ से पूर्व शिप्रा नदी के तट पर सिद्धवट नामक स्थान है। धार्मिक दृष्टि से यह स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार प्रयाग में अक्षयवट, नासिक में पंचवट, वृंदावन में बंशीवट तथा गया में गयावट का महत्त्व है उसी प्रकार उज्जयिनी में सिद्धवट का महत्त्व है।

कालभैरव – भैरवगढ़, वर्तमान में उज्जयिनी से प्राय: तीन मील दूर शिप्रा नदी के तट पर अवस्थित है। प्राचीन उज्जयिनी यहीं पर बसी हुई थी।

चित्तौड़गढ़

लोक कहावतों में ठीक ही कहा गया है 'गढ़ों में गढ़ चित्तौड़ का बाकी सब गढ़ैया' शौर्य व अस्मिता के प्रतीक इस महादुर्ग के साथ त्याग व बलिदान की अनगिनत गाथाएँ जुड़ी हैं और उससे जुड़ा है एक जीवंत इतिहास।

स्वाभिमान व आन-बान-शान के प्रतीक इस गढ़ में महलों, स्तम्भों, छतरियों, तालाबों, बाजारों, बावड़ियों एवं दुर्ग के परकोटे के रूप में विद्यमान बुर्जों समेत अनेक इमारतें आजादी के दीवानों के लिए प्रकाशपुंज व प्रेरणा स्रोत रही हैं।

यह दुर्ग चित्तौड़ या चित्रकोट मेवाड़ की राजधानी होने के साथ-साथ सातवीं से सोलहवीं सदी के मध्य राजपूत सत्ता का मुख्य केन्द्र रहा। इस किले का निर्माण मोरी वंश के राजा चित्रांगद मोरी ने सातवीं सदी में कराया। अपने लम्बे इतिहास में यह दुर्ग तीन बार आक्रांत हुआ। 1303 में अलाउद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर चढ़ाई की तो सन् 1535 में मुगल शासक सम्राट् अकबर ने इसे आक्रांत किया। तीनों युद्धों में जौहर हुए, जिसमें हजारों महिलाओं व बच्चों ने स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया। अलाउद्दीन खिलजी के समय तत्कालीन महारानी पद्मावती ने जौहर किया। अपने शौर्य व वीरता से बप्पारावल, खुमाण, हम्मीर, लाखा, मोकल चूड़ां सांगा कुम्भा, प्रताप, गोरा, बादल, जयमल व पत्ता ने इसे आन बान व शान दी, वहीं भक्ति की मिसाल कायम करने वाली पन्नौधाय, जिन्होंने मेवाड़ के राजवंश के उत्तराधिकारी महाराणा उदयसिंह को बनवीर से बचाने के लिए अपने लाड़ले पुत्र चन्दन का बलिदान दिया।



चित्तौड़गढ़ का किला

विजय स्तम्भ - महाराणा कुंभा ने मालवा के सुल्तान पर विजय प्राप्त की थी। इसकी स्मृति में इस भव्य स्तम्भ का निर्माण सन् 1448 से 1458 के बीच कराया गया। विष्णु को समर्पित यह स्तम्भ नौ मंजिला है।

कीर्ति स्तम्भ - प्रथम जैन तीर्थकंर भगवान आदिनाथ को समर्पित इस भव्य स्तम्भ का निर्माण बघेरवाल सम्प्रदाय के श्रेष्ठ जीजा एवं पुण्यसिंह ने विक्रम संवत् 1357 में करवाया 25.5 मीटर ऊँचा (75 फीट) यह स्तम्भ सात मंजिलों में विभक्त है।

पद्मिनी महल - तालाब के उसी हिस्से में अवस्थित इस खूबसूरत इमारत का मेवाड़ के इतिहास में विशेष महत्त्व रहा है। इसी महल के दक्षिण भाग में स्थित कमरे के शीशे से रानी पद्मिनी के सौन्दर्य की झलक अलाउद्दीन खिलजी को दिखाई गई थी, जिसे देखकर खिलजी ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।



इंदौर

इंदौर प्राचीन ऐतिहासिक और औद्योगिक नगरी है। यह मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी और 'मिनी मुंबई' के रूप में भी जानी जाती है। इंदौर होल्कर राजवंश की राजधानी रही है। देवी अहिल्या बाई होल्कर वंश की महारानी के रूप में जानी जाती हैं। वे न्यायप्रिय, धार्मिक प्रवृत्ति की महिला रहीं। अहिल्या बाई ने भारत के कई तीर्थस्थलों पर घाटों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया। इंदौर में प्रसिद्ध राजवाड़ा, लालबाग, खजराना मंदिर, कांच मंदिर, गोम्मटगिरी जैन मंदिर तथा कृष्णपुरा की छत्रियाँ प्रमुख प्रर्यटन स्थल हैं जिसे देखने लाखों प्रर्यटक आते हैं।

इदौर कपड़ा मिलों के लिए मशहूर था। यहाँ से पूरे विश्व में कपड़े का व्यापार होता था। इंदौर भारत का एक मात्र शहर है जहाँ भारतीय प्रबंधन संस्थान तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दोनों स्थापित हैं। इंदौर में प्रतिष्ठित देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय सहित कई निजी एवं शासकीय इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेज स्थापित हैं। इंदौर में राजारामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र स्थापित किया गया है जो परमाणु उर्जा विभाग के अधीन अनुसंधान एवं विकास का प्रतिष्ठित केंन्द्र है।



महेश्वर

इंदौर से 90 किमी की दूरी पर नर्मदा नदी के किनारे पर बसे इस खूबसूरत पर्यटन स्थल को म.प्र. शासन द्वारा 'पवित्र नगरी' का दर्जा प्राप्त है। अपने आप में कला, धार्मिक,

सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्त्व को समेटे यह शहर लगभग 2,500 वर्ष पुराना है। मूलत: यह 'देवी अहिल्या' के कुशल शासनकाल और उन्हीं के कार्यकाल (1764-1795) में हैदराबादी बुनकरों द्वारा बनाना शुरू की गई 'महेश्वरी साड़ी' के लिए आज देश- विदेश में जाना जा रहा हैं। अपने धार्मिक महत्त्व में यह शहर काशी के समान भगवान शिव की नगरी है। ऐतिहासिक महत्त्व में यह शहर भारतीय संस्कृति में स्थान रखने वाले राजा महिष्मान, राजा सहस्त्रबाहु (जिन्होंने रावण को बंदी बनाया था) जैसे राजाओं और वीर पुरुषों की राजधानी रहा है। बाद में होलकर वंश के कार्यकाल में इसे प्रमुखता प्राप्त हुई।

मांडू

मांडू एक प्राचीन ऐतिहासिक शहर है। यह राजा भोज परमार कालीन राजाओं तथा मुगल बादशाह बाज बहादुर के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ के खण्डहर उस समय के शासकों की विशाल व समृद्ध विरासत व शानो-शौकत से रु-ब-रु करवाते हैं। हरियाली की खूबसूरत चादर ओढ़े मांडू विदेशी पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। मांडू को माँडवगढ़ के नाम से जाना जाता है। यह विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला पर लगभग 2,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। मांडू में रानी रूपमती का महल, हिंडोला महल, जहाज महल, जामा मस्जिद अशरफी महल व जैन भगवान सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा है, जिससे शहर की राजसी शान-शौकत नजर आती है। चर्चित सुन्दर महल है जहाज महल, जो सन् 1469 से 1500 ई. के मध्य बनाया गया था।

डॉ. अम्बेडकर नगर (महू)

भीम जन्मभूमि मध्य प्रदेश के डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) में भीमराव अम्बेडकर की जन्मस्थली स्मारक स्थित है। अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को एक सैन्य छावनी महू के काली पलटन इलाके में हुआ था। यहाँ मध्य प्रदेश सरकार ने उनकी जन्मस्थली पर एक भव्य स्मारक बनाया है, जिसे 'भीम जन्मभूमि' नाम दिया गया है।

महू के साथ लगे हुए 2 स्टेशन पातालपानी और कालाकुंड पर्यटन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण स्टेशन हैं। इन स्टेशनों के आसपास प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छटा के दर्शन पर्यटकों को होते हैं। कालाकुंड में बहुत सुंदर झरना है जो बारिश के मौसम में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

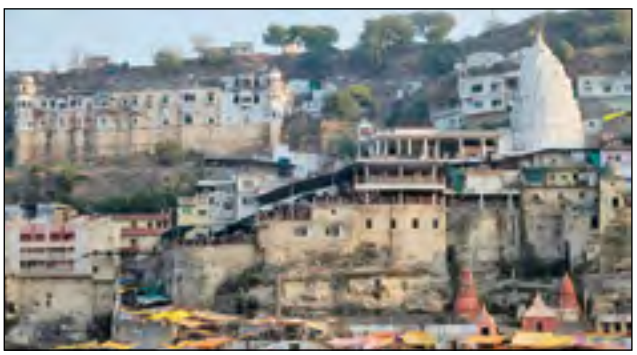
महू-पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज लाइन रेलवे का बड़ा प्रयास है जो क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देगी और रेलवे की प्राचीन विरासत को भी संजोकर रखेगी। रतलाम मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री आर.एन. सुनकर ने इस हेरिटेज लाइन को अल्प समय में तैयार कर यातायात के लिए खोल दिया है। पातालपानी से कालाकुंड के बीच के प्राकृतिक सौंदर्य को जीवित रखने के लिए प्रयास किया गया है।

रेलवे के इस ट्रैक को हेरिटेज बनाने से इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य को बचाने के लिए सरकार और संस्थाएं सक्रिय हो गई हैं। महू रेलवे की दृष्टि से भी प्राचीन ऐतिहासिक स्टेशन रहा है। सैनिक छावनी भी भारत के सामरिक महत्त्व का केंद्र है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से महू पीथमपुर औद्योगिक केंद्र तथा इंदौर आधुनिक महानगर है। इसलिए आने वाले समय में महू देश का बहुत महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल बनने जा रहा है।



ओंकारेश्वर

रतलाम मंडल के इंदौर-खंडवा खंड पर स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यहाँ नर्मदा नदी के किनारे बारह ज्योतिर्लिंगों में एक ममलेश्वर महादेव का मंदिर है। यहाँ वर्ष भर लाखों श्रद्धालु आते है। ■





रेलपथ अनुरक्षण हेतु मूलभूत सुविधाओं का विकास



श्री योगेश कुमार शर्मा
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय), रतलाम मंडल

रतलाम पश्चिम रेलवे का एक महत्त्वपूर्ण मंडल है। यह भारतीय रेल के पश्चिम जोन के अंतर्गत आता है, जो तीन राज्यों गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, में सेवा प्रदान करता है। मंडल का प्रमुख भाग मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में आता है। रतलाम मंडल में 227.150 किमी मुम्बई से नई दिल्ली राजधानी मार्ग का हिस्सा है। मंडल में ब्रॉड गेज मार्ग पर उज्जैन, इन्दौर, और चित्तौड़गढ़ जैसे महत्त्वपूर्ण शहर शामिल हैं। मंडल में ब्रॉड गेज मार्ग 921.812 रूट किमी, (1804.643 ट्रैक किमी) एवं मीटर गेज मार्ग 63.74 रूट किमी, (91.87 ट्रैक किमी) है। मंडल में कर्मचारियों के लिए कुल क्वार्टर की संख्या 10597 है, जिसमें से टाइप-I के 6397 क्वार्टर, टाइप-II के 3443 क्वार्टर, टाइप-III के 398 क्वार्टर, टाइप -IV के 337 क्वार्टर तथा टाइप-V के 22 क्वार्टर हैं। मंडल में ब्रॉड गेज लाइन पर स्टेशनों की संख्या 122 तथा मीटरगेज लाइन पर स्टेशनों की संख्या 13 है। रतलाम मंडल में कुल 2241 पुल है, जिनमें ब्रॉड ग्रेज लाइन पर महत्त्वपूर्ण पुलों की संख्या 28, मेजर पुलों की संख्या 189 तथा छोटे पुलों की संख्या 1,606 है एवं मीटर गेज लाइन पर महत्त्वपूर्ण पुलों की संख्या 5, मेजर पुलों की संख्या 24 तथा छोटे पुलों की संख्या 389 है।

इंजीनियरिंग विभाग की प्रमुख उपलब्धियाँ

कम्पलीट ट्रैक रिन्यूअल : इंदौर-उज्जैन खंड सिंगल लाइन है, जहां पर दिन के समय ट्रेनों का संचालन अधिक होने के कारण ट्रैक अनुरक्षण ब्लॉक दिन में करना संभव नहीं है। इस खंड का ट्रैक 52 केजी स्लीपर एवं 52 केजी रेल का था। पी.क्यू.आर.एस. मशीन द्वारा रात्रि में 3-3 घंटे के इंजीनियरिंग ब्लॉक लेकर ट्रैक को 60 केजी स्लीपर एवं 60 केजी रेल से बदला गया। पी.क्यू.आर.एस. मशीन से 45 किमी ट्रैक को 13 महीनों में बदला गया। इस कार्य के पूर्ण होने से इस वर्ष खंड में एक भी रेल फ्रैक्चर नहीं हुआ तथा गाड़ी परिचालन सुरक्षित ढंग से किया जाना संभव हो सका।



फार्मेशन ट्रीटमेंट : मंडल के रतलाम-नागदा एवं मक्सी-भोपाल के कुछ खंडों में काली मिट्टी का फॉर्मेशन होने के कारण, ट्रैक के पैरामीटर बहुत जल्दी खराब हो जाते थे एवं अत्यधिक रख-रखाव की जरूरत पड़ती थी। ऐसी आइडेंटीफाइड लोकेशन पर जियोग्रिड एवं नानवूवन जियो टेक्सटाइल को बीसीएम मशीन द्वारा फॉरमेंशन पर बिछाया गया। इस विधि द्वारा इस वर्ष कुल 42.42 किमी फॉरमेंशन ट्रीटमेंट किया गया। इस कार्य से ट्रैक के पैरामीटर्स में सुधार आया एवं रख-रखाव आसान हुआ।



टी-28 मशीन से टर्न आउट्स की डीप स्क्रीनिंग : मंडल में टी-28 एवं जेसीबी मशीन के द्वारा द्वारा टर्न आउट्स की डीप स्क्रीनिंग का कार्य प्रायोगिक तौर पर पश्चिम रेलवे में पहली बार शुरू किया गया। कार्य के संतोषजनक परिणाम के आधार पर इस वर्ष कुल 29 टर्न आउटस की डीप स्क्रीनिंग करने का कार्य सम्पन्न किया गया, साथ ही 35 क्रॉस ओवर्स के बेड लेआउट को ठीक किए जाने का कार्य भी किया गया, जिससे संरक्षा एवं सुरक्षा में वृद्धि हुई।



मेगा ब्लॉक के दौरान सम्पन्न कार्य : मंडल द्वारा ब्रिज री-बिल्डिंग, लिमिटेड हाइट सबवे निर्माण, ब्रिज रिगर्डरिंग, आरओबी निर्माण, T-28 मशीन द्वारा डीप स्क्रीनिंग इत्यादि कार्य मेगा ब्लॉक में किए गए। इन मेगा ब्लॉक के शैडो में इंजीनियरिंग विभाग, एस. एण्ड टी. विभाग एवं टीआरडी विभाग द्वारा अनुरक्षण कार्य किया गया। जिसमें इंजीनियरिंग विभाग द्वारा पीक्यूआरएस द्वारा सीटीआर, टीटीआर, टीएफआर मशीन से टैम्पिंग एवं कर्व रीएलाएमेंट, एसईजे रिन्यूअल, वेल्डिंग इत्यादि कार्य सम्पन्न किए गए। मंडल में अब तक 31 मेगा ब्लॉक के दौरान लगभग 407 घंटे के अनुरक्षण कार्य इंजीनियरिंग विभाग द्वारा किए गए।

स्थायी गति प्रतिबन्धों को हटाया जाना : मंडल में कुल 13 स्थायी गति प्रतिबन्धों को गोलाई री-एलाएमेंट करके हटाया गया है एवं 3 अन्य स्थायी गति प्रतिबन्धों को शिथिल किया गया है जिससे गाड़ियों की गति को बढ़ाया जा सका है।

रतलाम-फतेहाबाद-लक्ष्मीबाई नगर खंड में मेन लाइन की गति का बढ़ाया जाना : मंडल के रतलाम -फतेहाबाद खंड में मेन लाइन की गति 90 किमी घण्टा से बढ़ाकर 110 किमी प्रति घण्टा तथा फतेहाबाद-लक्ष्मीबाई नगर खंड में मेन लाइन की गति 100 किमी प्रति घण्टा से बढ़ाकर 110 किमी प्रति घण्टा कर दी गई है।

टर्न-आउट्स एवं रनिंगलूप लाइनों की गति का बढ़ाया जाना

इन्दौर-डॉ. अम्बेडकर नगर खंड : मंडल के इन्दौर-डॉ. अम्बेडकर नगर खंड में राजेन्द्र नगर स्टेशन के टर्न आउट्स एवं रनिंगलूप लाइनों 1, 2, 3 तथा 4 और राउ स्टेशन के टर्न-आउट्स एवं रनिंग लूप लाइनों 1, 2, 3 तथा 4 की गति 15 किमी प्रति घंटा से बढ़ाकर 30 किमी प्रति घंटा कर दी गई है।

उज्जैन-भोपाल खंड : मंडल के उज्जैन-भोपाल खंड में पिंग्लेश्वर स्टेशन के टर्न आउट्स एवं रनिंग लूप लाइन 1, ताजपुर स्टेशन के टर्न आउट्स एवं रनिंगलूप लाइन 1 तथा जबडी स्टेशन के टर्न आउट्स एवं रनिंगलूप लाइनों 1 और 4 की गति 15 किमी प्रति घंटा से बढ़ाकर 30 किमी प्रति घंटा कर दी गई है।

लूप लाइन को एस.डब्ल्यू.आर. से एल.डब्ल्यू.आर. में बदलना : मंडल के तीन लूप लाइन्स को एस.डब्ल्यू.आर. ट्रैक से एल.डब्ल्यू.आर. ट्रैक में बदलने का कार्य सम्पन्न किया जा चुका है।

समपार फाटक के स्थान पर लिमिटेड हाइट सबवे का निर्माण : मंडल में 21 लिमिटेड हाइट सबवे पर बॉक्स सेगमेंट डालने का कार्य किया गया एवं अन्य सहायक कार्य प्रगति पर हैं। समपार फाटक के स्थान पर लिमिटेड हाइट सबवे के निर्माण से ट्रेनों की गति एवं सुरक्षा में बढ़ोत्तरी संभव हो सकी।

गोधरा-रतलाम में दाहोद रेंटिया खंड के मध्य रोड ओवर ब्रिज का निर्माण : गोधरा-रतलाम खंड के दाहोद-रेंटिया



ब्लॉक खंड में किमी 536/29-537/1 के मध्य नेशनल हाईवे क्रमांक 113 पर रोड ओवर ब्रिज का निर्माण सम्पन्न कराया गया।

उज्जैन-भोपाल खंड के मक्सी यार्ड में आर. ओ. बी. पर गर्डर लॉन्च करना

- 5 जनवरी, 2019 को मक्सी यार्ड में 04 घंटे के मेगा ब्लॉक के दौरान आर. ओ. बी. पर 05 गर्डर लॉन्च किए जाने का कार्य सम्पन्न किया गया।
- 10 जनवरी, 2019 को मक्सी यार्ड में 4 घंटे के मेगा ब्लॉक के दौरान आर.ओ.बी. पर 5 गर्डर लॉन्च किए जाने का कार्य सम्पन्न किया गया।



पातालपानी-कालाकुण्ड खंड को हेरिटेज लाइन के रूप में विकसित किया गया है। इस प्रकार पश्चिम रेलवे की प्रथम हेरीटेज लाइन की शुरुआत मंडल द्वारा की गई।

रतलाम-फतेहाबाद-लक्ष्मीबाई नगर खंड CC+8+2 में परिवर्तित किया गया है।

- बॉगरोद स्टेशन पर लाइन नं. 3 का निर्माण किया गया।
- मंडल में 4 पिट लाइन (2 इन्दौर स्टेशन एवं 2 डॉ. अम्बेडकर नगर स्टेशन) का निर्माण किया गया है।
- मंडल के रतलाम-रतलाम ई के मध्य अप यार्ड होते हुए तीसरी लाइन डाली गई, जिससे पैसेंजर तथा गुड्स ट्रेनों का संचालन इस लाइन से शुरू हो गया।
- **रिलिन्ड्ड पी.आर.सी. स्लीपर के द्वारा रोड निर्माण :** मंडल के विक्रम नगर एवं देवास स्टेशनों के गुड्स शेड की कच्ची अप्रोच रोड को पी.आर.सी. स्लीपर के द्वारा बनाया गया है एवं सिहोर स्टेशन के गुड्स शेड की कच्ची अप्रोच रोड पर कार्य प्रगति पर है। इस प्रकार कांक्रीट सर्फेस से लगभग आधे खर्च में गुड्स शेड में पक्की सरफेस बनाई गई है। ■

नवोन्मेष के पहिये पर गतिमान मंडल रेल



श्री विपुल सिंघल
वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक, रतलाम मंडल

पश्चिम रेलवे के छः मण्डलों में से एक मंडल रतलाम मंडल है। सन् 1952 में स्थापित यह मंडल गुजरात, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश राज्यों के भौगोलिक क्षेत्र में है। लगभग 1,051 रूट किमी में व्याप्त यह मंडल परिचालन के परिदृश्य से एक महत्त्वपूर्ण मंडल है एवं विविधताओं से परिपूर्ण है, जहां एक ओर यह महत्त्वपूर्ण एवं व्यस्ततम मुम्बई-दिल्ली भाग का एक हिस्सा है, वहीं पर्यटन, मालगाड़ियों के मार्ग का भी महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।



रतलाम मंडल में कुल स्टेशनों की संख्या 120 है, जिसमें से कई स्टेशन दुर्गम एवं पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित हैं। साथ ही, रेल मार्ग में 1-40 मी. तक कई गहरे उतार-चढ़ाव (ग्रेडियंट) भी हैं।

गत वर्ष में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाने योग्य पातालपानी से कालाकुण्ड के मध्य 25 दिसम्बर, 2018 से हेरिटेज ट्रेन का संचालन शुरू हुआ।

मंडल के दैनिक औसत परिचालन में 178 मेल/एक्सप्रेस/पैसेंजर एवं 147 मालगाड़ियों का आदान प्रदान है। वित्तीय वर्ष 2018-19 आय (पैसेंजर/मालगाड़ी) की दृष्टि से सर्वाधिक रहा है तथा लक्ष्य से अधिक रहा है।

मालभाड़ा

रतलाम मंडल पश्चिम रेलवे के मालभाड़ा-लदान, ढुलाई की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण मंडल है। इसमें विविध माल का लदान एवं उतराव होता है। इसमें लदान की दृष्टि से सीमेंट, डीओसी, पेट्रोलियम, खाद्य पदार्थ, कंटेनर, मोटर व्हीकल, लालमिट्टी, स्टील आदि प्रमुख हैं, वहीं उतराव में कोयला, पेट्रोलियम, उर्वरक, खाद्य प्रदार्थ, स्टील, कंटेनर, सीमेंट इत्यादि प्रमुख हैं। मंडल का वर्ष मार्च, 2019 में प्रतिदिन औसत लदान 836 वैगन रहा है, जो कि किसी एक महीने में अब तक का सर्वाधिक है। लदान से हुई आय कि दृष्टि से वर्ष 2018-19 अब तक का सर्वाधिक रहा है। साथ ही, लदान में नवाचार के रूप डीबीकेएम रैक, जो कि आर्मी के लिए उपयोग में लिया जाता है, को सीमेंट लदान में उपयोग किया गया, जिससे की कम रैक सप्लाई में भी लदान होता रहा एवं कम दूरी का यातायात भी बढ़ा। मंडल में मालगोदाम, निजी साईडिंग एवं पीएफटी का मिश्रण है।

मंडल में रेड हॉक (लाल मिट्टी) लदान काफी समय बाद पुनः प्रारम्भ हुआ है तथा मार्च, 2019 में अब तक का सर्वाधिक लदान हुआ। इसी तरह क्लींकर एवं कंटेनर यातायात में 9.5% की वृद्धि हुई है, साथ ही डीओसी का लदान भी 30% तक बढ़ा है। वर्ष 2018-19 में यातायात के कई बिन्दुओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। यातायात में वृद्धि के बावजूद दिए गए समस्त ब्लॉक समय में 13% की वृद्धि हुई साथ ही रैकों की समयबद्धता में भी वृद्धि दर्ज की गई।

इसी प्रकार -

1. समस्त ट्रेन इंटरचेंज में 9.5% की वृद्धि
2. मालगाड़ियों की गति में 2% की वृद्धि
3. एसी लोको उपयोगिता में 9.33% की वृद्धि
4. डीजल लोको उपयोगिता में 2.15% की वृद्धि
5. टर्मिलन डिटेनशन में 2% की कमी
6. वैगन टर्न राउण्ड में 6.3% संवर्धन
7. अब तक का सर्वाधिक क्रेक संचालन (रतलाम-भोपाल) 302 मार्च, 2019 में रहा। साथ ही अन्य महीनों में भी क्रेक संचालन सर्वाधिक रहा है, जिससे क्रू की बचत के साथ गाड़ियों की गति में इजाफा हुआ।

समयबद्धता

वित्तीय वर्ष 2018-19 मेल/पैसेंजर ट्रेनों के समयबद्ध परिचालन की दृष्टि से काफी उपलब्धियों भरा रहा। गत वर्ष में मैल/पैसेंजर गाड़ियों की समयबद्धता 95% रही, जो कि लक्ष्य से 6% अधिक रही। 100 से अधिक गाड़ियों के संचलन के साथ यह समयबद्धता भारतीय रेल के समस्त मण्डलों में प्रथम रही।

गत वर्ष में विभिन्न ट्रेनों में 358 अतिरिक्त कोच को लगाया गया, जिससे यात्री वाहक क्षमता में वृद्धि हुई है। इनके अतिरिक्त 9 विशेष ट्रेनों का संचालन एवं 7 ट्रेनों के गंतव्य

में वृद्धि एवं 26 एफटीआर ट्रेनों का संचालन, 28 नई ट्रेनों का संचालन, 14 ट्रेनों को ठहराव प्रदान करना, 2 ट्रेनों का परम्परागत से एलएचबी कोच में बदलाव से पैसेंजर ट्रेनों से आय भी अब तक की सर्वाधिक गत वर्ष में रही।

ढांचागत सुधार/बदलाव

गत वर्ष 50 परिचालन बाधाओं (ऑपरेटिंग कॉन्स्ट्रेन्ट्स) को हटाया गया जिसमें विशेष तौर पर बीटीपीएन रैक के प्लेसमेंट/ड्राउन आउट के समय संरक्षा के मद्देनजर बीआरएन/बीएफआर वैगन को अटैच किया जाता था। जिसमें प्लेसमेंट/ड्राउन आउट में अतिरिक्त समय लगता था।

बीटीपीएन रैक के प्लेसमेंट एवं ड्राउन आउट में अत्यधिक विलम्ब होता था। क्रू का भी अनावश्यक विलम्ब होता था।



नवाचार के रूप में ग्लूड ज्वाइंट का ईजाद किया गया, ओएचई में कुछ बदलाव के साथ स्टॉप बोर्ड लगाया गया, इससे अतिरिक्त बीपीएन/बीएफआर वैगन लगाने की बाधा को दूर किया गया। इस तरह का नवाचार प्रथम बार रतलाम मंडल में हुआ है। यह मांगलियागांव, बाकनियाभौरी स्टेशन पर सम्पादित हुआ।

रतलाम मंडल के परिचालन विभाग के इस नवाचार को उच्चतम स्तर एवं दिल्ली में हुए विभिन्न सम्मेलनों में सराहा गया तथा इसका अन्य मण्डलों में भी अनुसरण किया जा रहा है।

इसी प्रकार रतलाम स्टेशन पर प्लेटफॉर्म 1 व 2 के मध्य लाइन को पैसेंजर फिट दिया गया। इससे नागदा एवं चित्तौड़गढ़ की तरफ से यात्री गाड़ियों का आवागमन सुगम हुआ साथ ही प्लेटफॉर्म संख्या 5 व 6 के यातायात को हल्का किया गया।

इसी प्रकार ईपीबी ब्लॉक के दौरान सम्पूर्ण नागदा स्टेशन बाधित होता था। इससे छुटकारे के लिए पृथक्कीकरण प्रदान किया गया, जिससे नागदा स्टेशन ईपीबी ब्लॉक के दौरान समानान्तर यातायात के लिए सुगम हुआ। नीमच तथा एसजेपी मालगोदाम से भी बाधाएं हटाई गईं।

मंडल में मालगोदाम की सतह को सुधारने के लिए निर्मुक्त (रीलीज्ड पीएससी स्लीपर्स) का उपयोग लिया गया। इस निर्मुक्त पीएससी स्लीपर का उपयोग हुआ एवं माल गोदाम के सतह की स्थिति काफी अच्छी हो गई, इससे देवास, चन्देरिया व विक्रमनगर जैसे कई मालगोदामों को सुधारा गया।

रतलाम-लक्ष्मीबाई नगर खंड, जो कि पूर्व में सीसी+6+2 रूट था, को ट्रैक दुरुस्त करवा कर सीसी+8+2 किया गया। डेमू की अधिकतम गति को 90 केएमपीएच से 100 केएमपीएच किया गया।

चित्तौड़गढ़-शम्भूपुरा दोहरीकरण

मंडल में दोहरीकरण का कार्य चित्तौड़गढ़, ओरडी एवं शम्भुपुरा में कई दिनों तक चला एवं नॉन इंटरलॉकिंग परिचालन एवं ब्लॉक प्रबन्धन की सहायता से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस से समयबद्धता में सुधार होगा, साथ ही माल लदान के पश्चात् गंतव्य तक पहुँचने में आसानी होगी।

विद्युतीकरण

बेहतर परिचालन प्रबन्धन के साथ समय-समय पर आवश्यकतानुसार ब्लॉक दिए गए, जिसमें रतलाम-फतेहाबाद एवं रतलाम धोसवास खंड में सीआरएस सम्पन्न हुआ। साथ ही, चित्तौड़गढ, बेराज, चन्देरिया का विद्युतीकरण सम्पन्न हुआ।

नवाचार

रतलाम मंडल वित्तीय वर्ष 2018-19 नवाचारों की दृष्टि से भी आगे रहा। ट्रेन गार्डों को लाइन बॉक्स से छुटकारे का कार्य भी प्रगति पर है। इसकी स्वीकृति जोनल मुख्यालय से मिल चुकी है। जल्द ही ट्रेन के गार्डों को लाइन बाक्स विहीन संचालन का सुअवसर मिलेगा।

अभी ट्रेन/गाड़ियों को स्टेबल करने में भारी-भरकम लोहे की चेन का उपयोग किया जाता है। अब उसके स्थान पर काफी हल्की एवं मजबूत लोहे का तार तैयार करवा कर आरडीएसओ भिजवा दिया गया है। यदि यह जल्दी ही स्वीकृत हो जाती है तो भारतीय रेल को भारी-भरकम लोहे की चेन से मुक्ति मिलेगी एवं उपयुक्त तार का आविष्कार हो सकेगा। ■



एक नई सोच, नई दिशा



श्री रवि रंजन कुमार
वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक, रतलाम मंडल

रतलाम मंडल पश्चिम रेलवे की धड़कन जो देश की राजधानी दिल्ली एवं मुख्यालय मुम्बई के बीच आधार स्तम्भ की तरह स्थित है, जहां मंडल पर मालवा-निमाड़ अंचल एवं राजस्थानी संस्कृति की एक मिली-जुली पहचान है।

वित्त विभाग रेलवे का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। यह रेलवे के कार्यों की समीक्षा एवं उनके भुगतान संबंधी त्रुटियों का निवारण कर केवल शुद्ध रकमों का भुगतान करता है।

कर्मचारी की नियुक्ति के समय लेखा विभाग द्वारा कर्मचारी को एक विशिष्ट संख्या प्रदान की जाती है जो कि रेलवे में उसकी पहचान होती है तथा कर्मचारी की नियुक्ति से लेकर उसके अंतिम निपटारा होने तक भुगतान संबंधी एवं उसकी सेवा की पहचान इसी विशिष्ट संख्या द्वारा होती है।

वित्त विभाग का कार्य रेलवे के दिन प्रतिदिन के खर्च को कम कर उसकी अधिक उपयुक्तता सिद्ध करना है एवं साथ ही समय-समय पर अन्य विभागों के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में मदद करना है।

इसी तारतम्य में अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए वर्ष 2018-19 में वित्त विभाग द्वारा कई सराहनीय कार्य किए गए जिसके लिए वित्त विभाग के अधिकारियों एवं उनके अधीनस्थ कर्मचारीयों को पुरस्कृत किया गया। वर्ष के दौरान किए गए कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है:

- रतलाम मंडल द्वारा भारतीय रेलवे में सर्वप्रथम सभी पीपीओस का निपटारा सातवें वेतन आयोग के अनुसार किया गया, जिसके लिए मंडल रेल प्रबंधक एवं वित्त विभाग के चार अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया।
- रतलाम मंडल वर्ष 2018-19 में बोनस का सबसे पहले भुगतान करने वाला मंडल बना।
- राज्यों को दिया जाने वाला वृत्ति कर एमपी टैक्स ऑनलाइन चालू किया गया।
- वित्त विभाग के द्वारा पास/स्क्रुटिनी किए जाने वाले प्रकरणों में पिछले वित्तीय वर्ष में 28.32 करोड़ की बचत की गई।
- आंतरिक जांच के दौरान पाई गई त्रुटियों में 1.22 करोड़ की बचत की गई।
- रतलाम मंडल पर प्राप्त होने वाली विविध आय से 54.17 करोड़ की वसूली की गई।

उपरोक्त के साथ ही वित्त विभाग के द्वारा कम्प्यूटर के क्षेत्र में भी विशेष उपलब्धियां अर्जित की गई जो निम्न प्रकार है:

- पीबीजी. माड्युल को आईपास पर सफलतापूर्वक लागू किया गया।
- जेम्स (जीईएमएस) माड्युल को सफलतापूर्वक लागू किया गया एवं उससे संबंधित सभी लोकल बिलों की खरीद एवं भुगतान संबंधित प्रक्रिया चालु की गई।
- सभी कर्मचारियों की सेवा पंजिका, व्यक्तिगत मिसल एवं उनका अवकाश खाता स्कैन कर कम्प्यूटर पर अपलोड किए गए।
- वेतन बिलों संबंधित वाउचरों को discontinue कर उन्हें कम्प्यूटर पर ही ऑनलाइन पास किया जा रहा है।
- बाहरी/सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी संस्थाओं से ई-पेमेंट के माध्यम से भुगतान किया जा रहा है।
- रेलवे आवास किराया, विद्युत प्रभार बिल एवं अन्य मदों की वसूली आईपास के माध्यम से की जा रही है।
- स्टॉक एवं नॉन स्टॉक मदों की आनलाईन विधिक्षा शुरू की गई।
- अप्रेंटिस बिलों को बनाने एवं उन्हें पास करने का कार्य आईपास के माध्यम से किया जा रहा है।
- सभी कर्मचारियों को प्रोजेक्ट सक्षम-II के तहत प्रशिक्षित किया गया।
- सभी कर्मचारियों को उनके कार्यस्थल पर कार्य सुचारू रूप से करने के लिए बेहतर संचार व्यवस्था प्रदान की गई।
- बाहरी पार्टियों के बकाया बिल इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से पास किए जाते है।

साथ ही कर्मचारियों में कार्य के प्रति स्वच्छन्द एवं सौहार्द का वातावरण रहें इसके लिए टू-वे कम्यूनिकेशन शुरू किया गया एवं कर्मचारियों की समस्याओं को व्यक्तिगत रूप से सुनकर उनसे संबंधित समस्याओं का निराकरण किया गया।

लेखा विभाग में एक उच्चतम स्तर का माड्यूलर ऑफिस तैयार किया गया है जिसमें अत्याधुनिक ऑफिस सेट-अप किया गया है।

रेलवे बोर्ड एवं प्रधान कार्यालय से समय-समय पर जारी परिपत्रों एवं नियमों को मंडल लेखा कार्यालय पर समयानुसार पारित किया जाता है एवं कर्मचारियों को समय पर सुविधा देने हेतु कर्मचारी चार्टर का अनुपालन किया जाता है।

पश्चिम रेलवे एवं रेलवे बोर्ड द्वारा वरि.म.वि.प्रब. श्री रवि रंजन कुमार को उनके गुणवत्तापूर्वक कार्यों के लिए महाप्रबंधक अवॉर्ड एवं रेलवे बोर्ड पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। लेखा विभाग का रेलवे के विकास में निरन्तर योगदान रहा है। पिछले पांच वर्षों में रतलाम लेखा विभाग तीन बार महाप्रबंधक की दक्षता शील्ड भी प्राप्त कर चुका है। ■

रेल आय एवं यात्री सेवा के लिए प्रतिबद्ध



श्री सुनील मीणा
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, रतलाम मंडल

पश्चिम रेलवे का रतलाम मंडल उत्तर पश्चिम रेलवे के अजमेर मंडल एवं पश्चिम मध्य रेलवे के कोटा मंडल तथा भोपाल मंडल से जुड़ा हुआ महत्त्वपूर्ण मंडल है। इस मंडल पर कुल 118 यात्री स्टेशन हैं, जिसमें एन.एस.जी. 2 के 2 स्टेशन, एन.एस.जी. 3 के 2 स्टेशन, एन.एस.जी. 4 के 5 स्टेशन, एन.एस.जी. 5 के 16 स्टेशन, एन.एस.जी. 6 के 73 स्टेशन, हॉल्ट ग्रुप 2 के 2 स्टेशन तथा हॉल्ट ग्रुप 3 के 18 स्टेशन सम्मिलित हैं। वर्ष 2018-2019 में रतलाम मंडल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पिछले वर्ष कि तुलना में सभी मदों में अब तक के सर्वश्रेष्ठ आंकड़े प्राप्त किए गए हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है :

(आंकड़े करोड़ रु. में)

	2016-17	2017-18	2018-19
यात्री आय	543.25	574.86	588.01 (सर्वश्रेष्ठ)
माल आय	1155.30	1553.16	1558.10 (सर्वश्रेष्ठ)
सकल आय	1748.05	2176.70	2196.34 (सर्वश्रेष्ठ)
टिकट चेकिंग आय	10.61	11.47	14.21 (सर्वश्रेष्ठ)
कैटरिंग आय	03.09	02.99	4.18 (सर्वश्रेष्ठ)
पार्किंग आय	01.43	01.65	2.03 (सर्वश्रेष्ठ)

यात्री सुविधा कार्य : मंडल पर विभिन्न यात्री सुविधा प्रदान की गई, जिसमें प्रमुखत: इंदौर एवं उज्जैन स्टेशनों पर एस्केलेटर/लिफ्ट तथा वातानुकूलित यात्री प्रतीक्षालय प्रदान किए गए हैं।

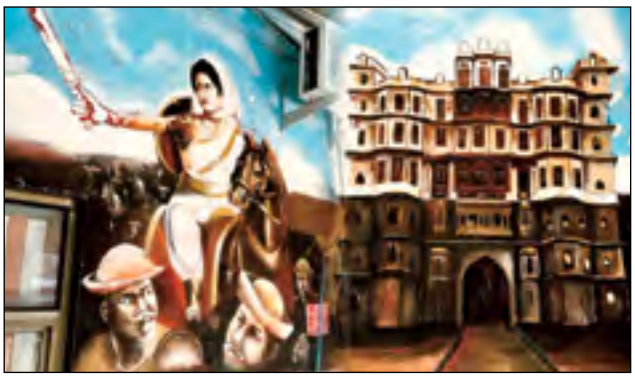
नवीन पैदल ऊपरी पुल एवं वर्तमान पैदल ऊपरी पुलों का विस्तारीकरण इंदौर / रतलाम / दाहोद / लिमखेड़ा / नागदा एवं शंभूपुरा स्टेशनों पर किया गया है।

- प्लेटफॉर्म का विस्तारीकरण लिमखेड़ा / पिपलिया / चंदेरिया/ मेंघनगर/मंदसौर/सीहोर/बेरछा एवं मोरवानी स्टेशनों पर किया गया है।



- 3 'डी' डिजिटल म्यूजियम इंदौर/उज्जैन एवं रतलाम में स्थापित किए गए हैं।
- विभिन्न स्टेशनों पर 13 स्टेशन टिकट बुकिंग एजेंट की नियुक्ति की गई है।
- नवीन कोच गायडेन्स सिस्टम नीमच/मंदसौर/देवास/चित्तौड़गढ़/इंदौर/डॉ. अम्बेडकर नगर एवं रतलाम में स्थापित किए गए हैं।
- कवर शेड का विस्तारीकरण इंदौर एवं मंदसौर में किया गया।
- दाहोद स्टेशन पर पूर्व दिशा से नवीन प्रवेश द्वार का निर्माण किया गया।

कॉरपोरेट सोश्यल रिसपान्सिबिलिटी के अंतर्गत - वॉटर फिल्टरेशन प्लाँट, सेनिटरी पैड वेंडिंग मशीन एवं नष्ट करने की मशीन, वॉटर कूलर, बॉटल क्रशिंग मशीन, उद्घोषणा प्रणाली, वॉल पेंटिंग के द्वारा स्टेशनों का सौंदर्यीकरण आदि का प्रावधान किया गया है, जिससे यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा प्राप्त हुई है।



वॉल पेंटिंग-इंदौर



वॉल पेंटिंग-रतलाम

➔ शेष पृष्ठ 61 पर

रतलाम मंडल में ऊर्जा दक्षता संरक्षण एवं ऊर्जा के गैर पारम्परिक कार्य



श्री ललित सिंह तोमर
वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (पॉवर), रतलाम मंडल

रतलाम मंडल में विद्युत पॉवर विभाग द्वारा ऊर्जा संरक्षण, गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के उपयोग एवं यात्री सुविधा के अंतर्गत विशिष्ट कार्य किए गए हैं।

रतलाम मंडल में कुल 128 स्टेशन हैं, जिनमें से एनएसजी (NSG)-2 श्रेणी के 2 स्टेशन, एनएसजी-3 श्रेणी के 2 स्टेशन, एनएसजी-4 श्रेणी के 5 स्टेशन सम्मिलित हैं। ये सभी मंडल के प्रमुख स्टेशन हैं।



रतलाम मंडल में विद्युत पॉवर विभाग द्वारा ऊर्जा संरक्षण एवं ऊर्जा दक्षता के विशिष्ट कार्यों के अंतर्गत मंडल के सभी रेलवे स्टेशनों, सर्विस बिल्डिंग एवं सभी रेल आवासों में एलईडी लाइट का प्रावधान किया गया है, जिसमें सभी जगह सामान्य लाइटों को एलईडी लाइट से बदलने का कार्य विभिन्न प्रोजेक्ट्स कार्यों द्वारा किया गया है। इनमें से मुख्य प्रोजेक्ट ईईएसएल (एनर्जी इफिशियंसी सर्विसेज लिमिटेड), जो कि भारत सरकार के बिजली मंत्रालय का उपक्रम है, के द्वारा ईएससीओ मॉडल के तहत् कार्य किया गया है। मंडल में एलईडी कन्वर्जन का कार्य मुख्यतः तीन फेज में किया गया, जिसमें प्रथम फेज में सभी स्टेशनों व दूसरे फेज में सभी सर्विस बिल्डिंग तथा तीसरे फेज में सभी रेल आवासों का कार्य किया गया। उक्त प्रोजेक्ट के तहत् एलईडी का विवरण निम्नानुसार है :

मद	कुल एलईडी	अनुमानित वार्षिक विद्युत बचत युनिट
स्टेशन प्रोजेक्ट	12,600	13.32 लाख युनिट
सर्विस बिल्डिंग प्रोजेक्ट	16,700	8.9 लाख युनिट
रेल आवा प्रोजेक्ट	49,500	22.70 लाख युनिट
	कुल	44.92 लाख युनिट

इस प्रकार रतलाम मंडल में विद्युत पॉवर विभाग एलईडी कन्वर्जन कार्य के अंतर्गत कुल 78,800 एलईडी लाइट को बदला गया, जिसके द्वारा लगभग कुल 45 लाख विद्युत यूनिट वार्षिक बचत अनुमानित है। इसके अतिरिक्त सभी परंपरागत अन्य विद्युत उपकरणों, जैसे सीलिंग पंखों तथा एयर कंडीशनर्स को ऊर्जाकुशल उपकरणों से बदला गया, जिससे फेलियर दर में कमी आई व विद्युत ऊर्जा संरक्षण भी हुआ।

- **राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार**

रतलाम मंडल के मंडल चिकित्सालय रतलाम में एलईडी कन्वर्जन, एयर कंडीशनर के बदलने से विभिन्न वर्षों में लगातार विद्युत खपत में कमी दर्ज की गई, जिसके फलस्वरूप विद्युत मंत्रालय भारत सरकार द्वारा मंडल चिकित्सालय, रतलाम को वर्ष-2018 हेतु राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण में सराहनीय कार्य के लिए पुरस्कृत भी किया गया है।



- **अन्य उपलब्धियाँ :** रतलाम मंडल में अभी तक 800 रेल आवासों को विद्युत वियोजन (सेग्रीगेशन) सीधे संबंधित क्षेत्र के विद्युत सप्लाई बोर्ड से किया गया है, जिससे फेलियर व मेंटेनेन्स में बचत होगी।
- मंडल में दो मुख्य कोचिंग डिपो हैं जिनसे 27 गाड़ियाँ संचालित होती हैं एवं उनका प्राथमिक अनुरक्षण किया जाता है। इन गाड़ियों के कुल 410 कोचों की सामान्य लाइटों को एलईडी आधारित लाइटों से बदला गया, जिससे विद्युत ऊर्जा संरक्षण होगा।
- रतलाम मंडल के रतलाम स्टेशन पर मंडल मुख्यालय होने से सबसे बड़ा विद्युत पॉवर सप्लाई नेटवर्क भी यहीं है। रतलाम स्टेशन में स्टेशन सहित मंडल कार्यालय, प्रमुख सर्विस बिल्डिंग, रेलवे कॉलोनी, चिकित्सालय, डीजल शेड

आदि क्षेत्र में विद्युत पॉवर सप्लाई एक ही केन्द्रीयकृत पॉवर हाउस से संचालित होती थी, जिसमें एचटी 11 एचटी सप्लाई रेलवे के खुद के ट्रांसमिशन व डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क, जो कि लगभग 18 किमी ओवरहेड लाइन के द्वारा फैला हुआ था, से परिचालित व वितरित होता था, जिसे समाप्त कर अलग-अलग चार जगह पर सीधे इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड से नए कनेक्शन लेकर संचालित किया जा रहा है। इससे ओवरहेड लाइन का मेन्टेनेंस कार्य भी समाप्त होगा।

- रतलाम मंडल द्वारा वर्ष 2018-19 के अंतर्गत मंडल के सभी रनिंग रूम्स को वातानुकूलित करने के लक्ष्य को प्राप्त किया गया, जिससे सभी रनिंग रूम्स इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, चित्तौड़गढ़, दाहोद व डॉ. अम्बेडकर नगर के रनिंग रूम्स में एयर कंडीशनर लगाए गए हैं। इसके अलावा सभी टीटीई रनिंग रूम्स को भी वातानुकूलित करने का कार्य वर्तमान में प्रगति पर है, जिससे रेलवे के रनिंग स्टाफ लोको पायलट, गार्ड व टीटीई को समुचित सुविधा प्राप्त हो सके व अपना कार्य पूर्ण दक्षता से कर सकें।

- **सौर ऊर्जा**

रतलाम मंडल में RESCO (रिन्युअल एनर्जी सर्विस कम्पनी) मॉडल के तहत् मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर कवर शेड व रूफ टॉप पर 2.7 MW क्षमता के ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर सिस्टम स्थापित किए गए हैं जो कि 5 केडब्ल्यू क्षमता से लेकर 300 KW क्षमता के लगाए गए हैं। इस प्रकार इन सोलर प्रोजेक्ट से वार्षिक 37 लाख विद्युत यूनिट उत्पादन आंकलित है, जिससे रेलवे को 1.2 करोड़ रुपये की वार्षिक बचत होगी।

मंडल में स्थापित प्रमुख सोलर प्लांट निम्नानुसार हैं:-

स्टेशन	क्षमता
रतलाम	752 KW
डॉ.अम्बेडकर नगर	370 KW
उज्जैन	300 KW
इन्दौर	270 KW
शम्भुपुरा	200 KW
चित्तौड़गढ़	100 KW
नीमच	50 KW
नागदा	130 KW

आरईएससीओ (RESCO) मॉडल : इस मॉडल के अंतर्गत सोलर डेवलपर द्वारा स्वयं के खर्चे पर सोलर प्लांट स्थापित कर निश्चित अवधि तक सोलर सिस्टम के संचालन व अनुरक्षरण का कार्य किया जाता है। रेलवे द्वारा इस हेतु केवल रूफ टॉप उपलब्ध कराना होता है। सोलर सिस्टम से जनित विद्युत ऊर्जा को प्रतिमाह आधार पर रेलवे द्वारा तय टैरिफ दर के अनुसार भुगतान किया जाता है, जो कि डेवलपर व रेलवे



द्वारा एग्रीमेंट में निश्चित किया होता है। पॉवर परचेज एग्रीमेंट (PPA) के अंतर्गत उत्पादित विद्युत ऊर्जा को सीधे ग्रिड से कनेक्ट किया जाता है, जिससे उपयोग न होने की स्थिति में सीधे ग्रिड में भेजा जाता है। निर्दिष्ट अनुबंधित अवधि समाप्त होने पर डेवलपर द्वारा पूरा सोलर इंस्टॉलेशन रेलवे को स्थानान्तरित करना होता है।

मंडल के समपार फाटक, जिन पर 8 घन्टे से कम अवधि हेतु विद्युत सप्लाय प्राप्त होती थी तथा ग्रामीण फीडर से जुड़े होने के कारण पर्याप्त बिजली प्राप्त नहीं होती थी, ऐसे 25 समपार फाटकों पर 640W क्षमता का ऑफ ग्रिड सोलर सिस्टम लगाया गया है, जिससे रात के समय गेटमैन को पर्याप्त प्रकाश सुविधा मिली है, साथ ही विद्युत कटौती के दौरान बिजली पूर्ण रूप से 24 घंटे की अवधि हेतु मिलने लगी है।

यात्री सुविधा : यात्रियों, विशेषकर दिव्यांग यात्रियों की सुविधा के लिए मंडल के प्रमुख स्टेशनों पर लिफ्ट व एस्केलेटर का प्रावधान किया गया है। फिलहाल इंदौर में 5 लिफ्ट व 2 एस्केलेटर, रतलाम में 2 लिफ्ट व 2 एस्केलेटर तथा नागदा में दो लिफ्ट हैं। वर्तमान में रतलाम स्टेशन पर एक लिफ्ट व चित्तौड़गढ़ स्टेशन पर 3 लिफ्ट का कार्य भी शीघ्र किया जाना प्रस्तावित है। इसके अलावा सभी प्रमुख स्टेशनों के अतिरिक्त 150 से अधिक विभिन्न साइनेज बोर्ड व स्टेशन नेम बोर्ड जो कि एलइडी आधारित हैं, लगाए गए हैं, साथ ही इन्दौर, उज्जैन व रतलाम में नए वातानुकूलित यात्री प्रतीक्षालय भी बनाए गए हैं। ■





कर्षण वितरण संगठन : हमारी यातायात सेवा का भविष्य



श्री चन्द्र शेखर यादव
वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (टीआरडी), रतलाम मंडल

रतलाम मंडल में कर्षण वितरण प्रणाली गोधरा-रतलाम खंड के विद्युतीकरण के साथ वर्ष 1985-1986 में पहली बार शुरू हुई।

मंडल में विद्युतीकरण

मंडल में विभिन्न खंडों का क्रमानुसार विद्युतीकरण निम्नानुसार किया गया है :

खंड	आरकेएम	विद्युतीकरण का वर्ष
गोधरा - रतलाम	183	1985-86
रतलाम - नागदा	44	1986-87
नागदा - भोपाल	238	1990-92
दोहरीकरण अकोदिया - भोपाल	57	2007-12
इन्दौर - देवास - मक्सी	79	2011-12
देवास - मक्सी	36	2011-12
इन्दौर - डॉ. अम्बेडकर नगर	21	2016-17

भारतीय रेल द्वारा 100% विद्युतीकरण का प्रयास किया जा रहा है। रतलाम मंडल के शेष सभी खंडों पर भी विद्युतीकरण की योजना बनाई गई है और इसे स्वीकृति प्रदान की गई है, जिसे कोर, इलाहाबाद (आरई, अहमदाबाद) एवं विद्युत निर्माण विभाग, रतलाम द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है। विभिन्न खंडों का आगामी विद्युतीकरण विवरण निम्नानुसार है :

खंड	टीकेएम
रतलाम-फतेहाबाद-लक्ष्मीबाई नगर	140
रतलाम-नीमच-चन्देरिया	239.16
डॉ अम्बेडकर नगर - खंडवा	160
एनटीपीसी साइडिंग	75

कर्षण उपकेन्द्र एवं स्वीचिंग स्टेशन : लीमखंड़ा, दाहोद, बामनिया, रतलाम, नागदा, नईखंड़ी, मक्सी, मोहम्मदखंड़ा, सीहोर एवं मांगलियागांव में ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए 10 कर्षण उपकेन्द्र काम कर रहे हैं। मंडल में 9 सेक्शनिंग पोस्ट और 36 सब-सेक्शनिंग पोस्ट कार्यरत हैं।

ओएचई डिपो एवं रिमोट कंट्रोल सेंटर : पिपलोद, दाहोद, बामनिया, रतलाम, नागदा, उज्जैन, मक्सी, शुजालपुर, सीहोर, देवास एवं लक्ष्मीबाई नगर में दैनिक अनुरक्षण और ब्रेक डाउन को अटेण्ड करने के लिए 11 ऊपरी उपस्कर डिपो कार्यरत हैं। स्काडा पर सभी सीबी एवं बीएम के परिचालन नियंत्रण के लिए रतलाम में एक रिमोट कन्ट्रोल सेन्टर कार्यरत है।

पीएसआई डिपो : मंडल स्थित दाहोद, बामनिया, रतलाम, नागदा, उज्जैन, मक्सी, शुजालपुर, सीहोर एवं लक्ष्मीबाई नगर में 9 पीएसआई डिपो हैं।

टॉवर वैगन : वर्तमान में 8 व्हील वाले चार टॉवर वैगन एवं 4 व्हीलर वाले नौ टॉवर वैगन कार्यरत है। सीनियर खंड इंजीनियर (टीआरडी) वर्कशॉप, रतलाम के द्वारा विभागीय तौर पर सभी टॉवर वैगनों का अनुरक्षण किया जा रहा है।

ओएचई और पीएसआई परिसम्पत्तियों की थर्मोविजन जाँच : कर्षण वितरण प्रणाली, थर्मोविजन कैमरे की विश्वसनीयता को बढ़ाने का कार्य ओएचई और पीएसआई परिसम्पत्तियों में किया जा रहा है, जो कि सिस्टम में असाधारण तापमान को रिकार्ड कर तदानुसार कार्यवाही करता है। वर्तमान में थर्मोविजन 6 माह में एक बार किया जा रहा है।

कर्षण ऊर्जा के लिए ओपेन एक्सेस : कर्षण वितरण विभाग द्वारा वर्ष 2016 से कर्षण ऊर्जा के लिए विद्युत आपूर्ति ओपेन एक्सेस द्वारा प्राप्त की जा रही है। इससे रतलाम मंडल के एक वित्तीय वर्ष के ट्रेक्शन एनर्जी बिल में लगभग 46.61 करोड़ रुपये की बचत हो रही है।

कर्षण वितरण विभाग की मुख्य उपलब्धियाँ

देवास बैंक नोट प्रेस साइडिंग का विद्युतीकरण : देवास बैंक नोट प्रेस के 2.2 टीकेएम की साइडिंग का कर्षण वितरण विभाग द्वारा विद्युतीकरण कर 16 मार्च, 2019 को 25 केवी एसी से आवेशित किया गया। पहले रैक प्लेसमेंट हेतु डीजल इंजन उज्जैन या इन्दौर से देवास बुलाया जाता था। विद्युतीकरण के पश्चात् बिना अतिरिक्त क्रू एवं लोको के विद्युत लोको द्वारा रैक का प्लेसमेंट किया जा रहा है।



एसपी एवं एसएसपी पर बरीड रेल एवं अतिरिक्त अर्थिंग : अर्थिंग सिस्टम में सुधार हेतु सभी एसपी एवं एसएसपी पर

आरडीएसओ के एसएमआई क्रमांक टीआई, एमआई, 0032 के अनुसार बरीड रेल एवं अतिरिक्त अर्थिंग लगाया गया, जिससे प्रोटेक्शन सिस्टम अधिक प्रभावशाली हो गया है।



कम क्षमता के 12.5 एमवीए कर्षण ट्रांसफॉर्मर का 30/42 एमवीए के कर्षण ट्रांसफॉर्मर से बदलना : नागदा-भोपाल खंड के मोहम्मदखंड़ा तथा सीहोर कर्षण उपकेन्द्रों के 4 कम क्षमता (12.5 एमवीए) के कर्षण ट्रांसफॉर्मर्स को 30/42 एमवीए के कर्षण ट्रांसफॉर्मर्स से बदल दिया गया है, जिससे कि निर्बाध गाड़ियों का प्रचालन हो रहा है।

105 वर्ग मिमी के जी जम्पर को 160 वर्ग मिमी से बदलना : सिस्टम की विश्वसनीयता बढ़ाने हेतु अत्यधिक भार वाले खंड (कर्षण उपकेन्द्र एवं आसन्न एसएसपी के मध्य) सभी 345 नं. 105 वर्ग मिमी के जी जम्परों को 160 वर्ग मिमी के जम्पर से बदल दिया गया है।

पारम्परिक ओवरलेप प्रकार के न्यूट्रल खंड को हटाना : नागदा-गोधरा खंड को 160 किमी प्रति घंटा की गति से विद्युत गाड़ियों के संचालन के अनुकूल बनाने के लिए लिमखंड़ा, मेंघनगर, मोरवानी एवं खाचरोद के 8 नम्बर पारम्परिक ओवरलेप प्रकार के न्यूट्रल खंड को संशोधित कर ओवर लैप को हटा दिया गया है।

मॉडिफाइड बेन्ट स्टडी आर्म लगाना : नागदा - गोधरा खंड को 160 किमी प्रति घंटा की गति से विद्युत गाड़ियों के संचालन के अनुकूल बनाने हेतु 28 नम्बर बेंट स्टडी आर्म के स्थान पर ड्रॉप ब्रेकेट के साथ मॉडिफाइड बेंट स्टडी आर्म लगाया गया।



कम क्षमता के आइसोलेटरों को बदलना : सभी कम क्षमता (800 एम्पीयर) के आइसोलेटरों की क्षमता बढ़ाने हेतु इन्हें 1,600 एम्पीयर क्षमता के आइसोलेटरों से बदलने का कार्य किया गया।

ट्रैक्शन ट्रांसफॉर्मर के 132 केवी बुशिंग को बदलना : चार 132 केवी की बुशिंग का टैन डेल्टा वेल्यू अधिक होने के कारण कर्षण उपकेन्द्र नईखंड़ी, दाहोद एवं नागदा के ट्रैक्शन ट्रांसफॉर्मर की बुशिंग को विभागीय तौर पर बदलने का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया।



रिमोट संचालित हूटर : ब्रेक डाउन के समय हूटर संचालन में लगने वाले समय को कम करने के लिए रतलाम मंडल के सभी टीआरडी डिपो में जीएसएम आधारित हूटर लगाए गए हैं, जो कि टीपीसी के द्वारा एसएमएस भेज कर चलाये जाते हैं।



जंग लगे केंटीलीवरों को बदलना : 40 जंग लगे हुए केंटीलीवर को बदलकर उनके स्थान पर नए केंटीलीवर लगाने का कार्य किया गया।

स्वीचिंग पोस्ट में इंडीकेशन पीटी के स्थान पर इंडक्शन आधारित वोल्टेज सेन्सिंग उपकरण लगाना : उज्जैन एसएसपी में पोटेन्शियल ट्रांसफॉर्मर के स्थान पर इंडक्शन आधारित वोल्टेज सेन्सिंग उपकरण लगाया गया, जोकि सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है तथा इससे पोटेन्शियल ट्रांसफॉर्मर की अनुमानित लागत 75,000 रुपये की बचत हुई है।

शेष पृष्ठ 65 पर ➔

कर्षण परिचालन विभाग : महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर



श्री प्रदीप मीणा

वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (कर्षण/परिचालन), रतलाम मंडल

कर्षण परिचालन विभाग भारतीय रेल का एक महत्त्वपूर्ण व अभिन्न अंग है जो कि संचालन से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। इसके अधीन लोको पायलट, सहायक लोको पायलट, मुख्य लोको निरीक्षक, कर्मी दल व कर्षण लोको नियंत्रक और लोको के रख-रखाव के लिए मैंटेनेंस स्टाफ रतलाम मंडल मे कार्यरत है। यह विभाग संरक्षा से जुड़ा हुआ है तथा प्रतिदिन हजारों यात्रियों को अपने गंतव्य तक पहुंचाने तथा हजारों मीट्रिक टन माल ढुलाई का कार्य सुरक्षित व समय पालना के साथ करने में अपना योगदान देता है। रनिंग स्टाफ से जुडा विभाग होने के कारण लॉबी एवं रनिंग रूम जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य स्थल भी कर्षण परिचालन विभाग के अधीन आते हैं। रतलाम मण्डल के रतलाम, उज्जैन व इन्दौर मुख्यालयों पर लॉबी व रनिंग रूम इस विभाग के अधीन हैं। इनका रख-रखाव उत्तम व इन्हें अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है ताकि गाड़ी संचालन में योगदान देने वाला कर्मी दल पर्याप्त विश्राम कर सके एवं अपना कार्य निष्पादन दक्षतापूर्वक कर सके। इसके अतिरिक्त विद्युत लोको ट्रिप शेड भी इस विभाग के अधीन है, जिसमें विद्युत लोको के ट्रिप एवं जनरल इंसपेक्शन किए जाते हैं। कर्षण परिचालन विभाग की मुख्य उपलब्धियां निम्न है :-

ई-टीआरओ एप

सहा.मं.बि.इंजी. (क/प) रतलाम द्वारा मोबाइल एप्लीकेशन ई-टीआरओ बनाई गई है, जिसमें मिशन जीरो स्पाड को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के एट्रीब्युट्स उपलब्ध कराए गए हैं जो कि लो.पा./सहा. लो.पा. के स्पाड से संबंधित कमजोर क्षेत्र में मॉनीटरिंग में सहायक हैं। मु.लो. निरी. द्वारा पायदानी निरीक्षण के दौरान मोबाइल पर एट्रीब्युट्स के आधार पर अंकों को ऑनलाइन फीड किया जाता है और एट्रीब्युट्स का डाटा स्वत: कम्प्यूटर के निर्धारित फॉर्मेट में रिकार्ड हो जाता है। डाटा से क्रू के कमजोर क्षेत्र का आकलन किया जा सकता है तथा उपलब्ध सारांश से लो.पा. की मॉनीटरिंग, लो.निरी. की पायदानी निरीक्षण की रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है तथा इसके आधार पर मॉनीटरिंग एवं कांउसलिंग पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है।

कन्वेंशनल लोको मॉडल

कन्वेंशनल लोको का एक मॉडल तैयार कर रतलाम लॉबी में स्थापित किया गया। यह मॉडल लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलट को लोको संचालन की बुनियादी जानकारी उपलब्ध कराता है एवं लोको संचालन से जुड़े दोष निवारण में मददगार है। यह लोको में लगे विभिन्न उपकरणों की सामान्य जानकारी भी प्रदान करता है।



रनिंग रूम का वातानुकूलनीकरण

लोको पायलट, सहायक लोको पायलट एवं गार्ड को विश्राम की आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध करवाने हेतु रनिंग रूम में वातानुकूलन सुविधा उपलब्ध करवा दी गई है जो रनिंग कर्मचारियों को पूर्ण विश्राम की सुविधा देने में मददगार है। इससे सभी कर्मीदल अपनी पूर्ण ऊर्जा एवं शांत दिमाग से गाड़ी का संचालन कर सकते हैं।



सीएमएस का बॉयोमीट्रिक एवं ब्रीथ एनालाइजर के साथ एकीकरण

रतलाम मंडल के सभी क्रू लॉबी पर सीएमएस का बॉयोमेट्रिक एवं ब्रीथ एनालाइजर के साथ एकीकरण किया गया है। इसका फायदा यह है कि कोई क्रू किसी अन्य क्रू के स्थान पर साइन ऑन/ऑफ नहीं कर सकता है जो कि सिस्टम को और अधिक पारदर्शी बनाता है एवं संरक्षा को भी सुनिश्चित करता है।



मिशन जीरो स्पाड प्राप्त करने हेतु कर्षण परिचालन विभाग द्वारा उठाए गए कदम

- **खतरा रोक संकेत से बचाव की महत्त्वपूर्ण बातें**

स्पाड से बचाव हेतु महत्त्वपूर्ण बिन्दु कर्षण परिचालन विभाग द्वारा तैयार किए गए हैं जिसका वितरण प्रत्येक लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलट को एक स्टिकर के रूप में किया गया है एवं एलआरडी पुस्तिका में भी इसका विवरण दिया गया है।

सावधान

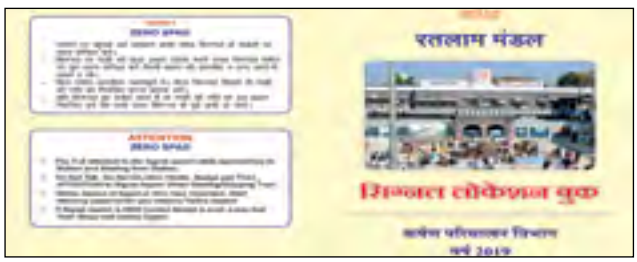
ZERO SPAD

- स्टेशन पर पहुंचने तथा प्रस्थान करते समय सिग्नल के संकेतों पर ध्यान केंद्रित करें।
- सिग्नल पर गाड़ी को खड़ा अथवा रवाना करते समय सिग्नल संकेत पर पूरा ध्यान केन्द्रित करें। किसी प्रकार की बातचीत व अन्य कार्य में व्यस्त न रहें।
- पीला संकेत अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। पीला सिग्नल दिखते ही गाड़ी की गति को नियंत्रित करना प्रारम्भ करें।
- यदि सिग्नल का संकेत लाल है तो गाड़ी की गति को इस प्रकार नियंत्रित करें कि गाड़ी लाल सिग्नल के पूर्व खड़ी हो जाए।

- **एलआरडी बुक**

लोको पायलट व सहायक लोको पायलट के मार्ग-दर्शन के लिए एलआरडी बुक तैयार की गई, जिसमें रतलाम मंडल के विभिन्न खण्डों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई हैं, जो कि निम्नानुसार है:

- स्पाड से बचाव एवं मार्ग-दर्शन।
- ग्रेडिएंट चार्ट।
- लूप लाइन व खंडों की गति तथा स्थाई गति प्रतिबन्ध।
- सिग्नल लॉकेशन चार्ट।
- सिग्नल, न्युट्रल सेक्शन विपरीत दिशा में लगे सिग्नलों से संबंधित विस्तृत जानकारी।
- रतलाम मंडल के सभी प्रमुख यार्डो के सिग्नल फ्लो चार्ट।
- प्रमुख स्टेशनों के यार्ड लेआउट।



ऑन ड्यूटी के समय ब्लैक बोर्ड एवं घंटी का उपयोग

प्रत्येक लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलट साइन ऑन के समय लॉबी में लगे बोर्ड पर जीरो स्पाड लिखता है एवं घंटी बजाकर सुरक्षित एवं संरक्षित गाड़ी संचालन की शपथ लेता है, जिसका उद्देश्य लोको पायलट व सहायक लोको पायलट को स्पाड के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाना है। इस प्रक्रिया को अपनाने से लोको पायलट कार्य के प्रति समर्पित होकर गाड़ी संचालित करता है।





आरएस वॉल्व का प्रतिरूप



प्रत्येक क्रू लॉबी में आरएस वॉल्व का प्रतिरूप लगाया गया है, जिसका उद्देश्य सहायक लोको पायलट को इसके उपयोग के बारे में प्रशिक्षित करना है ताकि सहायक लोको पायलट विषम परिस्थितियों में आरएस वाल्व का ठीक प्रकार से उपयोग कर गाड़ी को नियंत्रित करके होने वाली संभावित दर्घटना की गुजाइंश को खत्म कर सके।

यार्ड सिमुलेटर



कर्षण परिचालन, रतलाम द्वारा यार्ड सिमुलेटर बनाया गया है, जिसमें ट्रेन का प्लेटफॉर्म से वास्तविक मूवमेंट एनीमेशन के द्वारा बताया गया है। सभी बड़े यार्ड, जैसे रतलाम, वडोदरा, गोधरा, लक्ष्मीबाईनगर, इन्दौर, नागदा व भोपाल यार्ड इस सिमुलेटर में सम्मिलित किए गए हैं। इस सिमुलेटर के माध्यम से क्रू आसानी से समझ सकता है कि कैसे एक ट्रेन यार्ड में अलग-अलग लाइन पर जाती है और किस तरह ट्रेन का यार्ड में संचालन होता है। यार्ड सिमुलेटर के माध्यम से क्रू को बड़े यार्डो के बारे में आसानी से काउंसिल किया जा सकता है।

एनिमेशन वीडियो

लोको पायलट व सहायक लोको पायलट को स्पाड के प्रति जागरूक एवं सतर्क रखने के लिए लॉबी में एक एनिमेशन वीडियो 24 घंटे प्रदर्शित की जा रही है।

चिकित्सा शिविर का आयोजन

समय-समय पर चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाता है जिसके अन्तर्गत चिकित्सकों द्वारा कर्मचारियों की सामान्य जाँच की जाती है एवं गलत जीवन शैली के कारण

उत्पन्न होने वाली गैर संक्रमणकारी रोगों, जैसे-हृदय रोग, रक्तचाप व मधुमेह जैसी घातक बीमारियों से बचाव के विषय में रनिंग स्टाफ को परामर्श प्रदान किया जाता है।

संरक्षा संगोष्ठी

प्रत्येक माह में 'संरक्षा संगोष्ठी' का आयोजन किया जाता है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न पर्यवेक्षकों एवं अधिकारियों द्वारा कर्मी दल को स्पाड से बचाव व सुरक्षित गाड़ी संचालन हेतु परामर्श प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त दैनिक जीवन में स्वस्थ जीवन शैली अपनाने हेतु योग एवं ध्यान का प्रशिक्षण ब्रह्मकुमारी संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है।



परिवार संगोष्ठी

रनिंग स्टाफ के परिवारों के साथ समय-समय पर संगोष्ठियों का आयोजन किया गया जाता है, जिसका उद्देश्य घर पर तनाव रहित वातावरण बनाए रखने हेतु समुचित प्रयास करने के लिए पारिवारिक सदस्यों को परामर्श प्रदान किया जाता है, एवं परिवार द्वारा बताई गई विभिन्न समस्याओं का निराकरण करने की भी कोशिश की जाती है।



कर्षण परिचालन विभाग की अन्य उपलब्धियाँ

- मालगाड़ियों के ग्रेडिएंट सेक्शन में वृद्धि के बावजूद गहन पायदानी निरीक्षण एवं परामर्श के कारण स्टॉलिंग के प्रकरण विगत वर्ष की तुलना में 67 से घटकर 40 हो गयें हैं।
- प्रभावी परामर्श के कारण ऊर्जा रिजेनरेशन 16.41% से बढ़कर 16.80% हो गया।
- विशिष्ट ऊर्जा खपत में भी 5.95% की कमी आई है।
- कैडर के बेहतर प्रबंधन एवं सुचारु ट्रेन संचालन के मद्देनजर पदोन्नति पाठ्यक्रम की सुव्यवस्थित योजना बनाकर इस वर्ष 23 लोको पायलट मेल/एक्सप्रेस, 71 लोको पायलट पैसेंजर, 50 लोको पायलट गुड्स, 60 लोको पायलट शंटर एवं 229 वरिष्ठ सहायक लोको पायलटों की पदोन्नति की गई। ■

रेल आय एवं यात्री सेवा के लिए प्रतिबद्ध

➔पृष्ठ 54 का शेष भाग

पातालपानी-कालाकुण्ड हेरिटेज रेलवे : मंडल द्वारा 25 दिसम्बर, 2018 से प्रारंभ किया गया। इस हेतु विभिन्न कार्य किए गए जिसमें वॉल पेंटिंग, आर्टिफेक्ट्स, यात्री प्रतिक्षालय, वॉच टॉवर, बोटिंग सुविधा, रिटायरिंग रुम्स, डॉरमेट्री, केटरिंग सुविधा, पानी के स्प्रिंकलर संग्रहालय, बेंचेस, मिनी शेड, किड्स प्ले एरिया आदि का प्रावधान किया गया है। पर्यटकों द्वारा हेरिटज रेल खंड की सराहना की गई है।

रतलाम मंडल पर, दिव्यांग कार्ड जारी करने की व्यवस्था के सरलीकरण करने से कुल 2,883 दिव्यांग कार्ड जारी किए गए हैं। इन कार्ड से दिव्यांग यात्री सीधे इंटरनेट अथवा यू.टी.एस. के माध्यम से रियायत टिकट प्राप्त करते हैं। आवेदन एवं रियायत प्रमाण पत्र के प्रोफार्मा रतलाम मंडल के 12 प्रमुख स्टेशनों पर उपलब्ध करवाए गए हैं, जिसे आवश्यकतानुसार प्राप्त किया जा सकता है तथा मुख्य स्टेशनों पर संपूर्ण प्रक्रिया की जानकारी के बोर्ड लगाए गए हैं। आवेदनकर्ता सीधे डाक द्वारा या मुख्य वाणिज्य निरीक्षक के द्वारा आवेदन प्रदान कर कार्ड बनवाने की कार्यवाही करते हैं एवं लगभग 1 महीने में कार्ड बनाने की प्रक्रिया पूर्ण की जाती है।

इनोवेटिव आईडिया / विशेष प्रयास : इसके अंतर्गत, इंदौर एवं उज्जैन स्टेशनों पर जल रहित यूरिनल सिस्टम को लगाया गया। इससे प्रतिदिन हजारों लीटर पानी की बचत के साथ साथ बदबू से भी छुटकारा मिला है। रतलाम मंडल पर चाइल्ड लाइन द्वारा गत दो वर्षों में 736 बच्चों को बचाया गया है। रेलवे स्टेशन प्लेटफॉर्म पर एक कंट्रोल सेंटर के माध्यम से सभी गतिविधियों पर निगरानी की जाती है। रेलवे सुरक्षा बल द्वारा आवश्यक सहयोग किया जाता है। ■



पातालपानी-कालाकुण्ड हेरिटेज रेलवे रिटायरिंग रूम्स

कैरिज एवं वैगन अनुरक्षण हेतु मूलभूत सुविधाओं का विकास



श्री कमल सिंह चौधरी

वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियन्ता (कैरिज एवं वैगन), रतलाम मंडल

रतलाम मंडल मुम्बई से नई दिल्ली व अजमेर से खण्डवा जाने वाले रेल मार्गों के मध्य स्थित है। यह मंडल ब्रॉड गेज के लगभग 922 किमी व मीटर गेज के लगभग 64 किमी के मार्ग पर सेवा प्रदान करता है। यह मंडल पर छः इंटर चेंज पाइंटों पर दूसरे मंडलों से जुड़ा है। रतलाम रेलवे स्टेशन अन्य मंडल/रेलवे से आने वाली सवारी गाड़ियों में तकनीकी समस्या निवारण के साथ-साथ यात्री सुविधा प्रदान करने हेतु एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। रतलाम स्टेशन पर 'ए' क्लास एआरटी, एसपीएआरटी एवं उज्जैन, चित्तौड़गढ़ एवं डॉ. अम्बेडकर नगर स्टेशनों पर बी क्लास एआरटी व स्केल -I एआरएमई मौजूद है। रतलाम मंडल माल ढुलाई सेवाओं के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण मंडल है। चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में 7 सीमेंट साईडिंग व मंडल पर बांगरोद एवं मांगलिया गाँव स्टेशनों पर पेट्रोलियम पदार्थों की लोडिंग-अनलोडिंग की जाती है। मंडल के शम्भुपुरा वैगन/आरओएच रिपेयर डिपो द्वारा औसतन 30 सीसी रैक एवं 40 प्रीमियम रैक समेत लगभग 90 रैकों का प्रतिमाह परीक्षण एवं 62 बीसीएनएचएल वैगनों का आरओएच भी किया जाता हैं। कोचिंग डिपो, इन्दौर द्वारा 22 मेल एक्सप्रेस और 2 पैसेंजर ट्रेन सहित कुल 24 ट्रेनों का प्राथमिक अनुरक्षण एवं 16 ट्रेनों का एसटीआर किया जाता है। डॉ. अम्बेडकर नगर कोच केयर कॉम्प्लेक्स में दो मेल एक्सप्रेस, चार डेमू यात्री एवं दो मीटर गेज (यात्री एवं हेरिटेज) गाड़ियों का प्राथमिक अनुरक्षण किया जाता है। ईएनएचएम विंग द्वारा मंडल के रतलाम एवं इन्दौर स्टेशनों पर क्रमशः 17 सितम्बर, 2017 एवं 7 दिसम्बर, 2018 से स्टेशनों की मशीनीकृत सफाई काण्ट्रेक्ट की गतिविधि की निगरानी की गई, जिससे सफाई में निरंतर सुधार होते हुए वर्ष 2018-19 हेतु रतलाम स्टेशन 'ए' श्रेणी में एवं इन्दौर स्टेशन 'ए-1' श्रेणी में सफाई में श्रेष्ठ होने पर मंडल रेल प्रबंधक द्वारा शील्ड प्रदान की गई है। चित्तौड़गढ़ स्थित रनिंग रूम का अनुरक्षण, साफ-सफाई एवं भोजन व्यवस्था का कार्य यांत्रिक विभाग की देख-रेख में किया जाता है। इस रनिंग रूम को पश्चिम रेलवे में वर्ष 2018-19 हेतु बेस्ट मेण्टेंड रनिंग रुम का महाप्रबंधक स्तर के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।





त्वरित जल प्रणाली

महत्त्वपूर्ण कार्य

रतलाम स्टेशन पर त्वरित जल प्रणाली (क्विक वॉटरिंग सिस्टम) : रतलाम स्टेशन के प्लेटफॉर्म क्रं. 4 पर विजयवाड़ा पैटर्न पर क्विक वॉटरिंग सिस्टम की व्यवस्था 9 फरवरी, 2019 से एवं प्लेटफॉर्म क्रं 5 एवं 6 पर 30 मार्च, 2019 से प्रारंभ की गई है। पश्चिम रेलवे पर यह पहला स्टेशन है, जहाँ SCADA प्रणाली के क्विक वॉटरिंग की सुविधा सफलता पूर्वक उपलब्ध करवाई गई है।

प्रोजेक्ट 'उत्कृष्ट' : प्रोजेक्ट 'उत्कृष्ट' के अन्तर्गत रतलाम मंडल पर ट्रेन क्रं 19325/26 इन्दौर-अमृतसर एक्सप्रेस के रैक एवं ट्रेन क्रं 12919/20 मालवा एक्सप्रेस के चार रैकों को कोचिंग डिपो इन्दौर/डीएडएन डिपो द्वारा निर्धारित समय सीमा में आकर्षक विनायल पेण्टिंग एवं यात्री सुविधाओं को बढ़ाते हुए सभी पाँचों रैकों को अपग्रेड कर चलाया गया, जिसे यात्रियों द्वारा अत्यधिक सराहा जा रहा है।

कोच केयर कॉम्प्लेक्स डीएडीएन में आईसीएफ कोचों के आईओएच का शुभारंभ : महाप्रबंधक द्वारा 29 जून, 2018 को कोचिंग डिपो डीएडीएन में आईसीएफ कोचों की आईओएच एक्टीविटी का शुभारंभ किया गया।



इस दौरान डिपो में उपलब्ध सीमित संसाधनों एवं मैनपॉवर द्वारा आईओएच का कार्य प्रारंभ किया गया। प्रथम कोच संख्या 027125 एसएलआरडी/डब्ल्यूआर को महाप्रबंधक द्वारा रवाना किया गया।





अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा पुस्तिका का विमोचन : अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड के दाहोद कार्यशाला के निरीक्षण के दौरान यॉंत्रिक विभाग द्वारा मंडल के रतलाम, दाहोद, उज्जैन, इन्दौर, नीमच एवं चित्तौड़ स्टेशनों पर प्रदर्शित हेरिटेज स्टीम लोकोमोटिव की विस्तृत जानकारी को समाहित कर पुस्तिका 'हमारी धरोहर हमारे स्टीम लोकोमोटिव' तैयार की गई, जिसे अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा विमोचित किया गया।

लाइट, साउंड एवं स्मोक सिस्टम : रतलाम मंडल पर 7 स्टेशनों पर लगे हेरिटेज स्टीम लोकोमोटिव को इनोवेटिव लाइट, साउंड एवं स्मोक सिस्टम से आकर्षक रूप से सुसज्जित किया गया है, जिसे यात्रियों तथा आम जनता द्वारा काफी सराहा जा रहा हैं।



पातालपानी-कालाकुण्ड खण्ड के मध्य पश्चिम रेलवे की प्रथम हेरिटेज ट्रेन : रतलाम मंडल के पातालपानी-कालाकुण्ड खण्ड के मध्य मीटर गेज लाइन पर पश्चिम रेलवे की प्रथम हेरिटेज ट्रेन को निर्धारित समय-सीमा में तैयार कर शुभारंभ किया गया।

हेरिटेज ट्रेन के कोचों को कोचिंग केयर कॉम्पलेक्स डीएडीएन में नवश्रृगांरित किया गया, जिसमें कोच के बाहरी भाग को पातालपानी-कालाकुण्ड के मध्य स्थित मूल प्राकृतिक दृश्यों को विनाइल पेंटिंग के माध्यम से एवं आन्तरिक भाग में आकर्षक चित्रों को फोटो फ्रेम के माध्यम से सजाया गया है। इसके अतिरिक्त कालाकुण्ड स्टेशन पर मीटर गेज के 40 वर्ष पुराने कोच को सर्वसुविधायुक्त हेरिटेज रेस्ट हाऊस के रूप में एवं एक मीटर गेज कोच को डोरमेट्री के रूप में विकसित किया गया है। हेरिटेज ट्रेन को यात्रियों द्वारा काफी सराहा जा रहा है।

इन्दौर स्टेशन का यांत्रिक विभाग (ईएनएचएम) विंग द्वारा अधिग्रहण : इन्दौर स्टेशन की सफाई व्यवस्था को और अधिक बेहतर बनाने के उद्देश्य से सफाई मॉनिटरिंग का कार्य यांत्रिक विभाग ईएनएचएम द्वारा 7 दिसम्बर, 2018 से प्रारंभ किया गया है।

- वर्ष 2018-19 के दौरान कोचिंग डिपो, इन्दौर द्वारा कुल 536 बॉयो-टॉयलेट टेंक 136 कोचों में लगाए गए।
- वर्ष 2018-19 के दौरान मंडल पर कुल 281 कर्मचारियों को विभिन्न श्रेणियों में नियमानुसार पदोन्नति प्रदान की गई है।

न्युमेटिक व्हील टर्निंग मशीन : मंडल के शम्भुपुरा आर ओ एच डिपो में कार्यरत श्री शरद राजपूत, एसएसई द्वारा न्यूमेटिक व्हील टर्निंग मशीन का इनोवेशन किया गया। उक्त मशीन वायु के दबाव के सिद्धांत पर कार्य करती है। इसके उपयोग से बिना अधिक बल लगाए केवल एक व्यक्ति द्वारा ही व्हील को आसानी से घुमाया एवं उठाया जा सकता है। उक्त मशीन से व्हील के हैंडलिंग के कार्य में काफी सुविधा हुई है।



एनडीआरएफ एवं मंडल के कर्मचारियों द्वारा मॉक ड्रिल : मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल कार्यालय रतलाम में एनडीआरएफ सहायक कमांडेंट, बनारस के साथ को-ऑर्डिनेशन मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें एनडीआरएफ की ओर से एक प्रजेन्टेशन के माध्यम से विषम परिस्थितियों से निपटने हेतु अपनाए जाने वाले उपायों पर प्रकाश



शेष पृष्ठ 71 पर ➔

डीजल लोको शेड, रतलाम प्रगति के पथ पर अग्रसर



श्री विनोद कुमार

वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (डीजल), रतलाम मंडल

डीजल लोको शेड, रतलाम मुंबई-दिल्ली मार्ग पर मुख्य लाइन पर स्थित है। डीजल शेड रतलाम की स्थापना 1 मई, 1967 को 21 डब्ल्यूडीएम-2 लोकोमोटिव होल्डिंग के साथ हुई। रतलाम डीजल लोको शेड की होल्डिंग 109 लोको तक बढ़ गई है। यह लोको का अनुरक्षण करके भारतीय रेल के यात्रियों एवं माल को अनवरत सुरक्षित तथा समय पर अपने गंतव्य तक पहुंचाने का कार्य 24 घंटे कर रहा है। डीजल शेड, रतलाम के लोको भारतीय रेल में अत्यंत महत्त्वपूर्ण गाड़ियों, जैसे राजधानी (बीआरसी एंड एमएओ) एवं विभिन्न रेलवे जोन में मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों आदि में सुरक्षित एवं सुचारू रूप से संचालन कर रहे हैं। वर्तमान में शेड की लोको होल्डिंग 109 डीजल लोको की है, जिनका विवरण इस प्रकार है (डब्ल्यूडीएम 3ए-33, डब्ल्यूडीएम 3डी-25, डब्ल्यूडीजी 3ए-43, डब्ल्यूडीएस6-5, इनफेरियर सर्विस डब्ल्यूडीएम 2ए (शंटिंग लोको)-3) डीजल शेड रतलाम के अधीन डीजल शेड डॉ. अम्बेडकर नगर एवं ट्रबल शूटिंग पाईंट चित्तौड़गढ़ और उज्जैन भी शामिल हैं। डीजल शेड, रतलाम गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली, व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली, पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणाली एवं ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रमाणन शेड हैं। शेड ने नवीनीकरण ऊर्जा के उपयोग, पानी और बिजली के संरक्षण का भी बीड़ा उठाया है।



लोको शेड, रतलाम की प्रमुख गतिविधियाँ

डीजल शेड, रतलाम में गाड़ियों के सुरक्षित संचालन हेतु डीजल लोको का अनुरक्षण किया जाता है। इसके अंतर्गत समयानुसार लोको के माईनर शेड्यूल इंस्पेक्शन (टीएस, एमएस, एम4, एम8, एम16 एवं एम20), मेजर शेड्यूल ओवरहॉलिंग (एम-12,एम-24,एम-48) एवं लोको का आउट ऑफ कोर्स रिपेयर आदि को आरडीएसओ द्वारा जारी एमआई/आईबी, ओईएम मैनुअल में दिए गए निर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए अनुरक्षण किया जाता है। आरडीएसओ द्वारा जारी लोको विफलता पर आधारित विश्वसनीयता कार्य योजना (आरएपी) के अनुसार लोको का अनुरक्षण करने के बाद ही लोको को शेड आउट किया जाता है। शेड में आए हुए प्रत्येक लोको के सेफ्टी आईटम्स को चेक करके सही पाए जाने के बाद पर्यवेक्षक एवं अधिकारियों द्वारा लोको का सुपरचेक किया जाता है, जिससे लोको की गुणवत्ता में सुधार आया है। इसके अलावा मौसम के अनुरूप पहले से ही ऐहतियातन कार्यवाही आरडीएसओ के निर्देशों के अनुसार की जाती है।

लोको की विश्वसनीयता में वृद्धि : डीजल शेड, रतलाम में समय-समय पर क्वालिटी सर्किल मीटिंग आयोजित की जाती है, जिसमें सभी क्वालिटी यूनिटों के पर्यवेक्षक एवं संबंधित कर्मचारी उपस्थित होते हैं, जिसमें लोको विफलताओं एवं उनके संबंध में की जाने वाली कार्यवाही के बारे में चर्चा की जाती हैं। वर्ष 2018-19 में कुल 9 क्वालिटी सर्किल मीटिंग्स आयोजित की गई हैं। इसके साथ-साथ लोको के अनुरक्षण में आने वाली समस्याओं, लोको विफलताओं को रोकने एवं लोको शेड्यूल से संबंधित टेक्नीकल स्टैंडिंग ऑर्डर भी डीजल शेड रतलाम द्वारा जारी किए जा रहे हैं, जिससे कि लोको विफलताओं में कमी और लोको अनुरक्षण एवं विश्वसनीयता को बढ़ाया जा सके। वर्ष 2018-19 एवं 2019-20 के दौरान लोको शेड्यूल एवं रिपेयर से संबंधित विभिन्न विषयों पर कुल 45 टेक्नीकल स्टैंडिंग ऑर्डर जारी किए जा चुके हैं।

स्टाफ वेलफेयर : कार्य को बढ़ावा देने एवं कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाने हेतु डीजल शेड, रतलाम ने कुल 253 कर्मचारियों को पदोन्नति प्रदान की है। वर्ष 2018-19 के दौरान मौजूदा रिक्तियों के खिलाफ सभी श्रेणियों अर्थात् टीसीएन III से एसएसई स्तर तक उपयुक्त अराजपत्रित कर्मचारी स्टाफ को पदोन्नति प्रदान की गई।

I) **स्टाफ ट्रेनिंग :** डीजल शेड, रतलाम में लोको के रख-रखाव और रनिंग स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए डीजल ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर है। इस डीजल ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर द्वारा प्री-प्रमोशनल और रिफ्रेशर कोर्स संचालित किए जाते हैं। सीसीटीवी कैमरों, कम्प्यूटरीकृत एनिमेटेड प्रशिक्षण मॉड्यूल और सुव्यवस्थित सुसज्जित मॉडल रूम के माध्यम से लाइव मॉनिटरिंग के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान रतलाम शेड ने तकनीकी क्षेत्रों में प्रगति की है, जिससे लोको विश्वसनीयता के साथ-साथ

पर्यावरण में सुधार और औद्योगिक सुरक्षा एवं संरक्षा में भी सुधार हुआ है।

II) **आरओ वॉटर प्लांट** – डीजल शेड, रतलाम के शेड कर्मचारियों का वेलफेयर भी एक प्रमुख विषय रहा है। वर्ष 2018-19 में शेड कर्मचारियों को पीने के पानी की अच्छी गुणवत्ता प्रदान करने के लिए डीजल शेड, रतलाम के कैंटीन परिसर के भीतर 500 लीटर/घंटे की क्षमता का आरओ वॉटर प्लांट स्थापित किया गया है।

डीजल शेड, रतलाम द्वारा किए गए अन्य कार्य

आईएसओ प्रमाणपत्र – डीजल शेड, रतलाम द्वारा अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए हाल ही में आईएसओ 45001: 2018 हेल्थ एंड सेफ्टी के लिए प्रमाणपत्र प्राप्त किया गया है और यह प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाला भारतीय रेल का पहला शेड बन गया है। शेड ने शेष सभी आईएसओ प्रमाणपत्र के नवीनतम संस्करण अर्थात् आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 और 50001: 2011 भी 2018-2019 में प्राप्त कर लिए हैं। इसके अलावा, शेड ने 28 मार्च, 2018 को 5 'एस' प्रमाणीकरण भी हासिल किया है।



आपातकालीन स्थिति में डीजल लोकोमोटिव व्हील को उठाने हेतु पुस्तिका – संबंधित कर्मचारियों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करने के लिए आपातकालीन स्थिति में डीजल लोकोमोटिव व्हील को उठाने पर एक पुस्तक रतलाम डीजल शेड द्वारा वर्ष 2018-19 में तैयार की गई है। इस पुस्तक में सभी प्रकार के डीजल इंजनों और सभी लोकेशन के पहियों के लिए व्हील लिफ्टिंग तकनीक का वर्णन सरल और आत्म व्याख्यात्मक हिन्दी भाषा में किया गया है। इसके अतिरिक्त, अंडर ट्रक की सुरक्षा, संचालन और विश्वसनीयता से संबंधित कई और विषय भी इस पुस्तक में शामिल हैं।



डीजल ऐप – रतलाम 'डीजल शेड' ने डीजल ऐप नाम से एक सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन डिजाइन किया है, जो पेपरलेस वर्किंग की दिशा में एक डिजिटल पहल है। एंड्रॉइड स्मार्ट फोन के लिए डीजल ऐप डीजल शेड के अधिकारियों, पर्यवेक्षकों और कर्मचारियों को शेड के विभिन्न रिकॉर्ड/पैरामीटर की नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराता है।



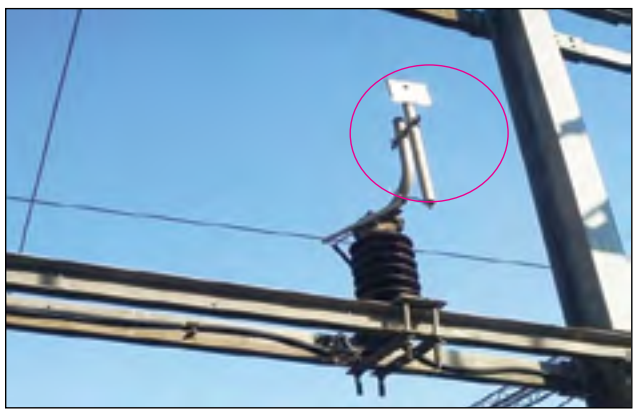
इस ऐप का उपयोग करके प्रतिमाह पेपर्स, प्रिंटर कार्टेज, मैन पॉवर इत्यादि में खर्च होने वाली लगभग 10,050 रुपये की लागत बचत प्राप्त की जाती है

पोर्टेबल फायर ब्रिगेड ट्रॉली – अग्निशमन की बेहतर व्यवस्था के लिए एवं हल्की तीव्रता की आग को बुझाने के लिए एक पोर्टेबल फायर ब्रिगेड ट्रॉली डीजल शेड, रतलाम द्वारा बनाई गई है, जोकि बैटरी संचालित लिस्टर ट्रक की सहायता से उक्त ट्रॉली आग लगने की जगह पर जा सकती है। ट्रॉली को शेड के भीतर उपलब्ध सामग्री से बनाया गया है, जिसमें पानी की टंकी (क्षमता 1,000 लीटर), डीजल पम्प, अग्निशामक यंत्र 8 और 30 फीट लंबाई का लचीला पाइप शामिल है। ■



कर्षण वितरण संगठन : हमारी यातायात सेवा का भविष्य

➔ पृष्ठ 58 का शेष भाग



कर्षण उपकेन्द्र में वोल्टेज सेन्सिंग उपकरण लगाना : कर्षण उपकेन्द्रों में प्राथमिक सप्लाई की उपलब्धता की सूचना हेतु इंडक्शन आधारित सेन्सिंग उपकरण लगाया गया, जोकि प्राथमिक सप्लाई की उपलब्धता की सूचना कर्षण उपकेन्द्र में तथा स्काडा के द्वारा टीपीसी को उपलब्ध कराता है।

कर्षण वितरण विभाग के अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य : वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान कर्षण वितरण विभाग द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्ण किए गए। इस दौरान 89 झुके हुए मास्टों को सीधा किया गया। कर्षण उपकेन्द्रों, एसपी एवं एसएसपी के सभी 49 एल्यूमिनियम क्रॉस फीडर को कॉपर क्रॉस फीडर से बदला गया। 167 एशियाटिक मेक के बीटी इंसुलेटर एवं 85 फेलियर प्रोन कम्पोजिट इंसुलेटर को पोर्सिलीन इंसुलेटर द्वारा बदला गया। 41 पोटेन्शियल ट्रांसफॉर्मर को कोडल लाइफ पूर्ण करने के बाद नए से बदला गया। 46 नम्बर लाइटनिंग अरेस्टर को कोडल लाईफ पूर्ण करने के बाद नए से बदला गया। ■

सुलभ, सुरक्षित, सुखद यात्रा की मार्गदर्शिका : संकेत एवं दूरसंचार विभाग



श्री हेमन्त कुमार महावर

वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता, रतलाम मंडल

संकेत एवं दूरसंचार व्यवस्था भारतीय रेल में गाड़ी की तीव्र गति, यात्रियों के मनोरंजन, उनकी संरक्षा तथा उनकी सुविधाओं का ध्यान रखने में अहम रोल अदा करती है। रेलवे में अकेले दूर संचार शाखा द्वारा यात्रियों की सुविधाओं का ध्यान रखा जाता है। संकेत व्यवस्था का कार्य रेलगाड़ियों को तीव्र गति के साथ-साथ स्टेशनों तक सुरक्षित पहुंचाने का है।

संकेत व्यवस्था भारतीय रेल की रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करती है जबकि संचार व्यवस्था यात्रियों की सुविधा हेतु कर्तव्यरत रहती है। रेलगाड़ियों में सुरक्षा और व्यवस्थाओं को उच्चस्तरीय बनाने के लिए आधुनिक सिग्नलिंग व्यवस्था, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग, रूट रिले इंटरलॉकिंग, पैनल इंटरलॉकिंग, मल्टी एस्पेक्ट कलर लाइट सिग्नलिंग तथा धुरागणक शामिल किए गए हैं। लाइन क्षमता को बढ़ाने के लिए इंटरमीडिएट ब्लॉक सिग्नलिंग की व्यवस्था की गई है। इसकी गुणवत्ता को बढ़ाने के उद्देश्य से एलईडी सिग्नल एवं विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए पैरेलल एक्सल काउंटर लगाए जा चुके हैं। रतलाम से नागदा (रूट ए) सिग्नलिंग के बीच 14 इंटरमीडिएट ब्लॉक सिग्नलिंग तथा नागदा से उज्जैन के बीच 1 इंटरमीडिएट ब्लॉक सिग्नलिंग की व्यवस्था है। रतलाम मंडल में 2 रूट रिले इंटरलॉकिंग, 35 इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग, 63 पैनल इंटरलॉकिंग तथा संपूर्ण मंडल में मल्टी एस्पेक्ट कलर लाइट सिग्नलिंग है। नागदा तथा दाहोद जैसे महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (ईआई) का कार्य तय समय सीमा के अन्दर संपन्न किया गया।

संकेत विभाग द्वारा 195 डाटा लॉगर्स लगाए गए हैं, डाटा लॉगर रेलवे के ब्लैक बॉक्स के रूप में काम करता है, जिनको रतलाम से नेटवर्किंग के द्वारा जोड़ा गया है। इसके माध्यम से रतलाम से ही हम सारे इलेक्ट्रॉनिक इक्यूपमेंट, पैनल इंटरलॉकिंग/ रूट रिले इंटरलॉकिंग तथा समपार फाटकों की मॉनिटरिंग कर सकते हैं। डाटा लॉगर द्वारा संकेत गियरों के फेल होने से पहले पूर्वानुमान लगा सकते हैं, जिससे विफलताओं में कमी आती हैं। बॉबिंग ऑफ सिग्नल्स/ ट्रैक / पॉईंट / क्रैंक हैण्ड्ल मॉनिटरिंग आसानी से किया जा सकता है। इसकी सहायता से मानवीय चूक का पता लगाकर स्टाफ की कॉउंसलिंग कर उसकी गलती को सुधार सकते हैं तथा अनयुजअल के समय पर साक्ष्यों की गहनता का पता लगाकर निष्कर्ष पर पहुँचने का काम कर सकते हैं। रतलाम मंडल में उपरोक्त मॉनिटरिंग के साथ, डाटा-लॉगर का प्रयोग कंट्रोलर को यार्ड की ऑनलाइन स्थिति तथा इंटरचेंज पॉईंट्स पर ट्रेनों के आगमन एवं प्रस्थान समय को कंट्रोल ऑफिस एप्लीकेशन में लिंक करने हेतु भी किया जा रहा है।



आईपीएस

संरक्षा में वृद्धि हेतु 124 समपार फाटकों को इंटरलॉक किया गया है।



ब्लॉक खंड में लगाए गए एक्सल काउंटर्स को पैरेलल किया गया है, जिससे विश्वसनीयता बढ़ी है। सिग्नल ब्लैंकिंग के मामलों को कम करने के लिए 25 समपार फाटकों पर आईपीएस लगाए गए हैं जिससे संरक्षा में वृद्धि हुई है। दूरसंचार के माध्यम से हम ट्रेन संचालन के साथ-साथ यात्रियों को यात्रा योजना से लेकर, पूछताछ, आरक्षण, कोच नंबर, पीएनआर की जानकारी सम्बन्धित सभी सुविधाएं प्रदान करते हैं तथा यात्रियों को उचित प्लेटफॉर्म पर एवं नियत कोच के सामने जाने की सूचना कोच गॉईडेंस बोर्ड्स एवं ट्रेन इंडिकेटर बोर्ड्स द्वारा दी जाती है। अभी हाल में मंडल के सभी स्टेशनों पर 25 वॉट वीएचएफ सेट के प्रतिस्थापन का कार्य किया गया ताकि इसकी क्षमता, गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता बनी रहे।



इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग



डाटा लॉगर

मंडल के 19 स्टेशनों पर वाई-फाई की सुविधा प्रदान की गई है। वाई-फाई के द्वारा इंटरनेट कनेक्शन स्टेशनों पर दिया गया है, जिससे यात्री मनोरंजन के साथ-साथ जरूरी सूचनाएं भी बैठे-बैठे ले सकते हैं। अगर हम बात करें भारतीय रेल को अत्याधुनिक बनाने के लिए उठाए गए कदम की, तो इसके लिए जो सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू हमारे विभाग द्वारा प्रदान की गई रेलनेट की सुविधा है, जिसके माध्यम से एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय में जो भी पत्र आदि कर्मचारी के हाथों से भेजने में घंटों या दिन लग जाते थे वो अभी चंद मिनटों में रेलनेट के जरिये भेजा जा सकता है एवं इसकी वजह से समय की बचत तो होती ही है, साथ-साथ रेलवे रेवेन्यू की भी बचत होती है।

पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन में एक पीटीजेड कैमरा तथा दो एलईडी टीवी दूर संचार विभाग द्वारा लगाई गई है जिससे कि यात्रा के दौरान यात्री प्राकृतिक दृश्यों की सुन्दरता का आनंद ले सकें।



रतलाम मंडल के इंदौर, उज्जैन, रतलाम स्टेशनों पर डिजिटल म्यूजियम लगाया गया है, जिससे कि यात्री रेलवे के स्वर्णिम इतिहास तथा रेलवे में हो रहे निरंतर विकास के बारे में जान सकें।

डिजिटल म्यूजियम में रेलवे बोर्ड, मुख्यालय तथा मंडल से प्राप्त रेलवे के स्वर्णिम इतिहास एवं निरंतर हो रहे विकास के वीडियो चलाए जा रहे हैं।



आरक्षित टिकटों की बुकिंग में पारदर्शिता हेतु मंडल के रतलाम, उज्जैन एवं इंदौर के आरक्षित बुकिंग केन्द्रों पर बॉयोमेट्रिक टोकन प्रणाली लगायी गई है। बॉयामेट्रिक टोकन प्रणाली के माध्यम से आरक्षित टिकट लेने के लिए अपने आए हुए क्रमानुसार टोकन प्राप्त करना होता है, और फिर टोकन क्रमांक के अनुसार टिकट खिड़की पर पहुंचकर टिकट ले सकते हैं, जिससे कि जो भी व्यक्ति जिस क्रम से पहुँचे हों, उसी क्रम से उनको टिकट मिलती है। विभिन्न डिस्प्ले बोर्ड्स के माध्यम से किसी भी यात्री को पूछताछ खिड़की पर लम्बी पंक्ति में खड़े होकर गाड़ी की जानकारी पता करने की असुविधा से बचने के लिए डिस्प्ले यूनिट की व्यवस्था की गई है जिसके माध्यम से यात्रियों को विभिन्न दिशाओं में जाने वाली गाड़ियों की प्लेटफॉर्म संख्या, गाड़ी की वर्तमान स्थिति का पता चल जाता है।

यूँ तो हम बहुत से माध्यमों से अपने पीएनआर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जैसे इंटरनेट, 139 पर बात करके या फिर सरल मोबाइल सन्देश भेजकर, लेकिन इन सबसे बहुत ही आसान माध्यम हमारे द्वारा स्टेशन परिसर में स्थापित की गई टच कियोस्क मशीन है, जिससे यात्री अपने पीएनआर की जानकारी मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं। यदि बात करें, चार्टिंग के बाद यात्री के टिकट की स्थिति जानने की, तो ट्रेन चार्ट डिस्प्ले सिस्टम (टीसीडीएस) के माध्यम से चार्टिंग के बाद यात्रियों के टिकट की क्या स्थिति है, इससे अवगत कराया जाता है। इतना ही नहीं, आजकल आरक्षण काउंटर पर लगे डिस्प्ले सिस्टम की मदद से उसी दिन चलने वाली गाड़ियों में सीट की उपलब्धता की जानकारी मिलती है। यात्रियों की सुविधा हेतु मुख्य हॉल से लेकर प्लेटफॉर्म तक विभिन्न तरह के डिस्प्ले बोर्ड्स लगे हुए हैं, जिसमें मल्टीलाइन डिस्प्ले बोर्ड, जो कि मुख्य हॉल में लगे हुए हैं, एक साथ कई गाड़ियों का नंबर, नाम, अनुमानित समय, आगमन/प्रस्थान समय और उसके प्लेटफॉर्म संख्या दर्शाते हैं। प्लेटफॉर्म डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से किसी निहित प्लेटफॉर्म पर आ रही गाड़ियों का पता चलता है।

अगर कोई यात्री अपनी ट्रेन के समय से पहले स्टेशन परिसर में पहुँच जाएँ या यात्री समय पर पहुंचे हैं और उनकी गाड़ी किसी कारणवश विलम्ब से चल रही हो, तो यात्री प्रतीक्षालय में गाड़ी का इंतजार करते हैं। वहां जिस टेलीविजन की व्यवस्था की गई है, उसके माध्यम से मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही साथ गाड़ियों के आगमन/प्रस्थान की सूचना भी टेलीविजन और अनाउंसमेंट के माध्यम से दी जाती है। साथ ही, प्लेटफॉर्म परिसर में लगाए गए विभिन्न टेलीविजनों पर समय-समय पर रेलवे बोर्ड या हेडक्वार्टर द्वारा निर्देशित ऑडियो/वीडियो चलाए जाते हैं।

आज के समय में किसी भी सार्वजनिक स्थल की सबसे ज्वलंत समस्या है, उस स्थान की सुरक्षा, जिसके अभाव में उस स्थान की शांति व्यवस्था भंग हो सकती है। ऐसे सार्वजनिक स्थलों में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है हमारा रेल परिसर एवं इसकी सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु दूरसंचार विभाग ने विभिन्न स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था कर रखी है, जो 24 घंटे इस परिसर की निगरानी करते हैं, जिससे रेल यात्री सुरक्षित महसूस करते हुए आगमन/प्रस्थान कर सकते हैं। साथ ही, सीसीटीवी कैमरे के

➔ शेष पृष्ठ 69 पर

रेल संपत्ति, यात्री सुरक्षा : यही हमारा काम



श्री कुमार निशांत
वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, रेलवे सुरक्षा बल, रतलाम मंडल

रतलाम मंडल, पश्चिम रेलवे का एक महत्त्वपूर्ण मंडल है तथा मंडल मुख्यालय, दिल्ली-मुंबई मुख्य रेल मार्ग एवं अजमेर-महु ब्रांच मार्ग पर स्थित है। रतलाम मंडल का विस्तार मध्य प्रदेश के 15, राजस्थान के 3 एवं गुजरात के 2 जिलों में है। मंडल का कुल रूट किमी क्रमशः 901.76 (बीजी) व 138.95 (एमजी) है तथा 117 जोड़ी मेल/एक्सप्रेस एवं 38 जोड़ी पैसेंजर, अर्थात् कुल 155 जोड़ी गाड़ियों का परिचालन मंडल में किया जाता है। रतलाम मंडल के महत्त्वपूर्ण स्टेशन डॉ. अंबेडकर नगर, इंदौर, देवास, मक्सी, सीहोर, उज्जैन, नागदा, रतलाम, मेंघनगर, मंदसौर, नीमच, चित्तौड़गढ एवं दाहोद आदि हैं।

रेल यात्रियों, यात्री सामान एवं रेल संपत्ति की सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी 13 निरीक्षक, रे.सु.ब. पोस्ट, 2 उपनिरीक्षक एवं 5 सउनि. आऊट पोस्ट के माध्यम से बखूबी निभाई जा रही है व मंडल में लगभग सभी महत्त्वपूर्ण स्टेशनों पर बल की तैनाती जाती है।

बल की उपलब्धियाँ

वर्ष 2018-19 के दौरान रे.सु.ब., रतलाम मंडल द्वारा सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं-

अपराध नियंत्रण

अपराधियों की गिरफ्तारी, गाड़ी अनुरक्षण ड्यूटी, संसाधन प्रबंधन इत्यादि।

रे.सु.ब., रतलाम द्वारा भारतीय दण्ड संहिता की धारा 84 के तहत् यात्री सामान की चोरी से संबधित प्रकरणों का पता लगाया गया, जिनमें चोरी हुए यात्री सामान की कुल कीमत लगभग 45 लाख रुपये थी तथा इन प्रकरणों में 108 आरोपियों को पकड़कर राजकीय रेलवे पुलिस (रा.रे.पु.) को अग्रिम कार्यवाही हेतु सुपुर्द किया गया। इन प्रकरणों में सीसीटीवी मॉनिटरिंग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें 9 प्रकरण 2 लाख रुपये से अधिक मूल्य के यात्री सामान की चोरी के थे, जिनमें अतंर्राज्यीय अपराधी गैंग भी शामिल थे जिन्हें रे.सु.ब. द्वारा रा.रे.पु. के साथ संयुक्त टीम बनाकर पकड़ा गया।

एक महत्त्वपूर्ण प्रकरण में मात्र 10 घण्टे के अंदर 10 लाख के यात्री सामान की चोरी के मामले को उद्घाटित किया गया एवं चोरी हुए पूर्ण यात्री सामान मय अपराधी गिरफ्तार कर रा.रे.पु. को अग्रिम कार्रवाई हेतु सुपुर्द किया गया।

रे.सु.ब, रतलाम मंडल द्वारा इस वर्ष अवैध शराब की 1,447 बोतलें, कीमत लगभग रु. 79 हजार की जब्ती कर अग्रिम कार्रवाई हेतु रा.रे.पु. को सुपुर्द किया गया।



रे.सु.ब., रतलाम मंडल द्वारा रेल अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत कार्रवाई कर 31,076 प्रकरणों को न्यायालय में पेश किया गया जहाँ न्यायालय द्वारा आरोपियों को लगभग रुपये 66 लाख के अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया। इसके अतिरिक्त रेल संपत्ति (अवैध कब्जा) अधिनियम के तहत 45 प्रकरणों में 143 आरोपियों को पकड़कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है। तेल चोरी के एक महत्त्वपूर्ण प्रकरण, जिसमें रेल संपत्ति की कीमत रुपये 1.62 लाख थी, रे.सु.ब., रतलाम मंडल द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए मात्र 7 दिनों में ही सभी आरोपियों की गिरफ्तारी कर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

बेहतरीन गाड़ी अनुरक्षण

आधुनिक उपकरण, जैसे कि बॉडी वर्न कैमरा व एलएलसी टॉर्च की सहायता से रे.सु.ब., रतलाम मंडल द्वारा बेहतरीन तरीके से 42 गाड़ियों में अनुरक्षण ड्यूटी निष्पादित की गई, जिसके परिणामस्वरूप अनुरक्षित गाड़ियों में यात्री सामान की चोरी के प्रकरणों में विगत वर्ष की तुलना में 55% की कमी दर्ज की गई। वर्ष-2017 में अनुरक्षित गाड़ियों में यात्री सामान की चोरी के 108 प्रकरण दर्ज हुए थे जबकि वर्ष-2018 के दौरान मात्र 49 प्रकरण ही दर्ज हुए।

सामाजिक दायित्व निर्वहन

अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी रे.सु.ब.,रतलाम मंडल बखूबी कर रहा है। रे.सु.ब., रतलाम द्वारा 13 यात्रियों की बहुमूल्य जान बचाई गई एवं 195 निराश्रित/घर से भागे हुए बच्चों को भी चाइल्ड लाइन के सुपुर्द किया गया व उनके परिवारजनों से मिलाने में सहायता प्रदान की गई। यात्रा के दौरान गाड़ियों में छूटे लगभग 11 लाख रुपये की कीमत के 85 नग यात्री सामानों को संबंधित यात्रियों को लौटाया गया।

बल का आधुनिकीकरण

इस वर्ष, रे.सु.ब. के आधुनिकीकरण का कार्य भी त्वरित गति से किया गया, जिसके तहत लगभग 57 लाख रुपये की कीमत के आधुनिक उपकरणों, जैसे बॉडी वार्न कैमरा, एलईसी टॉर्च, वॉकी-टॉकी, बुलेट प्रूफ मोबाइल मोर्चा, पॉलिकार्बोनेट शील्ड, पैराशूट टेंट, वॉइस रिकॉर्डर, स्मार्ट क्यू मैनेजर एवं एचएचएमडी इत्यादि की खरीद की गई। इससे बल की कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।





त्वरित आवागमन सुविधा

रे.सु.ब सदस्यों को त्वरित आवागमन सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से 3 नग नई चार पहिया गाड़ियों को संविदाबद्ध किया गया तथा अपराध प्रधान एवं बड़े क्षेत्राधिकार वाली रे.सु.ब पोस्टें यथा - दाहोद, मेंघनगर व उज्जैन को उपलब्ध कराया गया।

बैरेक अपग्रेडेशन

रतलाम मंडल के सभी 9 रे.सु.ब. बैरकों में निवासरत अधिकारी/स्टॉफ को बेहतर रहन-सहन सुविधाएँ मुहैया कराने की दिशा में भी कई कदम उठाए गए तथा लगभग रुपये 75 लाख के आवश्यक साजो-सामान, जैसे कि रेफ्रिजेरेटर, डेजर्ट कूलर, शू पॉलिश मशीन, आईने, फ्लाई केचर्स, किचन यूटेनसिल्स, कॉमर्शियल 50 लिटर्स आर.ओ., एलएईडी टीवी, स्टील की आलमारी, डाइनिंग टेबल एंड चेयर, कॉर्टन्स, माइक्रोवेव ओवन्स, गीजर इत्यादि खरीद कर प्रदान किए गए। साथ ही संविदा के आधार पर, बैरकों के लिए 9 कुक व 9 सफाई कर्मी भी उपलब्ध कराए गए। बैरकों के पुनर्निर्माण व अधोसंरचनात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष लगभग 1.5 करोड़ रुपये की राशि मंडल स्तर पर खर्च की गई।

यात्री जागरूकता कार्यक्रम

रे.सु.ब., रतलाम मंडल द्वारा 'सावधान यात्री, सुरक्षित यात्री' के मूलमंत्र को आधार बनाते हुए यात्रियों में सुरक्षित यात्रा की भावना जगाने एवं रेलवे ट्रैक के आस-पास निवासरत लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से विभिन्न स्टेशनों पर 30 'संवाद' कार्यक्रमों का आयोजन कर सुरक्षा हेल्प लाइन 182 का प्रचार-प्रसार किया गया, जिसमें ब्रांच अधिकारियों के साथ-साथ श्रीमान् मंडल रेल प्रबंधक, रतलाम द्वारा भी सहभागिता की गई। इन कार्यक्रमों को विशेषत: महिलाओं, बुजुर्गो एवं बच्चों पर केन्द्रित रखा गया। इसी क्रम में रतलाम-गोधरा एवं रतलाम-नागदा सेक्शन में 'दोस्ती' नामक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कर अनाधिकृत ट्रेस पासिंग एवं गाड़ियों पर पत्थर फेंकने की घटनाओं को रोकने के लिए जागरूक किया गया।

बल सदस्यों को प्रोत्साहन/पुरस्कार

मौजूदा वर्ष के दौरान रे.सु.ब. द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को अंतर्विभागीय स्तर पर भी काफी सराहना मिली। परिणामस्वरूप, बल के 317 अधिकारी/स्टॉफ को रेलवे बोर्ड, महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक, रतलाम, महानिदेशक, रे.सु.ब., नई दिल्ली, महानिरीक्षक, रे.सु.ब., चर्चगेट, रा.रे.पु. एवं राज्य पुलिस आदि द्वारा पुरस्कृत किया गया। ■



सुलभ, सुरक्षित, सुखद यात्रा की मार्गदर्शिका : संकेत एवं दूरसंचार विभाग

➔पृष्ठ 67 का शेष भाग

रिकॉर्डिंग की मदद से हम किसी असामाजिक और अराजक तत्व की पहचान भी आसानी से करने में सक्षम हैं।

यात्रियों के लिए हेल्प लाइन नं. 138, 182 शुरू किए गए हैं। 138 पर यात्री, यात्रा के दौरान कोई भी शिकायत दर्ज करा सकता है तथा रेलवे विभाग द्वारा तत्क्षण शिकायत को दूर करने के लिए कदम उठाए जाते हैं। इसी प्रकार 182 पर यात्री सुरक्षा की दृष्टि से कोई भी शिकायत/सूचना दर्ज करा सकता है तथा रेलवे विभाग द्वारा तत्क्षण कदम उठाए जाते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं की यदि रेलवे में यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा की बात करें तो नि:संदेह संकेत एवं दूरसंचार का योगदान परिचालन से लेकर यात्री सुविधाओं तक अतुलनीय है और यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष की बात है कि हम अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक निर्वाह करते हुए नित्यप्रति यात्रियों को बेहतर से बेहतर सुविधा प्रदान करने हेतु प्रयासरत हैं। ■

रतलाम मंडल चिकित्सालय : सेवा परमो धर्मः



डॉ. ए. के. मालवीया
मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, रतलाम मंडल

मंडल चिकित्सालय, रतलाम की नींव 2 मई, 1961 को महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे श्री एस.एस. रामसुब्बन द्वारा रखी गई थी एवं इसका शुभारम्भ तत्कालीन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भगवन्त राव मंडलोई द्वारा 20 मई, 1962 को किया गया था। यह अस्पताल 20 बिस्तरों के साथ शुरू हुआ था, जो 1964-65 में 60 बिस्तर, 1980 में 80 बिस्तर एवं 1988 में 100 बिस्तरों का हुआ। सन् 2000 में अस्पताल के बिस्तरों की संख्या 100 से बढ़ाकर 125 किए जाने के साथ ही लाइब्रेरी एवं सभागृह का भी निर्माण किया गया।

अस्पताल में दो मेजर एवं दो माईनर ऑपरेशन थियेटर हैं जिसमें सभी तरह की शल्य क्रियाएँ की जा सकती हैं। रतलाम चिकित्सालय भारतीय रेल का पहला मंडल चिकित्सालय है जहां घुटने का ऑपरेशन शुरू किया गया। यहां घुटने एवं कूल्हे के 300 से अधिक ऑपरेशन अभी तक किए जा चुके हैं तथा नियमित रूप से किए जा रहे हैं। इनमें रिविजन कूल्हे एवं घुटने के ऑपरेशन भी शामिल हैं, जो कि जटिल माने जाते हैं, साथ ही घुटने एवं कन्धे के जोड़े की ऑर्थोस्कोपी द्वारा भी विभिन्न प्रकार के ऑपरेशन किए जा रहे हैं। इन विशेष ऑपरेशन हेतु एक अलग से ऑपरेशन थियेटर है, जिसमें लेमीनर एयर फ्लो सिस्टम, मार्डन ओ.टी. लाइट एवं सभी आधुनिक सुविधा एवं उपकरण उपलब्ध हैं। हड्डियों के ऑपरेशन हेतु भी सभी तरह के इम्पलांट एवं इन्स्ट्रूमेंट उपलब्ध हैं।

महिला रोग विभाग सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है। एक ए.सी. लेबर रूम है, जिसमें दो टेबल हैं। यहां माईनर ऑपरेशन किए जाते हैं। एक एन.एस.सी. मशीन एवं एक पोर्टेबल सोनोग्राफी मशीन उपलब्ध है। मंडल चिकित्सालय में सभी तरह के ऑपरेशन किए जाते हैं। एंटीनेटल क्लीनिक में गर्भवती महिलाओं को सभी सलाह दी जाती है। बच्चा पैदा होते वक्त बच्चे को आवश्यक कपड़ों का एक सेट दिया जाता है।



घुटनों का प्रत्यारोपण

मंडल चिकित्सालय, रतलाम ने नियमित चिकित्सकों की कमी के बावजूद भी तत्परता के साथ कार्य किया। अप्रैल, 2018 से मार्च, 2019 तक कुल 5,016 सर्जरी जिसमें 22 स्पेशल केस, 404 बड़ी सर्जरी एवं 4590 छोटी सर्जरी की गईं। दो बार रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 110 एवं 70 यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया। रतलाम मंडल पर वेलनैस कार्यक्रम के अन्तर्गत मल्टीपल स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन किया, जिसमें रेलवे सुरक्षा बल के कर्मचारियों का वर्ष में दो बार 100% एवं संपूर्ण मंडल के कर्मचारियों एवं अधिकारियों का 99.8% स्वास्थ्य परीक्षण किया



गया। रोड मोबाइल वैन से कुल 4,734 मरीजों को देखा गया जो कि इंदौर से तीन सेक्शनों में संचालित हो रही है। रतलाम मंडल पर शेड्यूल अनुसार क्लोरिनेशन तथा वेक्ट्रालॉजीकल के नमूने संग्रहीत कर जांच की गई, जिसमें क्लोरीनेशन के 98.83% नमूने उपयुक्त पाए गए तथा बैक्टीरियोलोजी के 100% नमूने उपयुक्त पाए गए।

थेरेपी, वैक्स बाथ, सरवाइकल ट्रैक्शन, लम्बर ट्रैक्शन इन्फ्रारेड थेरेपी एवं ऑक्यूपेशन थेरेपी के विभिन्न उपकरण मौजूद हैं। यह पूर्ण रूप से वातानुकूलित है, जिसका लाभ रेलवे मरीजों के साथ गैर रेलवे मरीज भी निर्धारित फीस देकर लेते हैं।

नवजात बच्चों की देखभाल हेतु नर्सरी यूनिट का आधुनिकीकरण किया गया है, जिसमें सभी तरह की मशीनें, जैसे वार्मर, डबल सरफेस फोटों थेरेपी, डिजिटल वजन तोलने की मशीन एवं मल्टी पैरामीटर हैं।

मंडल चिकित्सालय, रतलाम 125 बिस्तरों का अस्पताल है, जिसमें ओपीडी, इंडोर, ऑपरेशन थियेटर, किचन एवं वार्ड इत्यादि क्षेत्रों से प्रतिदिन करीब 40,000 हजार लीटर पानी निकलता है। विगत वर्षों से यह पानी नालियों के माध्यम से निरर्थक बहा दिया जाता था, जिसकी वजह से इसका कोई



नवजात शिशु देखभाल कक्ष

उपयोग नहीं होता था, परन्तु प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड के निर्देशानुसार इस प्रकार के दूषित पानी को खुले वातावरण में नहीं छोड़ा जा सकता है, क्योंकि इससे बीमारियाँ एवं संक्रमण का खतरा बना रहता है। अत: इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए मंडल चिकित्सालय, रतलाम में मई, 2019 में प्रभावी उपचार सयंत्र (इटीपी प्लांट) का शुभारम्भ किया गया, जिसके माध्यम से दूषित पानी को निष्क्रिय करने के बाद इस पानी का उपयोग मंडल चिकित्सालय के गार्डन में किया जा रहा है। इस प्रकार का यह प्लांट पश्चिम रेलवे में सर्वप्रथम रतलाम मंडल पर ही स्थापित किया गया है। इस प्लांट से निकलने वाले पानी का उपयोग स्टेशन की सफाई इत्यादि में भी किया जा सकता है। रतलाम मंडल पर मरीजों की औसत उपस्थिति 1,319 प्रति दिन रही, जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 4.92% अधिक रही। 8,054 मरीजों का अस्पताल में भर्ती कर उपचार किया गया। मानव दिनों की हानि 85,517 रही, जो कि पिछले साल की तुलना में 12.3% कम रही, जो लक्ष्य के अनुसार 2% कम है। मलेरिया पर अच्छे तरीके से नियत्रंण किया गया एवं कुल 13 प्रकरण पॉजिटिव पाए गए।

मंडल चिकित्सालय, रतलाम में सभी स्वास्थ्य दिवसों का आयोजन किया एवं उनसे संबंधित सभी जानकारियों से मरीजों एवं स्टॉफ को अवगत कराया गया। 28/29 जनवरी, 2019 को मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षकों एवं स्वास्थ्य निरीक्षकों की एक सी. एम.ई. का आयोजन किया गया, जिसमें पश्चिम रेलवे के 22 मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक एवं स्वास्थ्य निरीक्षकों ने भाग लिया। मंडल चिकित्सालय, रतलाम में प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक, चर्चगेट की अध्यक्षता में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत मंडल चिकित्सालय, स्टेशनों एवं मेजर कॉलोनियों में सफाई की गई, जिसमें स्वयंसेवी संस्था का भी सहयोग लिया गया। ■

कैरिज एवं वैगन अनुरक्षण हेतु मूलभूत सुविधाओं का विकास

➔पृष्ठ 63 का शेष भाग

डाला गया एवं मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से वार्ता की गई। जिसके उपरांत एनडीआरएफ की टीम के मार्गदर्शन में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया, जिसमें मंडल स्तर पर समस्त नामित कर्मचारियों ने एनडीआरएफ की टीम के साथ भाग लिया जिससे कर्मचारियों को आपातकाल में विषम परिस्थितियों से निपटने हेतु प्रायोगिक जानकारी प्राप्त हुई।

शम्भुपुरा आरओएच डिपो के आउटटर्न में वृद्धि : शम्भुपुरा में नवनिर्मित वैगन आरओएच डिपो, जिसमें कि 7 दिसम्बर, 2018 से आरओएच कार्य प्रारंभ किया गया है, जिसमें विगत एक वर्ष के दौरान ही वैगन के आर.ओ.एच. का आउट टर्न, उपलब्ध संसाधनों एवं मानव शक्ति से 7 वैगन प्रति माह से 60 वैगन प्रति माह तक बढ़ाया जा चुका है एवं आउट टर्न को और अधिक बढ़ाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।

रोलिंग इन-रोलिंग आउट हण्ट एवं आरसीडी पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए : मंडल पर रोलिंग इन-रोलिंग आउट हण्ट पर सीसीटीवी कैमरे एवं एलईडी लाइट इन्दौर, डीएडीएन, रतलाम एवं उज्जैन स्टेशनों पर लगाए गए हैं, जिससे कि ट्रेनों के रोलिंग इन परीक्षण को विजुवल डाटा के रूप में संरक्षित कर पाई गई कमियों का सूक्ष्म निरीक्षण हो सके। इसके साथ ही रतलाम मंडल पर रतलाम, चित्तौड़गढ़, उज्जैन एवं डीएडीएन आरसीडी पर भी सीसीटीवी कैमरों को लगाया गया है, जिससे की आरसीडी परिसर की सुरक्षा एवं संरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके।



प्रोजेक्ट स्वर्ण : कोचिंग डिपो, इन्दौर द्वारा उपलब्ध संसाधनों से शान्ति एक्सप्रेस के तीन प्रथम श्रेणी वातानुकुलित कोचों को 'प्रोजेक्ट स्वर्ण' के अन्तर्गत आकर्षक रूप से नवशृंगारित किया गया है, जिसे यात्रियों द्वारा अत्यधिक सराहा जा रहा है।

- वर्ष 2018-19 में इन्दौर स्टेशन से कुल 7 नई ट्रेनों का परिचालन शुरू किया गया, जिनका प्राइमरी अनुरक्षण कोचिंग डिपो, इन्दौर द्वारा किया जा रहा है।
- मंडल की रतलाम, उज्जैन, चित्तौड़गढ़ एवं डीएडीएन स्थित एआरटी तथा एआरएमई पर जीपीएस ट्रेकिंग सिस्टम लगाया गया है।
- रतलाम स्टेशन से गुजरने वाली 18 ट्रेनों में सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाने हेतु क्लीन ट्रेन सिस्टम की सेवा शुरू की गई। ■



कार्मिक विभाग : नियुक्ति से सेवानिवृत्ति तक साथ



श्री पी. के. गोपीकुमार
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, रतलाम मंडल



पश्चिम रेलवे के रतलाम मंडल पर 13,098 कर्मचारी कार्यरत हैं। कार्मिक विभाग रेलवे के सभी विभागों में शुरू से अंत तक अपना दायित्व निभाता है।

कार्मिक विभाग अपने दायित्व का भली-भांति निर्वाह करते हुए किसी भी कर्मचारी की नियुक्ति से लेकर सेवानिवृत्ति तक साथ ही इनके अंतिम निपटारा से लेकर अंतिम पेंशन तक तथा पारिवारिक पेंशन तक भी समस्त कार्यों का सुव्यवस्थित ढंग से संपादन करता है।

रेल प्रशासन में सुरक्षित संचालन के महत्त्व के साथ-साथ कर्मचारियों से जुड़े प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हितों को भी महत्त्व दिया गया है, जिसकी जानकारी कार्मिक विभाग सभी कर्मचारियों से संग्रहीत करता हैं। यही नहीं, कर्मचारियों के कल्याण संबंधी कार्यों को समय-समय पर निष्पादित करने से कर्मचारयों में भी एक उत्साह का माहौल बनता है। इस उद्देश्य से कल्याण/स्थापना विभाग सदैव संपर्क अभियान चलाता है एवं विभिन्न शिकायतों का समाधान करता है। इसमें कर्मचारी की सेवा पंजिका, छुट्टी लेखा, वेतनवृद्धि, पदोन्नति, पदावनति, स्थानांतरण, शास्ति, प्रशंसापत्र इत्यादि की एंट्री को दिखाया जाता है। कर्मचारी को प्रदान किए जाने वाले विभिन्न भत्ते, प्रशासनिक नियम, छुट्टी नियम, कर्मचारी लाभ निधि जैसे जटिल विषय की सरल भाषा में जानकारी देता है। इससे छोटे स्टेशनों तथा दूर-दराज के क्षेत्र में कार्यरत मंडल के सभी कर्मचारियों को नियमों की जानकारी होती है।

कर्मचारी कल्याण विभाग समय-समय पर छोटे स्टेशनों तथा दूर-दराज के क्षेत्र में कार्यरत मंडल के सभी कर्मचारियों से संपर्क कर उनकी समस्या का समाधान करता है, कर्मचारियों को विभिन्न कर्मचारी लाभ निधि योजना की जानकारी प्रदान करता है। छात्रवृत्ति, शिक्षा अनुदान, कर्मचारी शिविर, बाल शिविर आदि योजना की जानकारी देता है एवं सभी कर्मचारियों को उनका लाभ देने हेतु उचित कार्यवाही करता है। कर्मचारी की मृत्यु पर उनके परिवार को जरूरी लाभ देने एवं उनके आश्रित को अनुकंपा पर नियुक्ति देने हेतु सही मार्गदर्शन देने के साथ-साथ संपूर्ण कार्रवाही कार्मिक विभाग करता है।

रतलाम मंडल का स्थापना अनुभाग समय-समय पर कर्मचारियों की पदोन्नति, पदावनति, स्थानांतरण अंतर मंडल / रेल स्थानांतरण, एमएसीपी, अनापत्ति प्रमाण पत्र, यूनियन/एम पी. एमएलए संबंधी पत्राचार, सेवा पंजिका/छुट्टी लेखा का रख-रखाव करता है। निपटारा विभाग सेवानिवृत्त कर्मचारियों के भविष्य निधि का भुगतान, सेवा निवृति उपदान, पेंशन का भुगतान, छुट्टी का नगदीकरण आदि का भुगतान सेवानिवृत्ति के दिन ही कर देता है। इसके साथ ही कर्मचारी को सेवानिवृत्ति का प्रमाणपत्र, आरईएलएच कार्ड, गोल्ड मेडल भी उपलब्ध कराता है।

कार्मिक विभाग द्वारा रतलाम मंडल प्रधान कार्यालय एवं रेलवे बोर्ड से जारी होने वाले परिपत्र, नियमों को यथासमय पारित किया जाता है तथा कर्मचारी को समयानुसार सुविधा देने हेतु कर्मचारी चार्टर का अनुपालन भी किया जाता है। ■

भारतीय रेल
पत्रिका की
सदस्यता एवं प्राप्ति
हेतु
संपर्क करें
011-47845381
सोमवार से शुक्रवार
(सुबह 10 से 1 एवं
दोपहर 2 से 5 बजे तक)
editorbhartiyarailrb@gmail.com
bmpr310rb@gmail.com

संरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता

श्री प्रदीप कुमार व्यास
वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी, रतलाम मंडल



राष्ट्रीय आपदा अनुक्रिया बल (एनडीआरएफ) वाराणसी द्वारा 4 अक्टूबर, 2018 को रतलाम मंडल कार्यालय के समिति कक्ष में संरक्षा बैठक एवं रतलाम के अप यार्ड में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। इसमें सभी शाखा अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा दुर्घटनाग्रस्त रेल के डिब्बे को काटकर इसमें से घायल व्यक्तियों को बाहर निकालने का अभ्यास किया गया। मंडल रेल प्रबन्धक कार्यालय के समिति कक्ष में संरक्षा बैठक के दौरान एनडीआरएफ आयुक्त द्वारा संरक्षा से संबधित पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण किया गया।



अंतरराष्ट्रीय समपार फाटक सतर्कता सप्ताह : 1 से 7 जून, 2018 तक अंतरराष्ट्रीय समपार फाटक सतर्कता सप्ताह मनाया गया। इसके अंतर्गत समपार फाटकों पर जाकर सड़क उपयोगकर्ताओं को समपार को सतर्कता से पार करने संबधित जानकारी दी गई एवं गाँवों में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से ग्रामीणों को जागरूक करने का अभियान चलाया गया।

संरक्षा संगोष्ठी : रतलाम मंडल के विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों पर कुल 45 संरक्षा संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं एवं वर्ष 2018-19 में मंडल के डिपो में 12 मंडल स्तरीय संरक्षा ऑडिट किए गए।



राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्रमाणीकरण : रतलाम मंडल के संरक्षा विभाग की आपदा प्रबन्धन योजना का आईएसओ 9001:2015 प्रमाणीकरण पत्र संख्या 0076063-00 28 मई, 2018 द्वारा किया गया, जिसकी वैधता वर्ष 2021 तक है।



संरक्षा सूचना प्रबंधन प्रणाली (एसआईएमएस) : इसके अंतर्गत संरक्षा से संबंधित निरीक्षण के दौरान पाई गई लगभग 455 अनियमितताओं की अनुपालना की गई तथा महाप्रबंधक के साथ संरक्षा बैठकों में मदों की चर्चा की गई।

अंतर मंडलीय संरक्षा ऑडिट : 11 व 12 सितम्बर, 2018 को सोमनाथ एवं वेरावल में और 10 व 11 जनवरी, 2018 को पोरबंदर में अंतर मंडलीय संरक्षा ऑडिट किया गया।

रात्रिकालीन निरीक्षण : महाप्रबंधक के निर्देशानुसार मंडल के अधिकारियों का आकस्मिक रात्रिकालीन निरीक्षण का मासिक कार्यक्रम जारी किया गया एवं सभी विभागों के रेल के परिचालन से जुड़े कर्मचारियों की तर्क की जाँच की गई। प्रत्येक शुक्रवार को अपर महाप्रबंधक की वीडियो कान्फ्रेन्स में पाई गई अनियमितताओं की चर्चा एवं अनुपालना की गई।

संरक्षा अभियान : वर्ष 2018-19 के अर्तगत रेलवे बोर्ड/मुख्यालय से जारी 12 मासिक संरक्षा अभियान एवं 23 विशेष संरक्षा अभियान मंडल में समय से जारी किए गए एवं उनकी अनुपालनाएँ निर्धारित समयावधि में मुख्यालय को भेजी गईं।

संरक्षा प्रचार-प्रसार : संरक्षा प्रचार-प्रसार के अंतर्गत 3,405 संरक्षा पंपलेट्स और 6,150 संरक्षा पोस्टर्स, रोड उपयोगकर्ताओं, ग्रामों, विद्यालयों, पंचायतों, समपार फाटकों, कृषि मंडियों, रेलवे स्टेशनों एवं यातायात पुलिस आदि को वितरित किए गए।

रतलाम मंडल में दुर्घटना का छद्म अभ्यास (मॉक ड्रिल): रतलाम मंडल में दुर्घटना का छद्म अभ्यास (मॉक ड्रिल) दुर्घटना नियमावली के अनुसार आयोजित किया गया।

संरक्षा परामर्श : वर्ष 2018-19 में रतलाम मंडल के 15,575 कर्मचारियों को एवं 12,338 ग्रमीणों को संरक्षा अधिकारियों व संरक्षा सलाहकारों द्वारा संरक्षा परामर्श दिया गया।

रतलाम मंडल के आपदा प्रबंधन प्लान का विमोचन : पुनः संकलित व पुनः नियोजित आपदा प्रबंधन योजना 2019 को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा विमोचित किया गया। इस दौरान रतलाम मंड़ल के सभी शाखा अधिकारी उपस्थित थे। ■




tex
CANADIAN
PACIFIC
8619
8619


Commissioning of heavy duty wagons
For better economy and cost
कॉनकॉर
CONCOR
Think Container, Think CONCOR

रतलाम मंडल पर राजभाषा – नित नई उपलब्धियों की ओर अग्रसर



श्री रामानंद सिंह

प्रभारी राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक, रतलाम मंडल

रतलाम मंडल राजभाषा की दृष्टि से 'क' क्षेत्र में स्थित है। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में मंडल सदैव अग्रणी रहा है।

राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु अभिनव प्रयास

मंडल रेल प्रबंधक श्री आर.एन. सुनकर के मार्गदर्शन में मंडल पर राजभाषा के क्षेत्र में पहली बार निम्न अभिनव प्रयास किए गए हैं :

- सुप्रसिद्ध कवियों की प्रेरक रचनाओं के पोस्टर मंडल के स्टेशनों एवं कार्यस्थलों पर प्रदर्शित किए गए।
- अधिकारियों की टेबल हेतु टेबल कार्ड 'माह का लक्ष्य' और टेबल कैलेंडर प्रकाशित किए गए।
- राजभाषा दैनंदिनी, लीफलेट/पैम्फलेट तथा पर्यावरण एवं प्रेरक वाक्यों के सूचक पत्र आदि प्रकाशित किए गए।
- 'अवंतिका' पत्रिका के पातालपानी-कालकुंड हेरिटेज खंड एवं पर्यावरण पर केन्द्रित 'हेरिटेज' एवं 'पर्यावरण' विशेषांक प्रकाशित किए गए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पत्रिका 'क्षितिज' का प्रकाशन भी किया गया।

राजभाषा पुस्तिका का प्रकाशन

रेलकर्मियों के उत्साहवर्धन एवं उच्च मानवीय गुणों के संवर्धन हेतु मंडल की राजभाषा की उपलब्धियों पर केंद्रित राजभाषा पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है, जिसका विमोचन सदस्य कार्मिक, रेलवे बोर्ड एवं महाप्रबंधक, पश्चिम रेलवे के कर कमलों से किया गया।





महाप्रबंधक राजभाषा दक्षता शील्ड

रतलाम मंडल को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु पूरे वर्ष के लिए महाप्रबंधक राजभाषा दक्षता शील्ड प्रदान की गई है।



रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक

मंडल पर राजभाषा की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु मंडल रेल प्रबंधक श्री आर.एन. सुनकर को 'रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक' हेतु चुना गया है।

लालबहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार

मंडल के डीजल शेड के कर्मचारियों द्वारा लिखित पुस्तक 'एल्को डीजल लोकोमोटिव तकनीकी परिचालन एवं दोष निवारण पुस्तिका' को रेलवे बोर्ड स्तर पर 'लालबहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना' के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। ■

रेलकर्मियों व उनके परिवारजनों की सेवा में तत्पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन



श्रीमती राधा सुनकर

अध्यक्षा, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, रतलाम मंडल

'पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन', रतलाम वर्तमान में रेल कर्मचारियों के बच्चों के लिए बाल मंदिर का तथा उनकी पुत्रियों एवं पत्नियों को स्वावलम्बी बनाने हेतु रियायती दरों पर ब्यूटी पार्लर एवं सिलाई केन्द्र का संचालन कर रहा है। इसके अतिरिक्त संगठन द्वारा मंडल चिकित्सालय परिसर में 'अन्नपूर्णा कैंटीन' का संचालन भी किया जा रहा है जहाँ मरीजों के परिजनों को रियायती दरों पर भोजन एवं स्वल्पाहार उपलब्ध कराया जाता है। संगठन द्वारा प्राकृतिक आपदाओं के समय भी रेल कर्मचारियों को यथासंभव सहायता प्रदान की जाती है।



संगठन की अध्यक्षा के नेतृत्व में वर्ष भर में सम्पन्न की गई विभिन्न गतिविधियों का विवरण निम्नानुसार है :-

- संगठन द्वारा राष्ट्रीय पर्वों पर मंडल चिकित्सालय रतलाम के रोगियों को नैपकिन, बिस्किट इत्यादि वितरित किए गए।



- 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर संगठन द्वारा संचालित अरुणोदय बाल मंदिर, सिलाई केन्द्र एवं ब्यूटी पार्लर की समस्त शिक्षिकाओं को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।
- संगठन द्वारा शीतकाल में रतलाम रेलवे स्टेशन पर कार्यरत् लगभग 90 सफाई कर्मियों को ऊनी वस्त्र वितरित किए गए।



- रतलाम के बाहरी क्षेत्र में स्थित झुग्गी बस्तियों में रहने वाली महिलाओं को सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए।



- मंडल चिकित्सालय रतलाम में संगठन द्वारा 'न्यू बोर्न बेबी सेट' उपलब्ध कराए गए।
- 8 मार्च को 'अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस' एवं 1 मई को 'अन्तरराष्ट्रीय मजदूर दिवस' के अवसर पर संगठन द्वारा मंडल के लगभग 55 उत्कृष्ट महिला एवं पुरुष कर्मचारियों को सम्मानित किया गया ।
- 'राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस' के अवसर पर संगठन द्वारा रेलवे परिसरों में वृक्षारोपण किया गया।





संगठन द्वारा मंडल चिकित्सालय में न्यू बॉर्न बेबी सेट उपलब्ध कराया गया (बाएं) महिला दिवस एवं अन्तरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर संगठन द्वारा महिला एवं पुरुष कर्मचारियों को सम्मानित किया गया

- प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मंडल पर विभिन्न आयु समूह के बच्चों के लिए ड्राइंग एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सभी प्रतिभागियों को आकर्षक उपहार दिए गए।
- मंडल की महिला रेलकर्मियों में स्वास्थ्य एवं दैनिक जीवन में होने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु परिचर्चा आयोजित की गई। साथ ही, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर भी लगाया गया। ■



'पर्यावरण दिवस' पर रेलवे परिसरों में वृक्षारोपण करती हुईं संगठन की सदस्याएं



अध्यक्षा, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन ने मंडल की महिला कल्याण संगठन की समस्त सदस्याओं को सेवा कार्य हेतु प्रेरित किया



पश्चिम रेलवे के महिला कल्याण संगठन रतलाम द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने वाली प्रधान कार्यालय स्तर पर पुरस्कृत महिला कर्मचारियों के साथ ही मंडल स्तर पर अच्छा कार्य करने वाली महिला कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया

JK Cement LTD.

1974 से
राष्ट्र के निर्माण में भागीदार

मज़बूत इमारतें बनाना एक बात है। जबकि मज़बूत रिश्ते बनाना अलग बात है। साढ़े तीन दशक से अधिक समय से, जे.के. सीमेंट लिमिटेड अपने ग्राहकों, चैनल साझेदारों, और स्टेकहोल्डरों को उनकी आशाओं से अधिक मूल्य का सृजन करके उनके भरोसे की नींव को और मज़बूत बनाने की दिशा में निरंतर कार्यरत है। यह अपने पितृ समूह – जे.के. संगठन के उच्च मानदंडों की कसौटी पर खरा उतरा है।



हमारी यूनिट्सः जे.के. सीमेंट वर्क्स, नीबांहेड़ा। जे.के. सीमेंट वर्क्स, मांगरोल। जे.के. सीमेंट वर्क्स, गोटन। जे.के. सीमेंट वर्क्स, मुधोल । जे.के. व्हाईट सीमेंट वर्क्स, गोटन

सेंट्रल मार्किटिंग ऑफिसः उत्तर (व्हाइट सीमेंट और ग्रे सीमेंट): नई दिल्ली. दक्षिण (ग्रे सीमेंट): बेलगाम, कर्नाटक

जे.के. सीमेंट लि. – पंजीकृत कार्यालयः कमला टावर, कानपुर–208001, उत्तर प्रदेश, भारत टेली.: 05122371478–81 फैक्सः 0512 2399854। वेबसाइटः www.jkcement.com

हमारे ब्राण्ड्स

J.K. SUPER CEMENT

JK WHITE CEMENT THE PERFECT WHITE

JK WALL PUTTY THE PERFECT PUTTY White Cement based Putty

JK WATER PROOF THE PERFECT SEAL

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2018-19-20
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित



Electric Locomotives

Traction Motors
Traction Transformers
Pantographs
Harmonic Filters
Driver Cab Air Conditioners
Auxiliary Blowers

Diesel Locomotives

Traction Alternators
Traction Motors
Radiator Cooling Fans
Dynamic Brake Grids
Dynamic Brake Blower Motors
Auxiliary Generators
Dustbin Blower & Motor
Driver Cab Air Conditioners

Coaches & Trainsets

Air Conditioners with Microprocessors
Bio Vacuum Toilet Systems
FRP Toilet Cubical
Side Panels and Roof Panels for Coach Interiors
Seats and other Accessories for Coach Interiors

Exhibitor

RAILWAY INTERCHANGE
2019 September 22-25
Minneapolis, MN, USA

IRIS Certification
AAR M-1003

Daulat Ram ENGINEERING

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Dist. Raisen, Near Bhopal 464 993 INDIA
e-mail: info@daulatram.org • web: daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**